॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

जैन भजन रत्नावली ।

— प्रकाशक —

बङ्गाल जूट एसोसियेशन लिमिटेड ।

नं० २ पोर्चुगीज चर्च ष्ट्रीटके ओसवाल प्रेसमें

बाबू महालचन्द बयेद द्वारा मुद्रित ।

प्रथमावृत्ति १०००

बिना मूल्य ।

पुस्तक मिलनेका पता—
न० ३ पाटका बाड़ा
नं० १६ बनफिल्ड्स लेन,
कलकत्ता ।

मैंने यथावकाश इस पुस्तक को छपने बाद पढ़ लिया है। मेरी नज़र में जहां जहां भूल दिखाई पड़ी वहां वहां से उनको चुन चुन कर शुद्धाशुद्ध पत्र छपा दिया है। विज्ञ पाठक शुद्धाशुद्ध पत्र से मिला कर अपनी अपनी पुस्तकों को शुद्ध कर लें और इस कष्टके लिये मुझे क्षमा प्रदान करें।

ह्रस्व दीर्घ अनुस्वारादि और मात्राएं टूट जाने-वाली अशुद्धियां जो कि सहज ही समझ में आनेवाली है वैसी अशुद्धिया नहीं निकाली है, सो विज्ञजन स्वयं शुद्ध पढ़े।

यदि जिन वचनों के विरुद्ध कुछ छप गया हो तो मुझे मिच्छामि दुक्कड़।

निवेदक—

महालचन्द बयेद

॥ गजल ॥

जिनेश्वर धर्म सारा है। मेरे प्राणों से प्यारा है॥ जिनका ध्यान धर भाई। श्री जिनराज फरमाई॥ जिससे होत सुखदाई। इसीसे दिल हमारा है॥ जिने ॥१॥ जिनेश्वर नाम जो गावे। कि भव से पार हो जावे॥ जनम वो फेर ना पावे। होय भवसिन्धु पारा है॥ जिने ॥२॥ ऐसे जिनराज प्यारे हैं। जिन्हों ने भक्त त्यारे हैं॥ जिन्होंने कर्म मारे हैं। उन्हींका मो आधारा है॥ जिने ॥३॥ विमुख जो धर्म से होवे। पकड़ शिर अन्तमें रोवे॥ जिनेश्वर धर्म वो खोवे। जिन्होंको नर्क प्यारा है॥ जिने ॥४॥ नहीं नर भव जनम हारे। जिनेश्वर धर्म जो धारे॥ वोही यम फांशको टारे। महालचंद दास थारा है॥ जिने ॥५॥

विषय-सूची

ख्या	विषय	पृष्ठांक

संख्या	विषय	पृष्ठ
१३	जयाचार्य कृत ढाल देश २ ना लोक आपरो स्मरण कर रह्या उरसें०	१२२
१४	कलश (स्वामीजी श्रीमगन लालजी कृत)	१२३
१५	श्रम धर्म जिन धीर वीर प्रभु तसु शासणं श्रीकारी (स्वामीजी श्रीमगन लालजी कृत)	१२:
१६	प्यारी लागे आज माने सूरत सांवरिया (स्वामीजी श्री जयचन्द लालजी कृत)	१२
१७	लगे मुझ प्राण से प्यारो गणिवर दर्शण थारो (स्वामीजी श्री जयचन्द लालजी कृत)	१२
१८	कालू गण इच्छा कोगांके नंदा सोहत चंदाजी राज (स्वामीजी श्रीसोहनलालजी कृत)	१२७
१९	बसुपाटो धर सादृश जिनवर जिम इण भरत में हो स्वाम	१२८
२०	अब तारोरी नइया स्वाम मैं शर्णं तोरे आया (स्वामीजी श्रीचोथमलजी कृत)	१३०
२२	छन्द शिखरणी (स्वामीजी श्री सोहनलालजी कृत)	१३१
२३	अहि पट पे थट ओपता गणि कालू गण शिणगार (स्वामीजी श्री सोहनलालजी कृत)	१३१
२४	कलश (स्वामीजी श्री सोहनलालजी कृत)	१३२
२५	श्रीजिन तीर्थ प्रगट्या स्वामी हे	१३३

निवेदन

प्रिय पाठकों मैंने जो यह "जैन भजन रत्नावली" प्रथम भाग श्रीयुत पदमचंदजी दुगड़के कहनेसे संग्रह करके छपाया है।

पुस्तक तैयार करने में भरसक सावधानी से काम लिया गया है; तथापि भूल करना मनुष्य का स्वभाव है अतः थोड़ी या बहुत भूलें प्रायः मनुष्य से होही जाती है। यदि प्रमाद वश या मेरी अल्पज्ञता के कारण कुछ भूल चूक या त्रुटियां रह गई हों तो उदार हृदय पाठक मुझे क्षमा करें। भूल रहने का एक यह भी कारण है कि इस पुस्तक का अधिकांश फार्म मेरी अनुपस्थिति में छपा है। सम्भव है कि छपते समय कुछ अक्षर और मात्राऐं टूट गई हों। जो भूलें पाठकों की नजर तले आवें उनसे मुझे सूचित कर दें। इस कृपाके लिये मैं उनका चिरकृतज्ञ रहुंगा और दूसरी आवृति में हठ त्याग कर उन भूलोंको सुधार दूंगा।

॥ श्री.नवकारकी पाटी ॥

णमो अरिहन्ताणं । णमो सिद्धाणं । णमो आयरियाणं । णमो उवज्झायाणं । णमो लोए सव्वसाहूणं ॥ १ ॥

सामायक लेणेकी पाटी ॥

करेमि भन्ते सामायियं-सावज्जं जो

पच्चखामि जाव नियम (मुहूर्त एक) पज्जवासामी दुविहं तिविहेण नकरेमि नकारवेमि मनसा-वायसा कायसा तस्स भन्ते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसरामि ॥

सामायक पारणेकी पाटी ॥

नवमा सामायक व्रतके विषे ज्यो कोई अतिचार दोष लागोहुवे ते आलोउं सामायक मे सुमता न कीधी विकथाकीधी हुवे अणपूरी पारी होय पारतां विसार्यो होय मन वचन कायाका जोग माठा परिवरताया होय सामायकमे राज कथा देश कथा स्त्री कथा भक्त कथा करी होय तस्स मिच्छामि दुक्कड।

॥ अथ तिक्खुताकी पाटी ॥

तिक्खु तो आयाहिणं पयाहिणं वंदामि नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देइयं चेइयं पज्जु वासामि मत्थेण वंदामि ।

॥ अथ पंचपद वन्दणा ॥

पहिले पदे श्री सीमंधर स्वामी आदि देई जघन्य २० (बीस) तीर्थंकर देवाधिदेवजी उत्कृष्टा १६० (एकसोसाठ) तीर्थंकर देवाधिदेवजी पंचमाहाविदेह खेतांके विषे विचरेछे अनन्त ज्ञानका धणी अनन्त दर्शनका धणी अनन्त चारितका धणी अनन्त बल का धणी एक हजार आठ लक्षणाका धारणाहार चौसट इन्द्राका पूजनीक चौतीस अतिशय पैतीस बाणी द्वादस गुण सहित विराजमान छै ज्यां अरि-हन्ता से मांहरी वंदना तिक्खु ताका पाठसे मालुम होज्यो ।

दूजे पदे अनन्ता सिद्ध पंदराह भेदे अनन्ती चोबीसी आठ कर्म खपाय सिद्ध भगवांन मोक्ष पहुंता तिहां जनम नहीं जरा नही रोग नहीं सोग नहीं मरण नहीं भय नहीं संजोग नहीं विजोग नहीं दुःख नहीं दारिद्र नहीं फिर पाछा गर्भावासमें आवे नहीं

सदा काल सास्वता सुखासे विराजमानछै इसा उत्तम सिद्ध भगवंतासे मांहरी वन्दना तिक्खुताका पाठसे मालुम होज्यो ।

तीजे पदे जघन्य दोय कोड केवली उत्कृष्टा नव कोड केवली पञ्चमाहविदेह खेत्रांसे विचरेछे केवल ज्ञान केवल दर्शनका धारक लोकालोक प्रकाशक सर्व द्रव्य खेत्र काल भाव जाणें देखे छे ज्यां केवलीजी से मांहरी वन्दना तिख्खुताका पाठसे मालुम होज्यो ।

चौथे पदे गणधरजी आचार्यजी उपाध्यायजी स्थविरजी तेगणधरजी महाराजकेहवाछे अनेक गुणां करी विराजमान छै आचार्यजी महाराज केहवाछे षट तीस गुणां करी विराजमान छै उपाध्यायजी महाराज केहवाछे पच्चवीसगुणां करी विराजमान छै स्थविरजी महाराज केहवा छे धर्मसे डिगता हुआ प्राणी ने थिरकरी राखे शुद्ध आचार पाले पलावे ज्यां उत्तम पुरुषां से मांहरी वन्दना तिक्खुताका पाठसे मालुम होज्यो ।

पञ्चमे पदे माहारा धर्म आचारज गुरु पूज्य श्री श्रीश्रीश्रीश्री १००८ श्रीश्रीकालूरामजी स्वामी (वर्तमान आचारजका नांव लेणो) आदि जघन्य दोय हजार कोड साधु साध्वी जाझेरा उत्कृष्टा नवहजार कोड़

साधु साध्वी अढ़ाई द्वीप पन्दरह खेत्रांमें विचरे छे ते माहा उत्तम पुरुष कहिवाछे पञ्च महाव्रतका पालणाहार छव कायानां पीहर पञ्च सुमति सुमता तीन गुप्ती गुप्ता नववाड़सहित ब्रह्मचर्य्यका पालक-दशविधि यतिधर्मका धारक वारे भेदे तपस्याका करणहार सतरे भेदे संजमका पालणहार वावीस परीसहका जीतणहार सतावीस गुणे करी संयुक्त बयालीस दोष टाल आहार पाणीका लेवणहार बावन अणाचारका टालणहार निरलोभी निरलालची संसारनां त्यागी मोक्षनां अभिलाषी संसारसे पूठा मोक्षसे सहामा सचित्तका त्यागी अचित्तका भोगी अस्वादी त्यागी वैरागी तेड़िया आवे नहीं नोंतीया जीमें नहीं मोलकी वस्तु लेवे नहीं कनक कामणीसे न्यारा वायरानी परे अप्रतिबन्ध बिहारी इसा माहापुरुषांसें मांहरी बन्दना तिक्खुत्ताका पाठसे मालुम होज्यो ।

॥ अथ पच्चीस बोल ॥

१ पहिले बोले गति च्यार ४

नर्कगति १ तिर्यंचगति २ मनुष्यगति ३ देवगति ४

२ दूजेबोले जातिपांच ५

एकेन्द्री वेइन्द्री तेइन्द्री चोइन्द्री पंचेन्द्री

३ तीजे वोले काया छः ६

पृथ्विकाय १ अप्पकाय २ तेउकाय ३ वाउकाय ४ वनस्पतिकाय ५ त्रसकाय ६

४ चोथे वोले इन्द्री पाच ५

श्रोतइन्द्री १ चक्षुइन्द्री २ घ्राणइन्द्री ३ रस-इन्द्री ४ स्पर्शइन्द्री ५

५ पाचमे वोले पर्याय छः ६

आहार पर्याय १ शरीर पर्याय २ इन्द्रीय पर्याय ३ श्वासोश्वासपर्याय ४ भाषापर्याय ५ मनपर्याय ६

६ छठै वोले प्राण दश १०

श्रोतेंद्री वलप्राण १ चक्षुइन्द्रीवलप्राण २ घ्राण इन्द्रीवलप्राण ३ रसेन्द्रीवलप्राण ४ स्पर्शइन्द्री वलप्राण ५ मनवलप्राण ६ वचनवलप्राण ७ काया वलप्राण ८ श्वासोश्वासवलप्राण ९ आउषोवलप्राण १०

७ सातमे वोले शरीर पांच ५

औदारिक शरीर १ वैक्रिय शरीर २ आहारिक शरीर ३ तैजसशरीर ४ कार्मणशरीर ५

८ आठवे वोले जोग पन्दराह १५

४ च्यारमनका

सत्यमनजोग १ असत्यमनजोग २ मिश्रमनजोग ३ -

व्यवहारमनजोग ४

४ च्यारवचनका

सत्यभाषा १ असत्यभाषा २ मिश्रभाषा ३ व्यव-
हार भाषा ४

७ सातकायाका

औदारिक १ औदारिक मिश्र २ वैक्रिय ३ वैक्रि-
य मिश्र ४ आहारिक ५ आहारिक मिश्र ६ कार्म
गाजोग ७

९ नवमें बोले उपयोग बारह १२

५ पांच ज्ञान

मतिज्ञान १ श्रुतिज्ञान २ अवधिज्ञान ३ मन
पर्यवज्ञान ४ केवलज्ञान ५

३ अज्ञान

मतिअज्ञान १ श्रुतिअज्ञान २ विभङ्गअज्ञान ३

४ च्यार दर्शण

चक्षुदर्शण १ अचक्षु दर्शण २ अवधिदर्शण ३
केवल दर्शण ४

१० दशमें बोले कर्म आठ ८

ज्ञानावर्णी कर्म १ दर्शणावर्णी कर्म २ वेदनी
कर्म ३ मोहणी कर्म ४ आयुष्यकर्म ५ नामकर्म ६
गोतकर्म ७ अन्तरायकर्म ८

११ इग्यारमे बोलि गुणस्थान चौदह

१ पहिलो मिथ्याती गुणस्थान।

२ दूजो सास्वादान समदृष्टि गुणस्थान।

३ तीजो मिश्र गुणस्थान।

४ चौथो अव्रती समदृष्टी गुणस्थान।

५ पांचमो देशव्रती श्रावक गुणस्थान।

६ छट्ठो प्रमादी साधु गुणस्थान।

७ सातवीं अप्रमादी साधु गुणस्थान।

८ आठवी नियट वादर गुणस्थान।

९ नवमीं अनियट वादर गुणस्थान।

१० दशवीं सुक्षम सम्प्राय गुणस्थान।

११ इग्यारमूं उपशान्ति मोह गुणस्थान।

१२ वारमूं क्षीणमोहनी गुणस्थान।

१३ तेरमूं सयोगी केवली गुणस्थान।

१४ चौदमूं अयोगी केवली गुणस्थान।

१२ वारमे बोले पाच इन्द्रियांकी तेवीस विषय

श्रोतइन्द्रीकी तीन विषय

जीव शब्द १ अजीव शब्द २ मिश्र शब्द ३

चक्षु इन्द्रीकी पाच विषय

कालो १ पीलो २ धोलो ३ रातो ४ लीलो ५

घ्राण इन्द्रीकी दोय विषय

सुगन्ध, १ दुर्गंध २

रस इन्द्रीकी पांच विषय

खट्टो १ मीठो २ कड़वो ३ कसायलो ४ तीखो ५

स्पर्श इन्द्रीकी आठ विषय

हलको १ भारी २ खरदरो ३ सुहालो ४ लूखो ५ चोपड़्यो ६ ठण्डो ७ उन्हो ८

१३ तेरमें बोले दश प्रकारका मिथ्याती

२ जीवनें अजीव सरदहै ते मिथ्याती

२ अजीवनें जीव सरदहै ते मिथ्याती

३ धर्मनें अधर्म सरदहै ते मिथ्याती

४ अधर्मनें धर्म सरदहै ते मिथ्याती

५ साधुनें असाधु सरदहै ते मिथ्याती

६ असाधुनें साधु सरदहै ते मिथ्याती

७ मार्गनें कुमार्ग सरदहै ते मिथ्याती

८ कुमार्गनें मार्ग सरदहै ते मिथ्याती

९ मोक्षगयांनें अमोक्षगया सरदहै ते मिथ्याती

१० अमोक्षगयांनें मोक्षगया सरदहै ते मिथ्याती

१४ चौदमें बोले नवतत्वको जांण पणों तींका

११५ एकसो पंदराह बोल

१४ चोदहजीवका—

सुक्ष्म एकेंद्रीका दोय भेद :—

१ पहिलो अपर्याप्तो २ दूसरो पर्याप्तो

बादर एकेन्द्रीका दोय भेदः—

३ तीजो अपर्याप्तो ४ चौथो पर्याप्तो

बे इन्द्रीका दोय भेदः—

५ पांचमूँ अपर्याप्तो ६ छट्ठो पर्याप्तो

ते इन्द्रीका दोय भेदः—

७ सातमूँ अपर्याप्तो ८ आठमूँ पर्याप्तो

चो इन्द्रीका दोय भेदः—

९ नवमूँ अपर्याप्तो १० दशमूँ पर्याप्तो

असन्नी पंचेन्द्रीका दोय भेदः—

११ इग्यारमूँ अपर्याप्तो १२ बारमूँ पर्याप्तो

सन्नी पंचेन्द्रीका दो भेदः—

१३ तेरमूँ अपर्याप्तो १४ चवदमूँ पर्याप्तो

१४ चवदे अजीवका भेदः—

धर्मास्ति कायका ३ तीन भेदः—

खंध, देश, प्रदेश,

अधर्मास्ति कायका ३ तीन भेदः—

खंध, देश, प्रदेश,

आकाशास्ति कायका ३ तीन भेदः—

खंध, देश, प्रदेश,

कालको दशमूं भेद (ए दश भेद श्ररूपी के)

पुद्गलास्ति कायक ४ च्यार भेदः—

खंध, देश, प्रदेश, परमाणु ।

९ पुन्य नव प्रकारे

अन्नपुन्य १ पाणपुन्य २ लैणपुन्य * ३ सयणपुन्य * ४ वत्थपुन्य ५ मनपुन्य ६ वचनपुन्य ७ कायापुन्य ८ नमस्कारपुन्य ९

१८ पाप अठारे प्रकारः—

प्राणातिपात १ मृषावाद * २ अदत्तादान ३ मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ८ लोभ ९ राग १० द्वेष ११ कलह १२ अभ्याख्यान १३ पैशुन्य+ १४ परपरिवाद १५ रतिअरति १६ मायामृषा १७ मिथ्या दर्शन शल्य १८

२० बीस आस्रवकाः—

मिथ्यात्व आस्रव १ अव्रत आस्रव २ प्रमाद आस्रव ३ कषाय आस्रव ४ जोग आस्रव ५ प्राणातिपात आस्रव ६ मृषावाद आस्रव ७ अदत्तादान आस्रव ८ मैथुन आस्रव ९ परिग्रह

---

* लैण=जगां जमीनादिक * सयण=पाट, बाजोटा दिक

* वाद=बोलना * पैशुन्य=चुगली

आस्रव १० श्रुत इन्द्री मोकली मेलिते आस्रव ११ चक्षुइन्द्री मोकली मेले ते आस्रव १२ घ्राण इन्द्री मोकली मेले ते आस्रव १३ रस इन्द्री मोकली मेले ते आस्रव १४ स्पर्शइन्द्री मोकली, मेले ते आस्रव १५ मन प्रवर्तावे ते आस्रव १६ वचन प्रवर्तावे ते आस्रव १७ काया प्रवर्तावे ते आस्रव १८ भगडोपगरण मेलता अजयणा करै ® ते आस्रव १९ सुई कुसाग्रमात्र सेवै ते आस्रव २०

२० वीस संवरका:—

सम्यग् ते संवर १ व्रत ते संवर २ अप्रमाद ते सवर ३ अकषाय संवर ४ अजोग सवर ५ प्राणातिपात न करै ते संवर ६ मृषावाद न बोले ते सवर ७ चोरी न करै ते सवर ८ मैथुन न सेवै ते सवर ९ परिग्रह न राखे ते सवर १० श्रुत इन्द्री वश करै ते सवर ११ चक्षुइन्द्री वश करै ते संवर १२ घ्राणइन्द्री वश करै ते सवर १३ रसेन्द्री वश करै ते सवर १४ स्पर्शइन्द्री वश करै ते संवर १५ मन वश करै ते सवर १६ वचन वश करै ते सवर १७ काया वश करै ते सवर १८ भगडउपगरणमेलता अजयणा न करै ते संवर १९ सुई कुसाय न सेवै ते सवर २०

१२ निर्जरा १२ प्रकारे:—

अणासण * १ उणोदरी * २ भिचाचरी ३ रस-परित्याग ४ कायाक्लेश ५ प्रतिसंलेपना ६ प्रायस्चित ७ विनय ८ वेयावच्च ६ सिज्झाय १० ध्यान ११ विउसग्ग * १२

४ बंध च्यार प्रकारे:—

प्रकृति बन्ध १ स्थिति बन्ध २ अनुभाग बन्ध ३ प्रदेश बन्ध ४

४ मोच्च च्यार प्रकारे:—

ज्ञान १ दर्शण २ चारित्र ३ तप ४

१५ पंदरमें बोले आत्मा आठ:—

द्रव्य आत्मा १ कषाय आत्मा २ योग आत्मा ३ उपयोग आत्मा ४ ज्ञान आत्मा ५ दर्शण आत्मा ६ चारित्र आत्मा ७ वीर्य आत्मा ८

१६ सोलमें बोले दंडक चोवीस २४:—

१ सातनारकियां को एक दण्डक

---

* अजयणा=यत्न नीं।

* अणसण=उपवासादिक।

* उणोदरी=कमखानां।

* विउसग्ग=निवर्तवो।

१० दश दण्डक भवनपतिका:—

असुर कुमार १ नाग कुमार २ सोवन कुमार ३ विद्युत कुमार ४ अग्नि कुमार ५ दीप कुमार ६ उदधि कुमार ७ दिसा कुमार ८ वायु कुमार ९ स्तनिल कुमार १०

५ पांच थावरका पंच दण्डक:—

पृथ्वीकाय १ अप्पकाय २ तेउकाय ३ वायुकाय ४ वनस्पतिकाय ५

१ बे इन्द्री को सतरमों

१ ते इन्द्री को अठारमों

१ चौ इन्द्री को उगणीसमों

१ तिर्यञ्च पंचेन्द्री को वीसमों

१ मनुष्य पंचेन्द्री को इकवीसमों

१ वानव्यन्तर देवता को बावीसमों

१ जोतषी देवताको तेवीसमो

१ वैमानिक देवताको चौवीसमों

१७ सतरवें बोले लेश्या छव ६ :—

कृष्ण लेश्या १ नील लेश्या २ कापोत लेश्या ३ तेजु लेश्या ४ पद्म लेश्या ५ शुक्ल लेश्या ६

निउमग्ग = निकलनेवो।

१८ अठारमें बोले दृष्टि ३ तीन:—

सम्यग् दृष्टि १ मिथ्या दृष्टि २ समामिथ्या दृष्टि ३

१९ उगणीसमें बोले ध्यान ४ च्यार:—

आर्तध्यान १ रौद्रध्यान २ धर्मध्यान ३ शुक्ल-ध्यान ४

२० बीसमें बोले षट द्रव्यको जाण पणो

धर्मास्तिकायनें पांचां बोलां ओलखीजे:—
द्रव्यथकी एक द्रव्य क्षेत्रथी लोक प्रमाणे काल थकी आदि अन्त रहित भाव थी अरूपी गुण-थकी जीव पुद्गलने हालवा चालवाको साझ, अधर्मास्तिकायने पांचा बोलां ओलखीजे:—
द्रव्यथी एक द्रव्य क्षेत्रथी लोक प्रमाणे काल-थकी आदि अन्तरहित भावथी अरूपी गुणथी थिर रहवानों साझ, आकाशास्तिकायनें पांच बोलकरी ओलखीजे:—द्रव्यथी एक द्रव्य खेत्रथी लोक अलोक प्रमाणे कालथी आदि अंत रहित भावथी अरूपी गुणथी भाजन गुण कालनें पांचां बोलां करी ओलखीजे:--द्रव्यथी अनन्ता द्रव्य खेत्रथी अढ़ाई द्वीप प्रमाणे

कालथी आदि अन्त रहित भावथी अरूपी गुणमो वर्त्तमान गुण पुद्गलास्तिकायने पाच बोलकरी ओलखीजे :--द्रव्यथी अनन्ता द्रव्य खेत्रथी लोक प्रमाणे कालथी आदि अन्त रहित भावथी रूपीगुणथी गले*मले, जीवा-स्तिकायने पांच बोलकरी ओलखीजे :-द्रव्यथी अनन्ता द्रव्य खेत्रथी लोक प्रमाणे कालथी आदि अत रहित भावथी अरूपी गुणथी चैतन्य गुण।

२१ एक वीसमे बोले राशि २ दोय :—
जीवराशि १ अजीवराशि २

२२ बावीसमे बोले श्रावक का १२ बारे व्रत :—

१ पहिला व्रतमे श्रावक स्थावर जीव हणवाको प्रमाण करे और त्रस जीव हालतो चालतो हणवाका से उपयोग त्याग करे।

२ दूजा व्रतमे मोटको झूंठ बोलवाका सउपयोग त्याग करे।

३ तीजा व्रतमे श्रावक राजडण्डे लोकभण्डे इसी मोटको चोरी करवाका त्याग करे।

---

* गले मले घटे वधे अथवा जुदा येकत्र होय।

४ चौथा ब्रत में श्रावक मर्याद उपरांत मैथुन सिवाका त्याग करै ।

५ पांचमा ब्रतमें श्रावक मर्यादा उपरांत परिग्रह राखवाका त्याग करै ।

६ छट्टा ब्रतके विषै श्रावक दशों दिशिमें मर्यादा उपरान्त जावाका त्याग करै ।

७ सातवां ब्रतके विषै श्रावक उपभोग परिभोग का बलो २६ छाबीस के जिवारी मर्यादा उपरांत त्याग करै तथो पंदरे कर्मादानकी मर्यादा उपरांत त्याग करै ।

८ आठमा ब्रतके विषै श्रावक मर्यादा उपरांत अनर्थ दण्डका त्याग करै ।

९ नवमां ब्रतके विषै श्रावक सामायककी मर्यादा करै ।

१० दशमां ब्रतके विषै श्रावक देसावगासी संवरकी मर्यादा करै ।

११ इग्यारमूं ब्रत श्रावक पोसह करै ।

१२ बारमूं ब्रत श्रावक शुद्ध साधु निर्ग्रंथनें निर्दोष आहार पाणी आदि चवदे प्रकार दान देवै ।

२३ तेवीसमें बोले साधुजीका पंच महाब्रत :—

१ पहिला महाव्रतमे साधुजी सर्वथा प्रकारे जीव हिंसा करे नही करावे नहीं करतानें भलो जाणे नही मनसें वचनसें कायासें ।

२ दूसरा महाव्रतमे साधुजी सर्वथा प्रकार झुठ वोले नहो वोलावे नहीं वोलतां प्रते भलो जाणे नही मनसें वचनसें कायासें ।

३ तीजा महाव्रत मे साधुजी सर्वथा 'प्रकारे चोरी करे नही करावे नही करतां प्रते भलोजाणे नही मनसें वचनसें कायासें ।

४ चौथा महाव्रतमे साधूजी सर्वथा प्रकारे मैथुन सेवे नही सेवावे नही सेवतां प्रते भलो जाणे नही मनसें वचनसें कायासें ।

५ पंचमा महाव्रतमे साधूजी सर्वथा प्रकारे परिग्रह राखे नही रखावे नही राखतां प्रते भलो जाणे नही मनसें वचनसें कायासें ।

२४ चौवीसमे वोले भांगा ४९ गुणचास :—

करण ३ तीन जोग ३ तीनसें हुवे ।

करण ३ तीनका नाम--- करूं नही कराऊं नही अनुमोदूं, नही जोग ३ तीनका नाम— मनसा, वायसा कायसा ।

॥ अथ पानाकी चरचा ॥

१ जीव रुपीकि अरुपी, अरुपी किणन्याय कालो पीलो नीलो रातो धोलो ए पांच वर्ण नहीं पावे इण न्याय ।

२ अजीव रुपीकि अरुपी, रुपी अरुपी दोनूं ही छे किणन्याय धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय काल ए च्यारुं तो अरुपी और पुद्गलास्तिकाय रुपी ।

३ पुन्य रुपीकि अरुपी, रुपी ते किणन्याय पुन्यते शुभ कर्म, कर्म ते पुद्गल पुद्गल ते रुपी ही छे ।

४ पाप रुपीकि अरुपी, रुपी ते किणन्याय पाप ते अशुभ कर्म कर्मते पुद्गल पुद्गलते रुपी ही छे ।

५ आस्रव रुपीकि अरुपी, अरुपीते किणन्याय आस्रव जीवका परिणाम छे, परिणामते जीव छे, जीव ते अरुपी छे, पांच वर्ण पावे नहीं इण न्याय ।

६ संवर रुपीकि अरुपी, अरुपी किणन्याय पांच वर्ण पावे नहीं ।

७ निर्जरा रुपीकि अरुपी अरुपी छे ते किणन्याय निर्जरा जीवका परिणाम छे पांच वर्ण पावे नहीं इण न्याय ।

८ वध रूपीकि अरूपी, रूपी किणन्याय वंध ते शुभ अशुभ कम छै, कर्म ते पुद्गल छै, पुद्गल ते रूपी छै।

९ मोक्षरूपी कि अरूपी अरूपी छै ते किणन्याय समस्त कर्मासि मुकावे ते मोक्ष अरूपीते जीव सिद्ध थया ते मां पांच वर्ण पावे नही इणन्याय।

॥ लडी दूजी सावद्य निरवद्यकी ॥

१ जीव सावद्यकि निर्वद्य दोनूं ही छै ते किणन्याय चोखा परिणामां निर्वद्य खोटा परिणामा सावद्य छै।

२ अजीव सावद्य निर्वद्य दोनूं नही अजीव छै।

३ पुन्य सावद्य निर्वद्य, दोनूं नही अजीव छै।

४ पाप सावद्य निर्वद्य दोनूं नही अजीव छै।

५ आस्रव सावद्यकी निर्वद्य, दोनूं ही छै किणन्याय मिथ्यात्व आस्रव अव्रत आस्रव प्रमाद आस्रव, कषाय आस्रव, ए च्यार तो एकान्त सावद्य छै, शुभ जोगा मे निरजरा होय जिण आसरी निर्वद्य छै अशुभ जोग सावद्य छै।

६ संवर सावद्यके निर्वद्य निर्वद्य छै ते किणन्याय कर्मा नें रोके ते निर्वद्य छै।

७ निरजरा सावद्यके निर्वद्य निर्वद्य छै ते किण-
न्याय कर्म तोडवारा परिणाम निर्वद्य छै ।

८ बंध सावद्यके निर्वद्य दोनूं नहीं ते किणन्याय
अजीव छै इण न्याय ।

९ मोक्ष सावद्यके निर्वद्य, निर्वद्य छै, सकल कर्म
छूकाय सिद्ध भगवंत थया ते निर्वद्य छै ।

॥ छठी तीजी आज्ञा मांहि बाहिरकी ॥

१ जीव आज्ञा मांहि के बारे, दोनूं छै ते किणन्याय
जीवका चोखा परिणाम आज्ञा मांहि छै, खोटा
परिणाम आज्ञा बाहिर छै ।

२ अजीव आज्ञा मांहि बाहिर, दोनूं नहीं, अजीव
छै ।

३ पुन्य आज्ञा मांहि के बाहिर दोनूं नहीं अजीव
छै इण न्याय ।

४ पाप आज्ञा मांहि बारे दोनूं नहीं अजीव छै ।

५ आस्रव आज्ञा मांहि के बारे, दोनूं छै, ते
किणन्याय, आस्रव नां पांच भेद छै तिणमें
मिथ्यात्व अव्रत प्रमाद कषाय ए च्यार तो
आज्ञा बाहिर छै अने जोग नां दोय भेद शुभ

जोग तो आज्ञा माहि छै अशुभ जोग आज्ञा वाहिर छै।

६ संवर आज्ञा माहि के वाहिर, आज्ञा मांहि छै ते किणन्याय कर्म रोकवारा परिणाम आज्ञा माहि छै।

७ निर्जरा आज्ञा माहिकि वाहर, आज्ञा माहि छै ते किणन्याय कर्म तोडवारा परिणाम आज्ञा माहि छै।

८ वध आज्ञा माहिकै वाहर, दोनू नही ते किण-न्याय, आज्ञा माहि वाहर तो जीव हुवे ए वध तो अजीव छै इणन्याय।

९ मोक्ष आज्ञा मांहिकि वाहर, आज्ञा मांहि छै ते किणन्याय, कर्म मूंकाय सिद्ध थया ते आज्ञा मे छै।

॥ लडी चौथी जीव अजीवकी ॥

१ जीव ते जीव०छै के अजीव, जीव ते किणन्याय सदाकाल जीवको जीव रहसे अजीव कदे हुवे नहीं।

२ अजीव ते जीव छे के अजीव छे, अजीव छे अजीवको जीव किण ही कालमें हुवै नहीं ।

३ पुन्य जीव छे के अजीव छे, अजीव छे ते किणन्याय पुन्यते शुभकर्म शुभ कर्मते पुद्गल छे पुद्गल ते अजीव छै ।

४ पाप जीव छे के अजीव छै, अजीव छे किणन्याय पाप ते अशुभ कर्म पुद्गल छे पुद्गल ते अजीव छे ।

५ आस्रव जीव छे के अजीव छे जीव, छे ते किण न्याय शुभ अशुभ कर्म ग्रहे ते आस्रव छे कर्म ग्रहे ते जीव ही छे ।

६ संवर जीवके अजीव, जीव छे ते किणन्याय कर्म रोके ते जीव ही छे।

७ निर्जरा जीवके अजीव, जीव छे किणन्याय कर्म तोड़े ते जीव छे ।

८ बंध जीवके अजीव छे, अजीव छे ते किणन्याय शुभ अशुभ कर्मको बंध अजीव छे ।

९ मोक्ष जीवके अजीव, जीव छे, किणन्याय समस्त कर्म मूकावे ते मोक्ष जीव छे ।

॥ लडी पांचवीं जीव चोरके साहूकार ॥

१ जीव चोरके साहूकार, दोनूं छै किणन्याय चोखा परिणामा साहूकार छै माठा परिणामा चोर छै।

२ अजीव चोरके साहूकार, दोनूं नहीं किणन्याय चोर साहूकार तो जीव हुवे ये अजीव छै।

३ पुन्य चोरके साहूकार, दोनूं नहीं अजीव छै।

४ पाप चोरके साहूकार, दोनूं नहीं अजीव छै।

५ आस्रव चोरके साहूकार, दोनूं छै किणन्याय च्यार आस्रव तो चोर छ, अनें अशुभ जोग पण चोर छै शुभ जोगसाहूकार छै।

६ सवर चोरके साहूकार, साहूकार छै किणन्याय कर्म रोकवारा परिणाम साहूकार छै।

७ निर्जरा चोरके साहूकार, साहूकार छै किणन्याय कर्म तोडवारा परिणाम साहूकार छै।

८ बंध चोरके साहूकार, दोनूं नहीं अजीव छै।

९ मोक्ष चोरके साहूकार, साहूकार किणन्याय कर्मसूं कायकर सिद्ध थया ते साहूकार छै।

नवी छटी जीव छांडवा जोगके आदरवा जोगकी ।

१ जीव छांडवा जोगकि आदरवा जोग छांडवा जोग छे किणन्याय पोते जीवनूं भाजन करे अनेरा जीव पर ममत्व भाव न करे ।

२ अजीव छांडवा जोगकि आदरवा जोग, छांडवा जोग छे किणन्याय अजीव छे ।

३ पुन्य छांडवा जोग के आदरवा जोग, छांडवा जोग छे ते किणन्याय पुन्य ते शुभ कर्म पुद्गल छे कर्म ते छांडवा ही जोग छे ।

४ पाप छांडवा जोगके आदरवा जोग, छांडवा जोग छे किणन्याय पाप ते अशुभ कर्म छे जीवनें दुखदाई छे ते छांडवा जोग छे ।

५ आस्रव छांडवा जोगके आदरवा जोग, छांडवा जोग छे किणन्याय आस्रव द्वारे जीवरे कर्म लागे छे आस्रव कर्म आवानां बारणा छे ते छांडवा जोग छे ।

६ संवर छांडवा जोगके आदरवा जोग, आदरवा जोग छे किणन्याय कर्म रोके ते संवर छे ते आदरवा जोग छे।

७ निर्जरा छांडवा जोगके आदरवा जोग, आदरवा जोग छे किणन्याय देशथी कर्म तोडे देशथी जीव उज्जल थाय ते निर्जरा छे ते आदरवा जोग छे।

८ बन्ध छाडवा जोगके आदरवा जोग. छांडवा जोग छे. ते किणन्याय शुभ अशुभ कर्म नो बन्ध छांडवा जोगही छे।

९ मोक्ष छाडवा जोगके आदरवा जोग आदरवा जोग ते किणन्याय सकल कर्म खपावे जीव निरमल थाय सिद्ध हुवे इणन्याय आदरवा जोग छे।

॥ षटद्रव्यपरलड़ी सातमी रूपी अरूपीकी ॥

१ धर्मास्ति काय रूपीके अरूपी, अरूपी किणन्याय पाच वर्ण नहीं पावे इणन्याय।

२ अधर्मास्ति काय रूपीके अरूपी, अरूपी किणन्याय पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय।

३ आकाशास्तिकाय रूपीके अरूपी, अरूपी, किणन्याय पांच वर्ण नहीं पावे दूणन्याय ।

४ काल रूपीके अरूपी, अरूपी, किणन्याय पांच वर्ण नहीं पावे दूणन्याय ।

५ पुद्गल रूपीके अरूपी, रूपी, किणन्याय पांच वर्ण पावे दूणन्याय ।

६ जीव रूपीके अरूपी अरूपी किणन्याय पांच वर्ण नहीं पावे दूणन्याय ।

॥ छव द्रव्यपर लड़ी आठमी सावद्य निर्वद्यकी ॥

१ धर्मास्ति काय सावद्यके निर्वद्य, दोनूं नहीं अजीव छै ।

२ अधर्मास्ति काय सावद्यके निर्वद्य, दोनूं नहीं अजीव छै ।

३ आकाशास्ति काय सावद्यके निर्वद्य, दोनूं नहीं अजीव छै ।

४ काल सावद्य के निर्वद्य, दोनूं नहीं, अजीव छै ।

५ पुद्गलास्ति काय सावद्यके निर्वद्य, दोनूं नहीं अजीव छै ।

६ जीवास्तिकाय सावद्यकि, निर्वद्य, दोनूं छे खोटा परिणामा सावद्य छे चोखा परिणामा निर्वद्य छे।

छव द्रव्यपर लडी नवमी आज्ञा मांहि वाहेरकी

१ धर्मास्ति काय आज्ञा माहिकि वाहर दोनूं नहीं ते किणन्याय आज्ञा माहि वाहर तो जीव छे। अने ए अजीव छे।

२ अधर्मास्ति काय आज्ञा मांहिकि वाहिर दोनूं नहीं किणन्याय अजीव छे।

३ आकाशास्ति काय आज्ञा माहिकि वाहिर दोनूं नही किण न्याय अजीव छे।

४ काल आज्ञा माहिकि वाहिर दोनूं नहीं किण न्याय अजीव छे।

५ पुद्गल आज्ञा माहिकि वाहिर दोनूं नहीं किण-न्याय अजीव छे।

६ जीव आज्ञा माहिकि वाहिर दोनू छे किणन्याय निर्वद्य करणी आज्ञा माहि छे सावद्य करणी आज्ञा वाहर छे इणन्याय।

छवद्रव्यपर लडी दशमी चोर साहूकारकी

१ धर्मास्ति काय चोर के साहूकार दोनूं नहीं किणन्याय चोर साहूकार तो जीव छै ए धर्मास्ति काय अजीव छै इणन्याय ।

२ धर्मास्ति काय चोर के साहूकार दोनूँ नहीं अजीव छै ।

३ आकाशास्ति काय चोरके साहूकार दोनूं नहीं अजीव छै ।

४ काल चोरके साहूकार दोनूं नहीं अजीव छै ।

५ पुद्गल चोरके साहूकार दोनूं नहीं अजीव छै ।

६ जीव चोरके साहूकार, दोनूं छै किणन्याय, माठा परिणामा आसरी चोर छै चोखा परिणामां आसरी साहूकार छै ।

॥ छव द्रव्यपर लडी इग्यारमी जीव अजीवकी ॥

१ धर्मास्ति काय जीवके अजीव, अजीव छै ।

२ अधर्मास्ति काय जीवके अजीव, अजीव छै ।

३ आकाशास्ति काय जीवके अजीव अजीव छै ।

४ काल जीवके अजीव, अजीव छै ।

५ पुद्गलास्ति काय जीवके अजीव, अजीव छे ।

६ जीवास्ति काय जीवके अजीव, जीव छै ।

॥ छव द्रव्यपर लड़ी वारमी एक अनेक की ॥

१ धर्मास्ति काय एक छे के अनेक छे, एक छे, किणन्याय, द्रव्यथकी एकही द्रव्य छे ।

२ अधर्मास्ति काय एक छे के अनेक छे एक छे, द्रव्यथकी एकही द्रव्य छै ।

३ आकाशास्ति काय एकके अनेक, एक छै, लोक अलोक प्रमाणे एकही द्रव्य छे ।

४ काल एक छे के अनेक छे, अनेक छै द्रव्यथकी अनन्ता द्रव्य छै इणन्याय ।

५ पुद्गल एक छैके अनेक छै, अनेक छे, द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य छे इणन्याय ।

६ जीव एक छै के अनेक छे, अनेक छे अनन्ता द्रव्य छे इणन्याय ।

॥ लड़ी तेरमी ॥

छवमें नवमेंकी चरचा ।

१ कर्माकोकर्त्ता छव द्रव्यमे कोण नव तत्वमे कोण उत्तर छवमे जीव नवमे जीव आश्रव ।

२ कर्मांको उपावता छवमें कोण नवमें कोण उ० छवमें जीव नवमें जीव आस्रव ।

३ कर्मांको लगावता छवमें कोण नवमें कोण उ० छवमें जीव नवमें जीव आस्रव ।

४ कर्मांको रोकता छवमें कोण नवमें कोण उत्तर छवमें जीव नवमें जीव संवर ।

५ कर्मांको तोड़ता छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव निर्जरा ।

६ कर्मांको बान्धता छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव आस्रव ।

७ कर्मांको मुकावता छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव मोक्ष ।

॥ लडी चौदमी ॥

१ अठारे पाप सेवे ते छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव आस्रव ।

२ अठारे पाप सेवाका त्याग करे ते छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव निर्जरा ।

३ सामायक छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव संवर ।

४ अव्रत छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव संवर ।

५ अव्रत छवमें कोण नवमें कोण छवमे जीव नवमे जीव आस्रव ।

६ अठारे पापको वहरमण छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव संवर ।

७ पञ्च महाव्रत छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव संवर ।

८ पांच चारित्र छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमे जीव, संवर ।

९ पांच सुमती छवमे कोण नवमे कोण छवमे जीव, नवमे जीव, निर्जरा ।

१० तीन गुप्ती छवमे कोण नवमे कोण छवमे जीव नवमे जीव, संवर ।

११ बारे व्रत छवमे कोण नवमे कोण छवमे जीव, नवमे जीव, संवर ।

१२ धर्म छवमे कोण नवमे कोण छवमे जीव, नव मे जीव, सवर, निर्जरा ।

१३ अधर्म छवमे कोण नवमे कोण छवमे जीव, नवमे जीव, आस्रव ।

१४ दया छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव, संवर, निर्जरा।

१५ हिन्सा छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव, आस्रव।

॥ लडी १५ पंदरमी ॥

१ जीव छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव, आस्रव, संवर, निर्जरा मोक्ष।

२ अजीव छवमें कोण नवमें कोण छवमें पांच, नवमें अजीव, पुन्य, पाप, बंध।

३ पुन्य छवमें कोण नवमें कोण छवमें पुद्गल, नवमें अजीव, पुन्य, बंध।

४ पाप छवमें कोण? नवमें कोण? छवमें पुद्गल, नवमें अजीव, पाप बंध।

५ आस्रव छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव, आस्रव।

६ संवर छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव, संवर।

७ निर्जरा छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव, निर्जरा।

८ वध छवमे कोण नवमें कोण छवमें पुद्गल, नवमें अजीव, पुन्य, पाप, वंध ।

९ मोक्ष छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, छवमें जाय, मोक्ष ।

॥ लडी १६ सोलहमी ॥

१ धर्मास्ति छवमे कोण नवमें कोण छवमें धर्मास्ति, नवमें अजीव ।

२ अधर्मास्ति छवमें कोण नवमें कोण छवमें अधर्मास्ति, नवमें अजीव ।

३ आकाशास्ति, छवमें कोण नवमें कोण छवमें आकाशास्ति, नवमें अजीव ।

४ काल छवमें कोण नवमें कोण छवमें काल, नवमें अजीव ।

५ पुद्गल छवमें कोण नवमें कोण छवमें पुद्गल, नवमें अजीव, पुन्य, पाप वंध ।

६ जीव, छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव, आस्रव सवर, निर्जरा मोक्ष ।

॥ लडी १७ सतरमी ॥

१ लिखण (कलम) पुठो, कागद को पानो. लकडी

की पाटी; छवमें कोण नवमें कोण छवमें पुद्गल, नवमें अजीव।

२ पात्रो, रजोहरण, चादर चोलपट्टो आदि भण्ड उपगरण, छवमें कोण नवमें कोण छवमें पुद्गल, नवमें अजीव।

३ धानको दाणों छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव।

४ रूंख (वृक्ष) छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, जीव, नवमें जीव।

५ तावड़ो छायां छवमें कोण नवमें कोण छव में पुद्गल, नवमें अजीव।

६ दिन रात छवमें कोण नवमें कोण छवमें काल, नवमें अजीव।

७ श्रीसिद्ध भगवान छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव मोक्ष।

॥ लडी अठारमी ॥

१ पुन्य और धर्म एकके होय, होय किणन्याय, पुन्य तो अजीव छै, धर्म जीव छै।

२ पुन्य और धर्मास्ति एकके होय, होय, किणन्याय पुन्य तो रूपी छै धर्मास्ति अरूपी छै।

३ धर्म और धर्मास्ति एक के दोय दोय, किणन्याय धर्म तो जीव छै, धर्मास्ति अजीव छै।

४ अधर्म और अधर्मास्ति एक कें दोय दोय, किणन्याय अधर्म तो जीव छै, अधर्मास्ति अजीव छै।

॥ लडी १९ उन्नीसमी ॥

५ पुन्य अने पुन्यवान एक कें दोय दोय, किण-न्याय, पुन्य तो अजीव छै पुन्यवान जीव छै।

६ पाप अने पापी एककि दोय दोय, किणन्याय पाप तो अजीव छै, पापी जीव छै।

७ कर्म अनें कर्मां को करता एककि दोय दोय, किणन्याय, कर्म तो अजीव छै, कर्मांरो करता जीव छै।

॥ लडी १६ सोलहमी ॥

१ कर्म जीव के अजीव अजीव।

२ कर्म रुपीकि अरुपी रुपी छै।

३ कर्म सावद्यकि निरवद्य, दोनू नही अजीव छै।

४ कर्म चोरकि साहूकार, दोनूं नही, अजीव छै।

५ कर्म आज्ञा मांहिके बाहर, दोनूं नहीं अजीव छै।

६ कर्म छांडवा जोग के आदरवा जोग, छांडवा जोग छै।

७ आठ कर्मा में पुन्य कितना पाप कितना ज्ञानावर्णी, दर्शणावर्णी, मोहनीय, अंतराय, ए च्यार कर्म तो एकान्त पाप छै, वेदनी, नाम, गोत्र, आयु ए च्यार कर्म पुन्य पाप दोनूं ही छै।

॥ लडी २० वीसमी ॥

१ धर्म जीव के अजीव जीव छै।

२ धर्म सावद्य के निरवद्य निरवद्य छै।

३ धर्म आज्ञा मांहि के बाहर श्री वितराग देवकी आज्ञा मांहि छै।

४ धर्म चोर के साहूकार साहूकार छै।

५ धर्म रूपी के अरूपी अरूपी छै।

६ धर्म छांडवा जोग के आदरवा जोग आदरवा जोग छै।

७ धर्म पुन्य के पाप दोनूं नहीं किणन्याय धर्म तो जीव छै पुन्य पाप अजीव छै।

॥ लडी २१ इकीसमी ॥

१ अधर्म जीव की अजीव जीव छै।
२ अधर्म सावद्य के निरवद्य सावद्य छै।
३ अधर्म चोर की साह्रकार चोर छै।
४ अधर्म आज्ञा मांहि कि वाहर, बाहर छै।
५ अधर्म रूपी की अरूपी रूपी छै।
६ अधर्म छाडवा जोग कि आदरवा जोग छांडवा जोग छै।

॥ लडी २२ वाइसमी ॥

१ सामायक जीव के अजीव जीव छै।
२ सामायक सावद्य की निरवद्य निरवद्य छै।
३ सामायक चोर कि साह्रकार साह्रकार छै।
४ सामायक आज्ञा मांहि कि वाहर आज्ञा मांहि छै।
५ सामायक रूपी के अरूपी अरूपी छै।
६ सामायक छांडवा जोग कि आदरवा जोग आदरवा जोग छै।
७ सामायक पुन्य कि पाप दोनँ नहीँ, किणन्याय पुन्य पाप अजीव छै। सामायक जीव छ।

॥ लड़ी २३ तेवीसमी ॥

१ सावद्य जीव के अजीव जीव छै।

२ सावद्य सावद्य छै के निरवद्य सावद्य छै।

३ सावद्य आज्ञा मांहि के बाहर बाहर छै।

४ सावद्य चोरके साहूकार चोर छै।

५ सावद्य रूपी के अरूपी अरूपी छै।

६ सावद्य छांडवा जोग के आदरवा जोग छांडवा जोग छै।

७ सावद्य पुन्य, के पाप दोनूं नहीं, पुन्य पाप तो अजीव छै, सावद्य जीव छै।

॥ लड़ी २४ चोवीसमी ॥

१ निरवद्य जीव के अजीव जीव छै।

२ निरवद्य सावद्य के निरवद्य निरवद्य छै।

३ निरवद्य चोर के साहूकार साहूकार छै।

४ निरवद्य आज्ञा मांहि के बाहर मांहि छै।

५ निरवद्य रूपी के अरूपी अरूपी छै।

६ निरवद्य छांडवा जोग के आदरवा जोग आदरवा जोग छै।

७ निरवद्य धर्म के अधर्म धर्म छै।

८ निरवद्य पुन्य के पाप पुन्य पाप दोनूँ नहीं, किणन्याय पुन्य पाप तो अजीव छे, निरवद्य जीव छे।

॥ लडी २५ पचीसमी ॥

१ नव पदार्थ मे जीव कितना पदार्थ अने अजीव कितना पदार्थ जीव, आस्रव, संवर निर्जरा, मोक्ष, ए पाच तो जीव, छे, अनें अजीव, पुन्य, पाप, वंध, ए च्यार पदार्थ अजीव छे।

२ नव पदार्थ मे सावद्य कितना निरवद्य कितना जीव अनें आस्रव ए दोय तो सावद्य निरवद्य दोनूं छे, अजीव, पुन्य पाप, वंध, ए सावद्य निरवद्य दोनूं नही। संवर, निर्जरा, मोक्ष, ए तीन पदार्थ निरवद्य छे।

३ नव पदार्थ से आज्ञा माहि कितनां आज्ञा वाहर कितना जीव, आस्रव, ए दोय तो आज्ञा मांहि पण छे, अने आज्ञा वाहर पण छे। अजीव, पुन्य, पाप, वध, ए च्यार आज्ञा मांहि वाहर दोनूं ही नही। संवर, निर्जरा मोक्ष, ए आज्ञा मांहि छे।

४ नव पदार्थ में चोर कितनां साहूकार कितनां जीव, आस्रव, तो चोर साहूकार दोनूं हीं छै। अजीव, पुन्य, पाप, बंध ए चोर साहूकार दोनूं नहीं; संवर, निर्जरा मोक्ष, ए तीन साहूकार छै।

५ नव पदार्थ में छांडवा जोग कितना आदरवा जोग कितना जीव, अजीव, पुन्य पाप, आस्रव, बंध, ए छव तो छांड़वा जोग छै; संवर, निर्जरा, मोक्ष ए तीन आदरवा जोग छै अनें जाणवा जोग नवहीं पदार्थ छै।

६ नव पदार्थ में रूपी कितना अरूपी कितनां जीव, आस्रव, संवर, निर्जरा, मोक्ष ए, पांच तो अरूपी छै; अजीव रूपी अरूपी दोनूं छै पुन्य, पाप, बंध रूपी छै।

७ नव पदार्थ में एक कितनां अनेक कितना उ० अजीव टाली आठ पदार्थ तो अनेक छै, अने अजीव एक अनेक दोनूं छै, किणन्याय धर्मास्ति अधर्मास्ति आकाशास्ति ये तीनूं द्रव्य थकी एक एक ही द्रव्य छै।

॥ लडी २६ छवीसमी ॥

१ छव द्रव्य मे जीव कितना अजीव कितना एक जीव पांच अजीव छे ।

२ छव द्रव्य मे रूपी कितना अरूपी कितना जीव, धर्मास्ति, अधर्मास्ति आकाशास्ति, काल, ए पांच तो अरूपी छे, पुद्गल रूपी छे ।

३ छव द्रव्य मे आज्ञा मांहि कितना आज्ञा बाहर कितना जिव तो आज्ञा माहि बाहर दोनूं छे, बाकी पाच आज्ञा मांहि बाहर दोनूं नहीं ।

४ छव द्रव्य मे चोर कितना साहूकार कितना जीव तो चोर साहूकार दोनूं छे, बाकी पांच द्रव्य चोर साहूकार दोनूं नही, अजीव छे ।

५ छव द्रव्य में सावद्य कितना निरवद्य कितना एक जीव द्रव्यतो सावद्य निरवद्य दोनूं छे; बाकि पांच द्रव्य सावद्य निरवद्य दोनूं नहीं ।

६ छव द्रव्य मे एक कितना अनेक कितना धर्मास्ति, अधर्मास्ति, आकाशास्ति, ए तीनों तो एक ही द्रव्य छे, काल, जीव, पुद्गलास्ति ए तीन अनेक छे, इणाका अनन्ताद्रव्य छे ।

० छव द्रव्यमें संप्रदेशी कितना अप्रदेशी कितना एक काल तो अप्रदेशी छै; बाकी प्रांच सप्रदेशी छै।

॥ लडी २७ सत्ताइसमी ॥

१ पुन्य धर्मकि अधर्म दोनूं नहीं; किणन्याय धर्म अधर्म जीव छै; पुन्य अजीव छै।

२ पाप धर्म कि अधर्म दोनूं नही; किणन्याय धर्म अधर्म तो जीव छै पाप अजीव छै।

३ बंध धर्मकि अधर्म दोनूं नहीं; किणन्याय धर्म अधर्म तो जीव छै बंध अजीव छै।

४ कर्म अनें धर्म एक कि दोय दोय छै; किणन्याय कर्म तो अजीव छै; धर्म जीव छै।

५ पाप अने धर्म एक कि दोय दोय छै; किणन्याय पाप तो अजीव छै; धर्म जीव छै।

६ अधर्म अनें अधर्मास्ति एक कि दोय दोय; किणन्याय अधर्म तो जीव छै; अधर्मास्ति अजीव छै।

७ धर्म अनें धर्मास्ति एक कि दोय दोय; किणन्याय धर्म तो जीव छै; धर्मास्ति अजीव छै।

८ धर्म अनें अधर्मास्ति एक कि दोय दोय; किणन्याय धर्म तो जीव; अधर्मास्ति अजीव छै।

९ अधर्म अनें धर्मास्ति एक कै दोय दोय, किण न्याय अधर्म तो जीव छै, धर्मास्ति अजीव छै।

१० धर्मास्ति अनें अधर्मास्ति एककै दोय दोय, किण-न्याय धर्मास्ति को तो चालवा नो सहाय छै, । अनें अधर्मास्तिनो थिर रहवानों सहाय छै।

११ धर्म अनै धर्मी एक कै दोय एक छै, किणन्याय न्याय ? धर्म जीवका चोखा परिणाम छै।

१२ अधर्म अनै अधर्मी येक कै दोय ? येक छै, किणन्याय ? अधर्म जीव का खोटा परिणाम छै।

प्रश्नोत्तर

१ थारी गति कांई-मनुष्य गति ।

२ थारी जाति कांई—पचेन्द्री ।

३ थारी काय कांई—त्रस काय ।

४ इन्द्रीयां कितनी पावे ५ पांच ।

५ पर्याय कितनी पावे—छव ।

६ प्राण कितना पावे—१० दश पावे ।

७ शरीर कितना पावे—३ तीन—ओदारिक, तेजस, कार्मण ।

८ जोग कितना पावे—६ नवे पावे, च्यार मन का, च्यार वचनका, एक काया को, ओदारिक ।

६ उपयोग कितना पावे ४ च्यार पावे मतिज्ञान १ श्रुतिज्ञान २ चक्षु दर्शन ३ अचक्षु दर्शन ४ ।

१० थारे कर्म कितना ८ आठ ।

११ गुणस्थान किसो पावे—व्यवहारथी पांचमूं, साधू नें पूछें तो छट्ठो ।

१२ विषय कितनी पावे २३—तेवीस,

१३ मिथ्यात्वना दस बोल पावे की नही, व्यवहारथी नही पावे।

१४ जीवका चवदा भेदामे से किसो भेद पामे, १ एक चवदमूं पर्याप्तो सन्नी पचेन्द्री को पावे।

१५ आतमा कितनी पावे श्रावकमे तो ७ सात पावे, अनें साधू मे आठ पावे।

१६ दण्डक किसो पावे—एक इकवीसमु।

१७ लेश्या कितनी पावे—६ छव।

१८ दृष्टी कितनी पावे—व्यवहारथी एक, सम्यक दृष्टी पावे।

१९ ध्यान कितना पावे—३ तीन, सुक्ल ध्यान टालके।

२० छवद्रव्यमे किसो द्रव्य पावे १—एक जीव द्रव्य।

२१ राशि किसो पावें—एक जीव राशि।

२२ श्रावक का बारा व्रत श्रावक मे पावे।

२३ साधू का पञ्च महा व्रत पावे की नही—साधू में पावें श्रावक मे पावे नही।

२४ पाच चारित्र श्रावक मे पावे की नही, नही पावे, एक देश चारित्र पावे।

१ एकेन्द्री की गति काई—तिर्यचगति।

२ एकेन्द्री की जाति कांई—एकेन्द्री।

३ एकेन्द्री में काया किसी पावै ५—पांच थावर की।

४ एकेन्द्र में इन्द्रियां कितनी पावै—एक स्पर्श इन्द्री।

५ एकेन्द्री में पर्याय कितनी पावै—४ च्यार मन भाषा एटोय टली।

६ एकेन्द्री में प्राण कितना पावै ४—च्यार पावै स्पर्श इन्द्रीय बलप्राण १ कायबलप्राण २ श्वासोश्वासबलप्राण ३ आयुषोबलप्रान ४

७ मूरड माटीं मुलतानी पत्थर सोनो चांदी रतनादिक पृथ्वीकाय का प्रश्नोत्तर।

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	एकेन्द्री
काय किसी	पृथ्वीकाय
इन्द्रियां कितनी पावै	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी पावै	४ च्यार, मन भाषा टली
प्राण कितना	४ च्यार पावै, स्पर्श इन्द्री बल प्राण १ काय बल २

श्वासोश्वास बल ३ आयु
बलप्राण ४

८ पांणी ओसादि अप्पकायकी

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	एकेन्द्री
काय किसी	अप्पकाय
इन्द्रियां कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	४ च्यार, मन भाषाटली
प्राण कितना	४ च्यार, ऊपर प्रमाणे

९ अग्नी तेउकायनी

प्रश्न	उत्तर
गति काइ	तिर्यंच गति
जाती कांई	एकेन्द्री
काय किसी	तेउकाय
इन्द्रिया कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	४ च्यार, मन भाषा टली
प्राण कितना	४ च्यार, ऊपर प्रमाणें

१०वायु कायकी

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	एकेन्द्री
काय कांई	वायुकाय
इन्द्रियां कितनी	एकस्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	४ च्यार ऊपर प्रमाणे
प्राण कितना	४ च्यार ऊपर प्रमाणे

११ वृक्ष, लता, पान, फूल, फल लीलण, फूलण आदि वनस्पतिकायनी

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	एकेन्द्री
काय कांई	वनस्पतिकाय
इन्द्रियां कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	च्यार ऊपर प्रमाणे
प्राण कितना	च्यार ऊपर प्रमाणे

१२ लट गिंडोला आदि वेन्द्रीकी

प्रश्न	उत्तर
गति काई	तिर्यंच गति
जाति काई	वेइन्द्री
काय काई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	२ दोय, स्पर्श, रस, इन्द्री
पर्याय कितनी	५ पांच मन पर्याय टली
प्राण कितना	६ छव, रस इन्द्री बल प्राण १
	स्पर्श इन्द्री बल:प्राण २
	काय बल प्राण ३
	श्वसोश्वास बल प्राण ४
	आउखो बल प्राण ५
	भाषा बल प्राण ६

१३ कीड़ी मकोड़ा आदि तेइन्द्रीका ।

प्रश्न	उत्तर
गति काई	तिर्यंच गति
जाति काई	तेइन्द्री
काय काई	त्रस काय

इन्द्रियां कितनी	३ तीन, स्पर्श १ रस २ घ्राण ३
पर्याय कितनी	५ पांच, मन टली
प्राण कितना	७ सात, छव तो ऊपर प्रमाणे घ्राण इन्द्री बल प्राण वध्यो

१४ माखी मच्छर टीडी पतंगिया बिच्छु आदि चोइन्द्री का।

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	चोइन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इंद्रीयां कितनी	४ च्यार, श्रुत इंद्री टली
पर्याय कितनी	५ पांच, मन टली
प्राण कितना	८ आठ, सात तो ऊपर प्रमाणे एक चक्षु इंद्री बल प्राण और वध्यो

१५ पंचेन्द्रीकी

प्रश्न	उत्तर
गति कितनी पावै	४ च्यारूं ही पावै
जाति कांई	पंचेंद्री

काय कांई	त्रस काय
इंद्रियां कितनी	पाचोंही
पर्याय कितनी	६ छवों ही पावे सन्नीमें और असन्नीमे ५ पांच, मन टल्यो,
प्राण कितना पावे	सन्नीमे तो १० दशुँ ही पावे असन्नी मे ६ पावे मन टल्यो

१६ नारकी पूछा

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	नरक गति
जाति कांई	पंचेंद्री
काय कांई	त्रस काय
इंद्रियां कितनी	५ पाचोंही
पर्याय कितनी	५ पांच, मन भाषा भेली लेखवी
प्राण कितना	१० दशोंही

१७ देवताकी पूछा

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	देव गति
जाति कांई	पंचेंद्री

काय कांई	त्रस काय
इन्द्रीयां कितनी	५ पांचोंही
पर्याय कितनी	५ मन भाषा भेलो लिखवी
प्राण कितना	१० दशोंही

१८ मनुष्य की पूछा असन्नी की

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	मनुष्य गति
जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रीयां कितनी	५ पांच
पर्याय कितनी	३॥ श्वास लेवेतो उश्वास नहीं
प्राण कितना	७॥ श्वास लेवेतो उश्वास नहीं

१९ सनी मनुष्य की पूछा

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	मनुष्य गति
जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रीयां कितनी	५ पांच

पर्याय कित्तनी   ६ छव

प्राण कितना   १० दश

१ तुमे सन्नीकि असन्नी ? सन्नी, किणन्याय मन छै

२ तुमे सूक्ष्मकि बादर, ? बादर किण० ? दीखूं छूं

३ तुमे त्रसकि स्थावर ? त्रस, किण० ? हालू चालूं छूं।

४ एकिन्द्री सन्नी कि असन्नी—असन्नी, किण० मन नहीं

५ एकिन्द्री सुक्ष्म कि बादर—दोनूं ही छै किण० एकिंद्री दोय प्रकार की छै, दीखे ते बादर छ, नहीं दीखे ते सुक्ष्म छै

६ एकिन्द्री त्रस कि स्थावर—स्थावर छै, हाले चाले नहीं

७ एकिंद्री से इंद्रयां कितनी—एक स्पर्श इंद्री (शरीर)

८ पृथ्वीकाय अप्पकाय तेउकाय वायुकाय वनस्पतिकाय

प्रश्न	उत्तर
सन्नी कि असन्नी	असन्नी छै मन नहीं
सूक्ष्म कि बादर	दोनूं ही प्रकार की छै
त्रस कि स्थावर	स्थावर छै

९ बेइन्द्री तेइन्द्री चौइन्द्रीकी पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	असन्नी छै मन नहीं
सूक्ष्म के बादर	बादर छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै

१० तिर्यंच पंचेन्द्री की पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	दोनूं ही छै
सूक्ष्म के बादर	बादर छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै

११ असन्नी मनुष्य चौदे स्थानकमें नीपजे।

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	असन्नी छै
सूक्ष्म के बादर	बादर छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै

१२ सन्नी मनुष्य ते गर्भ में उपजे जिणारी पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	सन्नी के
त्रस के स्थावर	त्रस के
सूक्ष्म के बादर	बादर के

१३ नारकी का नेरीया की पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	सन्नी के
सूक्ष्म के बादर	बादर के
त्रस के स्थावर	त्रस के

१४ देवता की पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	सन्नी के
सूक्ष्म के बादर	बादर के
त्रस के स्थावर	त्रस के

१९ गाय भैंस हाथी घोड़ा बलद पक्षी आदि पशु जानवर की पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी कै असन्नी	दोनूं ही प्रकार का छै छिमो छिमकै मन नहीं, गर्भज कै मन छै
सूक्ष्म कै बादर	बादर छै, नेत्र से देखवा में आवै छै
त्रस कै स्थावर	त्रस छ हालै चालै छै

१ एकेन्द्री में बेद कितना पावै एक नपुंसक बेद पावै

२ पृथ्वी पाणी बनस्पति अग्नि वायरो यां पांचां में बेद कितनां पावै—१ एक नपुंसक ही छै

३ बेइन्द्री तेइंद्री चोइंद्री में बेद कितनां पावै—एकनपुंसक बेदही पावै छै

४ पंचेन्द्रीमें बेद कितना पावै—सन्नी में तो तीनों ही बेद पावै छै, असन्नीमें एक नपुंसक बेदही छै

५ मनुष्यमें बेद कितनां पावै—असन्नी मनुष्य चौदे थानक में उपजे जीवां में तो बेद एक नपुंसक

ही पावे छे, सन्नी मनुष्य गर्भ मे उपजे जिणामे वेद तीनोंही पावे छे

६ नारकी मे वेद कितना पावे—ऐक नपुंसक वेद ही पावे छे।

७ जलचर थलचर उरपर भुजपर खेचर यां पांच प्रकार का तिर्यंचा मे वेद कितना पावे—छिमो-छिम उपजे ते असन्नी छे जिणामे तो वेद नपुंसकही पावे छे, अनें गर्भ में उपजे ते सन्नी छे जिणा मे वेद तीनोही पावेछे।

८ देवतामें वेद कितना पावे—उत्तर—भवनपती, वाणव्यन्तर, जोतिषी, पहिला दूजा देव लोक ताई तो वेद दोय स्त्री १ पुरुष २ पावे छे, और तीजा देवलोक से सार्थ सिद्ध ताई वेद एक पुरुषही छे।

९ चोवीस दण्डक का जीवां के कर्म कितना उगणीस दण्डका का जीवामे तो कर्म आठही पावे छे, अनें मनुष्य मे सात आठ तथा च्यार पावे छे।

१ धर्म व्रत मे के अव्रत मे—व्रत मे।

२ धर्म आज्ञा मांहि कें बाहर श्रीवीतरागदेव की आज्ञा मांहि छै।

३ धर्म हिंसा में के दया में—दया में।

४ धर्म मोल मिलै के नहीं मिलै—नहीं मिलै, धर्म तो अमूल्य छै।

५ देव मोल मिलै के नहीं मिलै—नहीं मिलै, अमूल्य छै।

६ गुरु मोल लियां मिलै के नहीं मिलै—नहीं मिलै, अमूल्य छै।

७ साधुजी तपस्या करै ते व्रत में के अव्रत में व्रत पुष्टको कारण छै, अधिक निर्जरा धर्म छै।

८ साधुजी पारणो करै ते व्रत में के अव्रत में अव्रतमें नहीं, किणन्याय ? साधुके कोई प्रकार अव्रतरही नहीं सब सावद्य जोगका त्याग छै। तिणसूँ निरजराथाय छै तथा व्रत पुष्टको कारण छै।

९ श्रावक उपवास आदि तप करै ते व्रत में के अव्रत में—व्रत में।

१० श्रावक पारणूँ करै ते व्रत में के अव्रतमें—अव्रत में किणन्याय ? श्रावक को खाणों पीणों

पइरणों ए सर्व अव्रत मे छै श्रीउववाई तथा सूयगडांग सूत्र मे विसतारकर लिख्या छै।

११ साधुजी ने सूजतो निर्दोष आहार पाणी दिया कांई होवे तथा व्रतमे कि अव्रतमें—असुभ कर्म क्षयथाय तथा पुन्य वंधै छै, १२ मूं व्रत छै।

१२ साधुजी नें असूजतो दोपसहित आहार पाणी दिया कांई होवे तथा व्रत में कि अव्रत में—श्री भगवती सूत्र में कह्यो छै. तथा श्री ठाणाग सूत्र कि तीजे ठाणें में कह्यो छै अल्प आयुवंधे अकल्याणकारी कर्म वधै तथा असूजतो दोषोते व्रत में नहीं। पाप कर्म वधै छै।

१३ अरिहत देव देवता कि मनुष्य—मनुष्य छै।

१४ साधु देवता कि मनुष्य—मनुष्य छै।

१५ देवता साधुनी वंछा करै कि नहीं करै—करै साधु तो सवका पूजनीक छै।

१६ साधु देवताको वंछा करेकि नहीं करै—नहीं करै।

१७ सिद्ध भगवान देवता कि मनुष्य—दोनूं नहीं।

१८ सिद्ध भगवान सुक्ष्म कि वादर—दोनूं नहीं।

१९ सिद्ध भगवान त्रसकि स्थावर--दोनूं नहीं।

२० सिद्ध भगवान सन्नी के असन्नी--दोनूं नहीं ।

२१ सिद्ध भगवान पर्याप्ता के अपर्याप्ता--दोनूं नहीं ।

॥ इति पाना की चरचा ॥

१ असंयति अव्रती ने दीयां कांई होवे श्री भगवति सूत्र के आठ में शतक छट्ठै उद्देशे कह्यो असंयती अव्रती नें सूजतो असूजतो सचित अचित च्यार प्रकार को आहार दियां एकान्त पाप होय निर्जरा नहीं होय ।

२ असंजती अव्रती जीवां को जीवणो वांछणो के मरणो बांछणो असंजती को जीवणो बांछणो नहीं, मरणो बांछणो नहीं, संसार समुद्र सें तिरणो बांछणो ते श्रीवीतरागदेव को धर्म छै ।

३ कसाई जीवां ने मारै तिण वेल्यां साधु कसाई नें उपदेश देवे के नहीं देवे—अवसर देखें तो उपदेश देवै हिन्साका खोटाफल कहै ।

प्रश्न—जीवां को जीवणो बांछकर उपदेश देवै के कसाई नें तारवा निमित्त उपदेश देवै—

उत्तर—कमाई नें तारवा निमित्त उपदेश देवे ते
वीतरागको धर्म छे ।

६ कोई वाडामें पशु जानवर दुखिया छे घनें साधु जिया रस्ते जाय रह्या छे तो जीवाकी अनुकम्पा थाणी छोडे थी नहीं छोड़े नही छोडे, किणन्याय, उ० श्रीनिशीथ सूत्री १२ धारमें उद्देशामें कह्यो छै अनुकम्पा करे त्रस जीव बाधे बंधावे अनुमोदे तो चौमासी प्रायश्चित आवे, तथा साधु संसारी जीवाकी सार संभार करे नहीं साधु तो ससारी कर्तव्य त्यागदिया । इति सम्पूर्णम् ।

जान पणांका २५ बोल।

१ देव अरिहन्त, गुरु निर्ग्रंथ, धर्म्म केवली परूप्यो ये तीन अमूल्य रत्न छै।

२ जीव अजीव; पाप पुन्य, धर्म अधर्म व्रत अव्रत, आज्ञा अणआज्ञा, यथार्थ जाणयां बिना समकित नहीं, समकित बिना चरित्र नहीं तथा मुक्ति नहीं, उघाडै मुख बोल्यां धर्म नहीं।

३ साधूका भेष पहन कर साधू नाम धरानेसे साधू नहीं जैसेही पंचम गुणस्थान स्पर्श बिना श्रावक नहीं, छै द्रव्य, नव तत्त्व, च्यार गति, छै काय, देव गुरु धर्म ओलख्यां सै सम्यक्त्वी जाणवो।

४ असंजती जीवको जीवणो वंछै तेराग, मरणो वंछै ते द्वेष, संसार समुद्र सें तिरणो वंछै ते वीत राग देवको धर्म।

५ जीव जीवे ते दया नहीं, मरे ते हिंसा, नहीं, मारण वालानें हिंसा, नहीं मारे ते दया ।

६ पृथ्वी पाणी वनस्पति अग्नि वायरो (हवा) त्रसकाय मे वेन्द्री सें पंचेन्द्री तक यह छऊं कायानें मारे नहीं मरावे नही, मारता प्रते भलो जाणें नही, तेह दया छे, भय नही उपजावे ते अभय दान छे ।

७ श्रावक च्यारूं आहार भोगवे ते अव्रत छे तेहथी पापकर्म लागे छे, देसथकी वा सर्वथकी त्याग करे तेह व्रत छे, संवर धर्म छे, मन वचन काया का शुभजोग वरतावे ते निर्जरा धर्म तिणथी पुन्य कर्म लागे छे ।

८ गृहस्थ खावे पीवे, दूजाने खुवावे पावे खावतां पीतां प्रते भलो जाणें ते अधर्म अव्रत अव्रवहार तेहथी अशुभ पापकर्म लागे छे ।

९ सर्व सावद्य जोगका त्यागकरी पंच महा व्रत पाले तेह साधु, नही पाले ते असाधु, देसथकी त्याग-करी शुद्ध देवगुरु धर्मकी अराधना करे संसार सगपण अनित्य जाणे साधूपणाका भाव राखे श्रमण निग्रंथ की उपासना करे, ते श्रमणोपासक ।

१० अठारे पाप सेवाका त्यागकरे, तीन करण तीन जोगमें सावद्य जोग पचखे, साधु तणीपर गोचरी करे,

पडमा आदरै, पादो गमनादि संथारो करे, साधू पणों नहीं पचखे, तो श्रावक ही छे गुणस्थान पांचमों हीं पावे उणने साधू नहीं कहिजे आनन्दजीनें संथारामें अंतसमांतांई उपासगदसा सूत्र में ग्रहस्थ कह्यो छे।

११ शुद्ध साधू मुनिराजने सूजतो निर्दोष आहार पाणी दियां कर्म निर्जरा होय, तथा कल्याणकारी कर्म ते पुन्य बंधे, प्रति संसार करे, शुभ दीर्घ आयु बांधे, ठाणांग भगवती विपाक आदि सूत्रां में घणीजगां कह्यो छे।

१२ सर्व व्रतधारी साधू ते संजती छट्ठा गुणस्थान सें चौदमां तांई, अव्रती अपच्चखाणी ते असंजती पहिलां गुणस्थानसें चौथा तांई, देश व्रतधारी व्रता-व्रती श्रावक ते पंचम गुणस्थान जाणवो, त्याग करे ते व्रत देश संवर, आगार राख्यो सो सेवे सेवावे भलो जाणें ते अव्रत आश्रव छे, सुयगडांग उवाई आदि घणां सूत्रांमें विस्तार छे।

१३ असंजती अव्रती अपच्चखाणी ने च्यार आहार सूजता असूजता निर्दोष तथा दोष सहित पडिलाभे तो एकान्त पाप निर्जरा नथी भगवती सूत्रके आठमें सतक छट्ठे उद्देसे कह्यो है।

१४ साता दिया साताहोय ए परूपणां वाला नें भगवान सूत्र सुयगडांग अध्ययन ३ उद्देशे ४ में इम कह्यो छै आर्य मार्गथी न्यारो १, समाधि मार्ग थी अलगो २, जिन धर्मकी हेलणा रोकरणहार ३, अल्प-सुखां रे वास्ते घणा सुखांरो हारण हार ४ असत्य पक्ष थी असोक्षरो कारण ५, लोहवाणीयां परे घणो झूरसी ६ ।

१५ त्रस जीवने साधू अनुकम्पा अरथे बांधे बंधावे बांधतानें भलो जाणें तो चौमासी प्रायश्चित्त कह्यो तथा बंधीया हुया जीवानें अनुकम्पाआणी छोडे छुडावे छोडता प्रते भलो जाणें तो चौमासी प्रायश्चित्त आवे सूत्र निसीथ उद्देसे १२ में कह्यो छै ।

१६ चुलणी पिया श्रावक पोसामे ३ पुत्रानें मारतो देखी बचाया नहीं माताने छुडावण उठ्यो तो पोसो भांगो उपासग दसा सूत्र अध्ययन तीजे कह्यो छै तथा अरणक आदि श्रावक पण मोह अनुकम्पा नहीं करी ।

१७ साधू मुनिराज ने लब्ध फोड़णी नहीं, सूत्र पन्नवणा पद ३६ में कह्यो छै तेजोलिम्या फोड्यां जघन्य ३ उत्कृष्ट ५ क्रिया लागे, इम वैक्रय लब्धि आहारिक लब्धी फोड्या क्रिया कही छै, तथा भगवती शतक ३

उद्देसे ४ वैक्रिय लब्धी फोडे तिणमांई कह्यो, बिना आलोयां मरे तो विराधक कह्यो छै।

१८ असंयतीने दान देवा दीवावाका त्याग आगे पण बडा २ श्रावक क्रिया सूत्रांमें चाल्या छै: उपासग दसामें आनन्दजी अन्यतीरथी ते असंजती नें देवा दीवावाका त्याग भगवंत पासे कीया छै धर्म हीयतो त्याग किमकरे।

१९ देवल प्रतिमा कारणे पृथ्वीकाय हणे तिणनें भगवान् आचारङ्ग तथा प्रश्न व्याकरण सूत्र में अहित अबोध को कामी कह्यो, तथा धर्म हेत जीव हण्यां दोष नहीं इम परूपे ते अनारजनों बचन छे आचारङ्ग में कह्यो छे, यहवी अशुद्ध परूपणावालो मिथ्याती मंद बुद्धि छै।

२० सर्व प्राण भूत जीव सत्वनें दुःख उपजावे नहीं, भय उपजावे नहीं, झुरावे नहीं, प्रतापना नहीं देवे, तो सातावेदनी नों बंध सूत्र भगवती शतक ७ उद्देसे ६ कह्यो छै: परन्तु एकेन्द्री मार पचेन्द्री पोख्यां धर्म किसी जगां नहीं कह्यो।

२१ साता वेदनी, मनुष्य देवतानो आयुष, शुभ नाम, उंचगोत्र ए ४ शुभ कर्म ते पुन्य छै, तेहनों

करणी निर्वद्य जिन आज्ञामें छे, ए पुण्यनी करणी सूत्र भगवती शतक ८ मे उद्देसे ९ मे कहो छे।

२२ साधू मुनिराज आहार उपादिक भोगवे तेह निरवद्य छे। दसवैकालिक अध्ययन ४ चौथे गाथा ८ मी में कह्यो छे जैयणा युत आहार करतां पाप नहीं तथा अध्ययन ५ मे साधुनी गोचरी असावद्य मोक्ष सावधानीं हेतू कह्यो। सूत्र भगवती शतक १ उद्दे मे ९ कह्यो छे साधु शुद्ध आहार भोगतां (७) सात कर्म ढीलापाडे तथा दस० वैकालिक सूत्रमे शुद्धगति कही छे।

२३ मित्थाती उपवास वेलादिक तप करें अथवा साधू मुनिराजने निर्दोष आहार पाणी वहिरावे तथा मन वचन कायाका शुभ जोग वरतावे तेह निर्वद्य करणी जिन आज्ञामे छे, तेहथी पाप क्षयहोय पुन्यबंधे सूत्र भगवती शतक ८ में उद्देसे १० में ज्ञान विना क्रिया करे तेहनें देश आराधक कह्यो छे, मेघ कुमार हाथीरा भवमें सुसला ज्यानवरनी दयाकरी आपणों पग ऊचो राख्यो घणोंकष्ट सह्यो तिणसूं प्रति समार करी मनुष्योंमे आयुष बाध्यो, उत्तराध्ययन ७ में मित्थातीने निर्जरा आश्री शुव्रती कह्यो छे, भगवती

शतक ६ में उद्देशे ३१ में असोच्चा केवली अधिकारे प्रथम गुणठाणावाला पणीरा शुभ अध्यवसाय शुभ परिणाम विशुद्ध लेश्या कही छै।

२४ साधु मुनिराज अचित निर्दोष आहार भोगवे अने ठंडा बासी आहार पाणीमें बेन्द्री आदि जीव हुवे ते नहीं भोगवे परन्तु बेइन्द्रीयादि तथा फूलणादि नहीं होवे तो ठंडो बासी आहार भोगवतां दोष नहीं उत्तराध्ययन ८ में गाथा १२ मी में सीतल पिराड आहार लेणो कह्यो तथा आचाराङ्ग श्रुत खंध १ अधेन ९ में उद्देसे ४ चौथे गाथा १३ में भगवान् ठंढो आहार भोल्यो लीयो कह्यो छै: तिहां टीकामें बासी भात कह्यो तथा प्रश्न व्याकरण अधेन १० में सीतल बासी कह्यो, विणठोरण एहवो आहार करी द्वेष नहीं करवो इम कह्यो छै।

२५ गृहस्थ नें सूत्र भणवाकी जिन आज्ञा नहीं प्रश्न व्याकरण अधेन ७ में महाऋषिने हीं सूत्र भणवारी आज्ञा कही देवेन्द्र नरेन्द्र अर्थे भणे तथा अन्यतिरथी गृहस्थनें बाचणी देवे देवावे देवता प्रते भलो जाणे तो चौमासी प्रायश्चित्त आवे निसीथ उद्देसे ९ में कह्यो छै, साधु नें भी अल्पआयां सूत्र भणवा

सूत्र व्यवहार उद्देशे १० में कह्यो छै तिणरी विगत: दीक्षालीया ३ वर्ष हुयां निशीथ ४ वर्ष हुया पछे सुयगडाग ५ वर्ष पछे वृहतकल्प व्यवहार दशाश्रुत स्कंध ८ वर्ष ठाणाग समवायाग. १० वर्ष दीक्षालिया पछे भगवती कल्पै इम कह्यो छै तथा उवाई प्रश्न २० में श्रावकानें अर्थ रा जाणकार कह्या छै।

यह २५ बोल जयाचार्य कृत प्रश्नोत्तरमांहिथी सूक्षम पणे धाया छै विशेष वेगावार भ्रम विध्वंसादि ग्रंथामें वाचवो। ॥इति॥
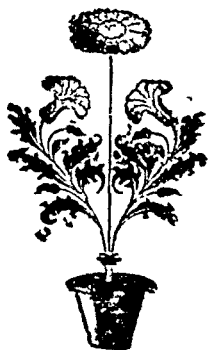
अथ मोहजीत राजारो व्याख्यान ।

दोहा । सुधर्म स्वरग सुधरमीं । सभा मांय शक्र द ॥ सहस्त्र चौरासी सुर भला । सामानिक सुख कंद ॥ १ ॥ ति लख छतीस सहस्त्र सुर । आतम रक्षक अधिकार ॥ तीन पुरुषदा परवरी । लोकपाल वली च्यार ॥ २ ॥ अग्रमहेषी आठ वर । एक २ नो परिवार । सोलह २ सहस्त्र सहु । एक लाख अठावीस हजार ॥ ३ सुरसहु सुणतां अमरपति । आखे वैण उदार ॥ मोहजीत राजा तणो । निरमोही परिवार ॥ ४ ॥ इन्द्र प्रशंसा करी घणी । सांभलनें इक देव ॥ आयो नृप छलवा भणी । आणी अति अहमेव ॥ ५ ॥ राय कुमर प्रच्छन्न कियो । धार्यो योगी भेष ॥ कुमर किहां लाधो नहीं । जोय रह्या सुविशेष ॥ ६ ॥ एक दासी फिरती थकी । आई नगरी बाहर ॥ योगी होइनें मल गलो । आखे वयण तिवार ॥ ७ ॥

सोरठा । सुण दासी मुझ वातरे । कुमर भणी मुझ मठ कड़े ॥ सिंह हण्यो साक्षातरे । कहतां हिवड़ो थड़ हड़े ॥

ढाल १ ली

महलामें बैठीराणी कमलावती

ए बचन सुणीनें दासी इम भणे। करती ज्ञान विलास ‖ सहु परिवार कह्यो जिन कारमो। तूं क्यों थयोरे उदास ‖ साभलरे योगी तें योगरी युक्ति रीत जाणी नहीं ‖ (ए आकड़ी) ‖ १ ‖ सुरपति नरपति सर्व अथिरछे। श्वासरो किसो विश्वास ‖ तूं क्यों हुवोरे योगी गलगलो। थारे नहीं आयो ज्ञान प्रकाश ‖ सा ‖ २ ‖ ऊंच ने नीच रंक राजा सहु। अविच मरण अपिचाय ‖ चण चण मरे छे श्री जिन भाखियो। तूं सोच देख मन माय ‖ सा ‖ ३ ‖ निज आत्म ज्ञान स्वभावे थिर कह्या। ते किणसुं लूंच्या नहीं जाय ‖ थारेरे म्हारो माया जाल छे। मूर्ख रह्या मुरझाय ‖ सा ‖ ४ ‖ जे नर आत्म स्वभाव नहीं ओलख्यो। पुद्गलनें जाणे निज स्वभाव ‖ मोहजालमें खूता मानवी। ते किम पामें तिरणरो डाव ‖ सा ‖ ५ ‖ तू अन्तर रोगी भोगी कहणरो। निज आत्म स्वभावरो अजाण ‖ कुमर रो मरण देख दुमणो थयो। थारे मोटो रोग पिछाण ‖ सा ‖ ६ ‖ जे जिवणमें हर्ष प्रमोद होवे घणो। मरणमे होवे दिलगीर ‖ राग द्वेषमे खूता मानवी

। ते किम पासै भवजल तीर ॥ सां ॥ ७ ॥ असंयती जीवरो बंछै जीवणो । ते प्रत्यक्ष राग पहिचान ॥ रागछै तेतो दशमो पापछै । राग नें दया कहैते अजाण ॥ सां ॥ ॥ ८ ॥ मरणो बंछै तेतो द्वेषछै । ते ओलखणो सोरो जगमांय ॥ राग ओलखणो दोरो तेहथी । श्री वीतराग कहै बाय ॥ सां ॥ ६ ॥ जे राग नें द्वेष तणें वश मानवी। ज्यांरे हर्ष शोक रह्यो व्याप ॥ ते भ्रमण करसी चिहुं-गत संसारमें । सहसी नरक निगोद सन्ताप ॥ सां ॥ १० ॥ एह फल मोह कर्म नां जिन कह्या। ते टाले राग द्वेषनीं ताप ॥ निज आत्म ज्ञान स्वभावे रम रह्या । सम भावे चित्त थाप ॥ सां ॥ ११ ॥ जीव अनंता नित्य ही मर रह्या । मच्छ गला गल पेख ॥ तूं सोच करसीरे किण किण जीवरो । तिण स्युं सम भाव रहणो विशेष ॥ सां ॥ १२ ॥ योगी तो सुणनें रह्यो जोवतो । दूणरे तो मूल न दाह ॥ अद्भुत रचना देखी एहनीं । मन दृढ़ बोलै अथाह ॥ सां ॥ १३ ॥

दोहा । ए दासी तिण कारणें । मोह नहीं मन मांय ॥ जाय कहुं हिव रायनें । तात हिये दुःख थाय ॥ १॥ एहवी करी विचारणां । आयो सभा मझार ॥ चित्त दुसनीं नृप आगले । बोले कौन प्रकार ॥ २ ॥

सोरठा। सुण राजन मुझ वाणरे। कुमर भणी सिंह मारीयो॥ कुव्या नही मुझ प्राणरे। कहतां पिण कपि हियो ॥ १ ॥

ढाल २ जी एदेसी।

किणरो सुत केहनों पिता। मह स्वपनारी मायारे एक एकिका जीवस्युं वार अनन्ती पायारे सगपण महा दुःख दायारे। योगेश्वर तूं काई भूल्योरे। ए आकडी ॥१॥ योगी नाम धरायनें कपट जपे जपमालारे तूं कांप्यो किण कारणे। धारी लोभ अगनरी ज्वालारे॥ सुण तूं मोह मतवालारे ॥ यो ॥ २ ॥ योग युक्ति जाणे नही। अध्यात्म विन आयांरे ॥ तूं अलुझ्यो मोह जाल मे। स्युं हुवे राख लगायारे ॥ ज्ञान दशा विन पायारे ॥ यो ॥ ३ ॥ इन्द्रजाल संसार एह। योगी तूं काई राचेरे ॥ मोहजाल तन पहरनें। जीव नटवा जिम नाचेरे ॥ मूर्ख नर माचेरे ॥ यो ॥ ४ ॥ वाप मरी वेटो हुवे। माता मर हुवे नारीरे ॥ इत्यादिक सगपण घणा। कर्म्म तणी गत भारीरे ॥ आगैं मांग अपारीरे ॥ यो ॥ ५ ॥ थो वार अनन्ती पुत्र हुवो। हूं वाप अनन्ती वारोरे ॥ मोह तणैं प्रताप सुं। सह्या दुःख अपारो रे ॥ नरक निगोद मझारोरे ॥ यो ॥ ६ ॥ ज्ञान दर्शण

गुण निरमला । ए सुखदायक म्हांरारे ॥ और वस्तु म्हांरी नहीं । ए तो सर्व निकारारे ॥ दुःख दायक सारारे ॥ यो ॥ ७ ॥ निज स्वभाव भूली रह्यो । मोह वशे मतवालोरे ॥ बुद्ध हीण जीव बापड़ा । पामै दुःख असरालोरे ॥ नरक निगोद विचालोरे ॥ यो ॥ ८ ॥ सोच करे गइ वस्तुनो । महा मूर्ख बालारे ॥ समझाया समझै नहीं । दृढ़ कर्मा ना तालारे ॥ जीव मड़ै जंजालारे ॥ यो ॥ ९ ॥ हर्ष नहीं सम्पत्ति विषै । विपत्ति पड़्यां नहीं विषवादोरे ॥ धीरपणै स्थिर आत्मां । धर्म अमोलख लाधोरे ॥ ज्यांरे सदा समाधोरे ॥ यो ॥ १० ॥ कष्ट पड़्यां कायम रहै । शूरा रहै सम भावैरे ॥ निश्चल मन स्थिर आत्मा । चित्त विमन नहीं थावैरे । ते स्याणां सुख पावैरे ॥ यो ॥ ११ ॥ निन्दा स्तुति सुख दुःख । लाभ अलाभ मझारोरे ॥ सम चित्त जीतव मरणमें । ज्ञान गुणारा भण्डारोरे ॥ पामै शिव सुख सारोरे ॥ यो ॥ १२ ॥ मोह थकी दुःख नरकना । मोह तज्यां सुख सूझैरे ॥ तिण स्युं मोह न कीजिये । योगी तूं कांई अलूझैरे ॥ ज्ञान कांई नहीं बूझैरे ॥ यो ॥ १३ ॥ योगी सुण ईचरज हुवो । करवा लागो विचारोरे ॥ बज्र हियो एहनो सही ।

श्रोत्यो मोह विकारोरे ॥ मोहजीत नाम सारोरे ॥ थो ॥ १४ ॥

दोहा । पिता तणो मोह अल्प हुवे । तिणस्युं धरे न दुःख ॥ जाय कहुं हिवे मातनें । तिण राख्यो निज कूख ॥ १ ॥ एहवो करी वीचारणा । आयो राणी पास ॥ तन कम्पै तरु पान ज्युं । बोले थई उदास ॥२॥

सोरठा । सुण मैया मुझ वाणरे । कुमर भणी सिंह मारियो ॥ छुटा नही मुझ प्राणरे । कहता पिण कंपे हियो ॥१॥

दोहा । वचन सुणी योगी तणा । माता कहे तिण वार ॥ रे योगी सुत सिंह हण्यो । सांभल वचन उदार ॥१॥

ढाल ३ जी

मुनी बलभद्र बसेरे वैराग मैं

रे भोला भ्रम मे क्यों भमै (ए आंकडी) । क्यों तुझ भाखज झठीरे ॥ किणरी माता सुत केहना । ए सहु वातज झूठीरे ॥ रे भोला भ्रम मे क्यो भमै ॥१॥ ज्ञान दर्शण चरण ताहरा । तेतो कोईय न लूंटैरे ॥ निरमल गुण शुद्ध आत्मा । कहो किण विध खूटैरे

॥ रे ॥ २ ॥ सम्पत्ति सहु सुपनां जिसी । थोडी कर रह्या आशारे ॥ दिन थोड़ा में विललावसी । पाणी ना पतासारे ॥ रे ॥ ३ ॥ लाखां मनुष्य भेला हुवे । देश २ नां आईरे ॥ मास तांई भेला रहै पिछा आवे जिण दिश जाईरे ॥ रे ॥ ४ ॥ मनुष्य विछड़िया तेहनो । इचरज मूल न आवेरे ॥ ते मास तांई भेला रह्या । इचरज तेह कुहावेरे ॥ ५ ॥ अनन्ता प्रमाणु भेला थई । कुमर नो शरीर बन्धाणो रे ॥ इतरा वर्ष रह्या एकठा । हिव विछड़िया पिछाणो रे ॥ रे ॥ ६ ॥ पुद्गल विछड़िया तेहना । इचरज नहीं लिगारोरे ॥ एता वर्ष रह्या एकठा । इचरज एह अवधारोरे ॥ रे ॥ ७ ॥ एह बार अनन्तो पुत्र हुवो । हूं बार अनन्ती हुई मातारे ॥ मोह तणें प्रतापस्यु । किया नया नया नातारे ॥ रे ॥ ८ ॥ सगपण सहु संसार ना । सगला झूठा हूं जाणु रे ॥ कारण कर्म बंधण तणो । त्यांरो मोह किम आणु रे ॥ रे ॥ ९ ॥ जो ऊमर भेला हुवे । उन्हाले नर आईरे ॥ तेम सहु आइ मिल्या । खिणमां बीछड़ जाइरे ॥ रे ॥ १० ॥ तरु ऊपर रवि आंथ-म्यां । पंखी हुवे बहु भेलारे ॥ प्रात समय सहु बीछड़ै । तिमहीं सजनां नां मेलारे ॥ ११ ॥ सहु

परिवार छाडी करी । सयम ले सुख पाऊंरे ॥ एहवी निरमल भावना । हूं तो निश दिन भाउंरे ॥ रे १२॥ नरक निगोद दुःख मोह थी । मोह अनरथ लूलोरे ॥ विपति आगर दुःख मोह छै । मोह अग्नि नो पूलोरे ॥ रे ॥ १३ ॥ पामर जीव अजाण ते । मोह तणें वश पड़ियारे ॥ आत्म स्वभाव भूली रह्या । नरक निगोद रड भडियारे ॥ रे ॥ १४ ॥ तिणस्युं कुमर म्हारो नहीं । म्हारा गुण मुक्त पासोरे ॥ कुटम्ब विटम्ब दु.ख दायका । हू तो जाणुं तमासोरे ॥ रे १५ ॥ योगी मन ईचरज हुवो । साभल मातारी वाणीरे ॥ अद्भुत रचना एहनी । मैं तो प्रत्यक्ष जाणीरे ॥ रे ॥ १६ ॥

दोहा । ए माता डाकण जिसी । इणनें सोच न कोय ॥ केतो सुत इणरो नहीं । के हियो कठिन अति होय ॥ १ ॥ कुमर अवंर हो सम्पजे । मातानें युग-माय ॥ जाय कछु हिव नारनें । ते दुःख धरै अथाय ॥ २ ॥ एहवो करी विचारणा । आयो नारी पास ॥ घर घर लाग्यो भूजवा । बोले थई उदास ॥ ३ ॥

सोरठा । साभल वहनी वातरे । तुज वल्लभ मुक्त मठ रहे ॥ सिह झपटे माझातरे । छहता हिवड़ो थर हरे ॥ १ ॥

ढाल ६ थी

आवो २ के करो भैयां बैठो जाजम बिछाय परेली ।

मुझ वल्लभ मुझ मांय विराजे । ज्ञान चरण गुण धीर ॥ अवर सहु स्वपनांरी माया । तूं क्युं हुवो दिल-गीर ॥ तूं क्युं हुवो दिलगीर ॥ योगेश्वर ॥ तूं क्युं हुवो दिलगीर ॥ आत्म स्वरूप ओलख करमोंस्युं ज्युं पामों भव जल तीर ॥ १ ॥ स्थिति अनुसार परिवार सहु जन । मात तात सुत वीर ॥ पिउ तिरिया बहनि भतीजो भाणेजो । कोइय न भांजे भीर ॥ को० यो० को० ॥ आत्म ॥ २ ॥ तूं क्युं योगी घर हर कंप्यो । कीम हुवो दिलगीर ॥ भस्म लगाय भ्रम नहीं भाग्यो । नहीं जाण्यो निज गुण हीर न० यो० न० ॥ आत्म ॥ ३ ॥ मुझ प्रीतम मुझ पास निरन्तर । आत्म स्वभाव अमीर । अयोगी अभोगी अरोगी असोगी । ज्ञान अखंड गुण धीर ॥ ज्ञा० यो० ज्ञा० ॥ आत्म ॥ ४ ॥ अभेदी अवेदी अखेदी अछेदी । चेतन निज गुण हीर ॥ तेह हण्या किणरा न हणीजे । नहीं कोईनो सीर ॥ न० यो० न० ॥ आत्म ॥ ५ ॥ हर्ष शोक तज सज संयम गुण । धर ज्ञान प्रमोद सधीर ॥ संवेग रस आनन्द मन सींच्यां । तूटे कर्म्म जंजीर ॥ तु० यो०

तुं० ॥ आत्म ॥ ६ ॥ ए प्रीतम कर्म बंधवानो कारण । भोग दायक महा भीर ॥ महज़ेद विरोह थया विष पोटली । खुल गई गाठ कठोर ॥ खु० यो० खु० ॥ आत्म ॥ ७ ॥ भोग थकी दुःख नरक निगोदना । अन्त काल महो पीर ॥ तैं भोगदायकनो मोह किम आणु । किम होउं दिलगीर ॥ कि० यो० कि० ॥ आत्म ॥ ८ ॥ आत्मा मित्र एहो सुखदायक । आत्म निज गुण हीर ॥ आत्म अमित्र राग द्वेष तणें वश । चिहुँगत भ्रमण जंजीर ॥ चि० यो० चि० ॥ आत्म ॥ ९ ॥ धन २ जे नर नार वाला पणें । धारे चरण गुण धीर ॥ उपशम रस अवलम्बन करिनें । अजर अमर शिव सीर ॥ अ० यो० अ० ॥ आत्म ॥ १० ॥ ह्रं पिण चरण धार करूं करणी । हर्षे मुझ मन हीर ॥ मोह विलाप करूं किण कारण । साभल तूं मुझ वीर ॥ मा० यो० मा० ॥ आत्म ॥ ११ ॥ तू योगेश्वर धूजण लागो । न आयो ज्ञान सधीर ॥ ज्ञान दर्शण घर छै अति ऊंडो । तूं फासियो मोह जंजीर ॥ तूं० यो० तूं० ॥ आत्म ॥ १२ ॥ योगी सुण मन माय विमासे । अहो अहो वचन अमीर ॥ धन २ सुन्दर अधिक अमोलख । धन २ ज्ञान गम्भीर ॥ ध० यो० ध० ॥ आत्म ॥ १३ ॥

दोहा। योगी सुण हर्ष्यो घणो। मनमें करे वि- चार॥ मोहजीत राजा तणो। निरमोही परिवार ॥ १ ॥ इन्द्र प्रशंसा करी। ते सहु साची जाण। योगी रूप फेरि कियो देव रूप पहिचाण॥ २॥

ढाल ५ मी

धीजकरे सीतासतीरे लाल

कानां कुण्डल झल हले रे लाल। हिवड़े शोभै हारहो॥ राजेश्वर॥ आंगुलियां दश मुद्रिका रे लाल। मस्तक मुकट उदार हो॥ राजेश्वर॥ धन २ करणी तांहरी रे लाल॥ १॥ धन २ तुज परिवार हो॥ रा० देव गुरू धन थांहरा रे लाल। धन तुझ ज्ञान उदारहो राजेश्वर॥ २॥ ध०॥ रत्न तिलक अति झल हले रे लाल। झिग- मिग २ ज्योति हो। रा० कड़ीयां कड़नालो दीपतोरे लाल दशोंदिशि करत उद्योत हो रा०॥ ३॥ एहवो रूप वैक्रे करी रे लाल। लागो राजाजीरे पाय हो॥ रा० मुख सुं गुण गिराम करतो थको रे लाल। बोले एहवो वाय हो॥ रा०॥ ४॥ शक्रेंद्र गुण किया तां हरा रे लाल। मैं सद्ध्या नहीं मन मांय हो॥ रा० हूं आयो छलवा भणी रे लाल। योगी रूप बणाय हो॥

रा० ॥ ५ ॥ गर्जेंद्र गुण किया मुख थकी रे लाल। ते देख लिया इंण वार हो ॥ राजिश्वर ॥ मोहजीत राजा तणो रे लाल। निरमोही परिवार हो ॥ रा० ॥ ६ ॥ आत्म ज्ञान गुणे करी रे लाल। अहो २ अध्यात्म रूप हो ॥ रा० इचरज आवे मन ताहरो रे लाल ॥ समपणो अधिक सरूप हो। रा० ॥ ७ ॥ नृप राणी लिया कुमरनी रे लाल। चोथी दासो जाण हो ॥ रा० मोह हरामी नें जीतीयो रे लाल। इचरज ए असमान हो ॥ रा० ॥ ८ ॥ राय कुमर प्रकट कीयो रे लाल। लाग्यो राजाजीरे पाय हो ॥ रा० सुर बहु मान देई करी रे लाल। आयो जिण दिश जाय हो ॥ रा० ॥ ६ ॥ ए इधकार मोहजीतनो रे लाल। जोडो वाथा तणे अनुसार हो। रा० विरुद्ध वचन आयो हुवे रे लाल। तो मिच्छामी दुकड सार हो ॥ रा० ॥ १० ॥ सम्वत उगणीसे साते समय रे लाल। जेठ सुद बीज रवीवार हो ॥ रा० जोड किधी मोह जीतनी रे लाल। शहर सुजाणगढ मझार हो ॥ रा० ॥ ११ ॥

सम्पूर्ण।

हेमनवरसेकी ढाल ७ मी

ढाल ७ मी वारी रे जाउं ॥ एदेशी ॥ मुनिवररे उपवास बेला बहुला कियारे । तेला चोला तंत सारहो लाल पांच २ नां थोकड़ारे कीधा बहुलो बारहो लाल ॥ हेम ऋषि भजिये सदारे ॥ १ ॥ मु० षट दिन कीधा खंत सूं रे पूरो तपसूं प्यारहो लाल आठ किया उचरङ्ग सूं रे हेम बडा गुणाधारहो ला० ॥ हेम० ॥ २ ॥ मु० रसना त्याग किया ऋषिरे बहुविगै तणो परिहारहो लाल हेम बैरागी देखनेरे पामे अधिको प्यारहो लाल ॥ ३ ॥ सीतकाल बहु सी खम्योरे एक पछेवड़ी परिहारहो लाल घणा वर्षां लग जाणज्योरे हेमगुणांरा भण्डारहो लाल ॥४॥ उभा काउसग्ग आदस्योरे सीतकालमें सोयहो लाल पछेवड़ी छांडी करीरे बहु कष्ट सह्यो अवलोयहो लाल ॥ ५ ॥ सज्झाय करवा खामजीरे तनमन अधिको प्यारहो लाल दिवस रात्रि में हेमनोरे एहिज उद्यम सारहो लाल ॥ ६ ॥ काउ-

मग सुद्रा स्थापनेरे ध्यान सुधारस लीनहो लाल नित्य-प्रति उद्यम अति घणोरे सुक्त स्हामी धुन कीनहो लाल ॥ ७ ॥ स्त्रियादिक ना संगनेरे जाण्या विष फल जेमहो लाल हासकितोहलने हणीरे हिये निर्मला हेमहो लाल ॥ ८ ॥ सीयल धर्यो नववाड सूं रे धुर वाला ब्रह्मचारहो लाल ए तप उत्कृष्टो घणोरे सुरपति प्रणमे सारहो लाल ॥ ९ ॥ उपशम रस माहें रम रह्यारे विविध गुणारी खाणहो लाल एकत कर्म काटण भणीरे सवेग रस गल-ताणहो लाल ॥ १० ॥ खाम गुणागर सागरूर, गिरवो अति गम्भीरहो लाल । उजागर गुण आगलारे मेरू तणी पर धीरहो लाल ॥ ११ ॥ कठीन वचन कहिवा तणोरे, जाणकि लीधो नेमहो लाल । बहुल मणे नहो वागरयोरे बचनाम्रत सूं प्रेमहो लाल ॥ १२ ॥ विविध कठिन वच साभलीरे, ज्यारे मनमे नही तमायहो लाल । तन मन वच मुनि वश कियोरे ए तप अधिक अथायहो लाल ॥ १३ ॥ मु० ॥ चोथे आरे साभल्यारे क्षमा शूरा अरिहन्तहो लाल बिरला पचम काल मेरे हेम सरिषा संतहो लाल ॥ १४ ॥ मु० निरलोभी मुनि निर्मलारे आर्जव निर अहकारहो लाल हलका कम उपधिकारी रे सत्यवच महा सुखकारहो लाल ॥ १५ ॥ मु० संयम मे शूरा घणारे । वर तप त्रिविध प्रकारहो लाल उपधि

अनादिक मुनि भणीरे दिलरो हेम दातारहो लाल ॥१६॥
मु० घोर ब्रह्म मुनि हेमनोरे स्युं कहिये बहु वारहो
लाल अखिल ब्रत उचरङ्ग मुं रे पाल्यो अधिक उदारहो
लाल ॥ १७ ॥ इर्या धुन अति ओपतिरे जाणे चाल्यो
गजराजहो लाल गुण सुरत गमतो घणोरे प्रत्यक्ष भव
दधि पाजहो लाल ॥ १८ ॥ मु० सो सूं उपकार कियो
घणोरे कह्यो कठा लग जायहो लाल निश दिन तुझ
गुण संभरुं रे बस रह्या मो मन मांयहो लाल ॥ १९ ॥
सुपने में सूरत स्वामनीरे पेखत पामें प्रेमहो लाल याद
कियां हियो हुलसेरे कहणो आवे केमहो लाल ॥२०॥
मु० हुंतो विन्दु समान थो रे तुम कियो सिन्धु समानहो
लाल तुम गुण कबहुन बिसरुं रे निश दिन धरुं तुझ
ध्यानहो लाल ॥ २१ ॥ साचा पारश थे सहीरे करदेवो
आप सरिसहो लाल विरह तुमारो दोहिलोरे जाण
रह्या जगदीशहो लाल ॥ २२ ॥ मु० जीत तणी जय थे
करीरे विद्यादिक विस्तारहो लाल निपुण कियो सती
दासनेरे बलि अवर संत अधिकारहो लाल ॥ २३ ॥
स्वाम गुणारा सागरुरे किम कहिये मुख एकहो लाल
इंडी तुझ आलोचनारे वारुं तुझ विवेकहो लाल
॥ २४ ॥ मु० अखंड आचार्य आगन्यारे, ते पाली
एकणधारहो लाल मान मेटे मन बश कियोरे नित्य

कीजे नमस्कारहो लाल ॥ २५ ॥ मु० साझ घणा संता भणीरे. तें दीधो अधिक उदारहो लाल गण वच्छल गण वालहोरे ममरे तीरथ च्यारहो लाल ॥ २६ ॥ मु० मुखदाइ सहु जग भणीरे, कर्म काटण ने शूरहो लाल तन मन रंज्यो आप सूं रे तुं मुझ आशा पूरहो लाल ॥ २७ ॥ मु० हेम ऋषि इण रीतसूंरे लीधो जनम नो लाहहो लाल हेम तणा गुण देखनेरे गुणीजन कहै वाह २ हो लाल ॥ २८ ॥ मु० चर्म चौमासो आमेटमे रे आप कियो उच्छरङ्गहो लाल ध्यान सुधारस ध्याव-तारे मखरी भांत सुरङ्गहो लाल ॥ २९ ॥ मु० सातमी ढाल विषे कह्यारे हेमतणा गुण सारहो लाल हेम गुणा री पोरसोरे याद करे नरनारहो लाल ॥ ३० ॥

अथ श्री सोलह सतीनो स्तवन ।

आदिनाथ आदि जिनवर वंदी, सफल मनोरथ कीजियेए प्रभाते उठि मंगलिक कामे, सोलह सतीना नाम लीजियेए ॥ १ ॥ बालकुमारी जग हितकारी, ब्राह्मी भरतनी बहेनड़ीए ॥ घट घट व्यापक अक्षर रूपे, सोलह सती मांहि जे बडीए ॥ २ ॥ बाहु बल भगिनी सतिय शिरोमणि, सुंदरी नामे ऋषभ सुताए ॥ अंक स्वरूपी त्रिभवन मांहि जेह अनोपम गुण जुताए ॥ ३ ॥ चन्दनबाला बालपणेथी, शीयलवंती शुद्ध श्राविकाए ॥ उड़दना बाकुला बीर प्रतिलाभ्या, केवल लही ब्रत भाविकाए ॥ ४ ॥ उग्रसेन धुआ धारिणी नन्दनी, राजेमती नेम बल्लभाए ॥ जोबन वेशे काम नें जीत्यो, संयम लेइ देव दुल्लभाए ॥ ५ ॥ पंच भरतारी पांडव नारी, द्रुपद तनया वखाणियेए ॥ एकसो आठे चीर पूराणा शीयल महिमा तस जाणियेए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारी निरुपम, कौशल्या कुल चन्द्रिकाए ॥ शीयल सलूणी राम जनेता, पुन्य तणी प्रनालिकाए । ॥ ७ ॥ कोशंबिक ठामे संतानिक नामे, राज्य करे रंग राजीयोए ॥ तस घर घरणी मृगावती सती, सुर भुवने

यश गानीयोए ॥ ८ ॥ सुलसा साची शीयल न काची, राची नही विषया रसीए ॥ मुखड़ुं जोतां पाप पलाये, नाम लेता मन उल्लसीए ॥ ९ ॥ राम रघुवंशी तेहनी कामिनी, जनक सुता सीता सतीए ॥ जग सहु जाणे धीज करता, अनल शीतल थयो शीयलथी ए ॥ १० ॥ काचे तातणे चालणी वांधी, कूवा थकी जल काढीयुं ए ॥ कलङ्क उतारवा सतीय सुभद्रा, चंपा बार उघाडीयुं ए ॥ ११ ॥ सुरनर वंदित शीयल अखंडित शिवा शिव पद गामनीए ॥ जेहने नामे निर्मल थइए, बलिहारी तस नामनी ए ॥ १२ ॥ हस्तीनागपुरे पाडु रायनी, कुन्ता नामे कामिनी ए ॥ पाडव माता दसे दसार नी, बहेन पतिव्रता पद्मिनी ए ॥ १३ ॥ शीयलवती नामे शीलव्रत धारिणी, त्रिविधे तेहने वंदीये ए ॥ नाम जपता पातक जाए, दर्शण दुरित निकदीय ए ॥ १४ ॥ निषधानगरी नलह नरिंदनी, दमयती तस गेहिनी ए ॥ सकट पडता शीयलज राख्युं, त्रिभुवन कीर्ति जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनग अजिता जग जन पूजिता, पुष्पचुला ने प्रभावती ए ॥ विश्व विख्याता कामित दाता, सोलमी सती पद्मावती ए ॥ १६ ॥ वीरे भाखी शास्त्रे साखी, उदय रतन भाखे मुदा ए ॥ वहाणु वाइता जे नर भणशे ते लेशे सुखसंपदा ए ॥ १७ ॥ इति ॥

* दोहा *

महावीर प्रणमी करी, आराधना अधिकार ॥
अन्त्य समय नें जोग्य ए, आखूं तसु दश द्वार ॥ १ ॥
प्रथम आलोयण मन शुद्ध, करवी तज कपटाय ॥
व्रत अतिचार आलोवियां, आतम निरमल थाय ॥ २ ॥
उच्चरवा वली व्रत शुद्ध, उंचे शब्द उचार ॥
अंतकरण हर्ष आण नें, शांति पणों मनधार ॥ ३ ॥
सगला जीव खमावणा, प्रतिकूल जे नर नार ॥
जूजूआ नाम लइ करी, कलुष भाव परिहार ॥ ४ ॥
अष्टादश जे पाप प्रति, वोसिरावे धर प्रीत ॥
चोथो द्वार कह्यो इसो, छांडे सर्व अनीत ॥ ५ ॥
अरिहंत सिद्ध साधु तणो, केवली भाषित धर्म ॥
पडिवजवा ए शरण चिहुं, पञ्चम द्वार सु पर्म ॥ ६ ॥
दुःकृत नो करवी निंदा, छट्ठा द्वार मझार ॥
अशुभ कार्य पोते किया, तसु निंदा दिल धार ॥ ७ ॥

सुकृत नी अनुमोदना, सप्तम द्वार उदार ॥
शुभ करणी पोते करी, तसु अनुमोदन सार ॥ ८ ॥
भावन रूडी भाववी, धर्म शुक्ल वर ध्यान ॥
अष्टम द्वार कह्यो इसो, संवेग रर्म गल तान ॥ ९ ॥
नवमे अणसण आदरै, करै आहार परिहार ॥
अनत मेरु सम भोगव्या, पिणतृप्ति न हुवोलिगार ॥१०॥
दशमै श्री नवकारनो स्मरण सहाय करत ॥
मन वंछित वस्तु मिलै, सुर शिव फल पावंत ॥११॥
इण विध दश द्वारे करी तन मन वशकर सोय ॥
आराधना पद पामियै, निर्भय चित अवलोय ॥१२॥
हिव विस्तार करी कहुं, जूजूआ दशं स्वरूप ॥
प्रथम आलोयण विधप्रवर, साभलज्यो धर चूंप ॥ १३ ॥

ढाल १

(अनित्य भावना भाइ भरतेशर एदेशी)

ज्ञान दर्शण चारित तप वीर्य। पच आचार पिछाणी ॥ अतिचार आलोवे उत्तम मुनि। समता रस घट आणीरा ॥ मुनीश्वर। आलोयणा इम कीजै। समता रस घट पीजै रा। मुनीश्वर। आतम वश कर लीजै ॥ १ ॥ काल विनय आदि आठ प्रकारे। ज्ञान आचार विध कहीजै ॥ तै आठ प्रकार रहित ज्ञान

भणियो तो। मिच्छामि दुक्कडं दीजैरा ॥ मु० ॥ २ ॥ आ० ॥ सूलपाठ अर्थ विरुद्ध काह्यो हुवै ॥ अक्षर हीणा-धिक आख्यो ॥ जोग घोप हीण खोट तणो सहु ॥ मिच्छामि दुक्कडं भाष्योरा ॥ मु० ॥ ३ ॥ आ० ॥ विनय करी नें रहित ज्ञान भणियो। सूत्र अकाले गुणियो ॥ असिझाइमें सझाय करी हुवै। तो मिच्छामि दुक्कडं थुणियोरा ॥ मु० ॥ ४ ॥ आ० ॥ ज्ञानतणी तथा ज्ञान वंतनी। अवज्ञा आशातना कीधी ॥ तेहनो पिण मुझ मिच्छामि दुक्कडं। हिव निंदा तज दीधीरा ॥ मु० ॥ ५ ॥ आ० ॥ ते ज्ञान तणा पंच भेद कह्या छे। त्यांरी करो निषेधणा जाणो ॥ ज्ञान तणो वलि उपहास्य कीधो तो। मिच्छामि दुक्कडं पिछाणोरा ॥ मु० ॥ ६ ॥ आ० ॥ ज्ञान निन्हवियो नें ज्ञान गोपवियो। इम ज्ञानातिचार आलोवे वलि दर्शण ना अतिचार आलोवी ॥ कर्मरूप मल धोवैरा ॥ मु० ॥ ७ ॥ आ० ॥ दर्शण आचार नी शङ्कता प्रमुख। अठगुण सहित कहीजै ॥ ते गुण सम्यक् प्रकारे न धार्‌या तो। मिच्छामि दुक्कडं दीजैरा ॥ मु० ॥ ८ ॥ आ० ॥ सूत्र साधुनें छकाय मांहि। जे काइ शङ्का आणी ॥ तेहनो पिण सहु मिच्छामि दुक्कडं ॥ त्रिविध २ कर जाणोरा ॥ मु० ॥ ९ ॥ आ० ॥ गहन बात काई देखी सिद्धं-

तनौं शङ्का भ्रम मन आणी ॥ तेहनो पिण सहु मिच्छामि दुक्कडं । हिव म्हें सत्य कर जाणीरा ॥ मु० ॥ १० ॥ श्रा० ॥ छकाय जीवा माहे शङ्का राखी । अथवा सिद्ध संसारी ॥ भ्रम जाल पड्यो तुच्छ लेखा-कर । मिच्छामि दुक्कडं विचारीरा ॥ मु० ॥ ११ ॥ श्रा० ॥ आचार्यादिक साध साधवी । गण समुदाय गुणीजे ॥ त्यामे साध पणारी शङ्का राखीतो । मिच्छा-मि दुक्कडं दीजेरा ॥ मु० ॥ १२ ॥ श्रा० ॥ अनन्त गुणो फेर कह्यो चारितमे । पज्यवा हीण वृद्धि देखी ॥ संयसरी मन शङ्का आणी तो । मिच्छामि दुक्कडं विशेषीरा ॥ मु० ॥ १३ ॥ श्रा० ॥ एकम चवद्दश पूनम चद्द मम । मुनि कह्या यति धर्म धारी ॥ त्यामे साध पणा री शङ्का राखी तो । मिच्छामि दुक्कडं उदारीरा ॥ मु० ॥ १४ ॥ श्रा० चौमासी छमामी डंड वाला सुं । कलुष भाव कोई आयो ॥ तेहनो पिण मुझ मिच्छामि दुक्कडं । हिवसे भ्रम मिटायोरा ॥ मु० ॥ ॥ १५ ॥ श्रा० ॥ शील घने चरित सहित मुनि केई । चरित सहित सुशील न कोई ॥ एहवी प्रकृति वालामे सयम नहीं सरध्यो । तो मिच्छामि दुक्कडं होइरा ॥ मु० ॥ १६ ॥ श्रा० ॥ आचार्यादिकना अवगुण बोल्यों । धार्यो ओरारे शंको ॥ तेहनो पिण मुझ

मिच्छामि दुक्कड ॥ हिव म्हैं मेल्यो वंकोरा ॥ मु० ॥
॥ १७ ॥ आ० ॥ देव गुरु धर्म रतन तीनूंसें ।.देश सर्व शङ्क धारी तेहनो पिण मुझ मिच्छामि दुक्कड । हिव म्हैं शङ्क निवारीरा ॥ मु० ॥ १८ ॥ आ० ॥ कंखा ते अन्य मत नी वांछा । तथा पासत्या वुगल ध्यानी ॥ बाह्य क्रिया देखी त्यांरी वंछा किधी तो । मिच्छामि दुक्कड पिछाणीरा ॥ मु० ॥ १९ ॥ आ० ॥ वितिगिंछा ते संदेह फलनो । प्रशंसा पाषंडी नी कीधी ॥ पीत भाव परचो कियो तेहनो । मिच्छामि दुक्कड प्रसिद्धिरा ॥ मु० ॥
॥ २० ॥ आ० ॥ इम दर्शण अतिचार आलोवे । हिव चारित्र अतिचारा ॥ समिति गुप्त सहित व्रत न पाल्या तो । मिच्छामि दुक्कड विचारोरा ॥ मु० ॥२१॥ आ० ॥ इर्य्या समिति पूरी नहीं सोधी । चालंता चिन्तवणा कीधी ॥ अथवा चालंतां वातां करी हुवे । तो मिच्छामि दुक्कड प्रसिद्धिरा ॥ मु० ॥ २२ ॥ आ० ॥ क्रोध मान माया लोभ तणै वश । वचन काढ्यो मुख बारै ॥ हास कितोल करी हुवै किण सूं लो । मिच्छामि दुक्कड म्हारैरा ॥ मु० ॥ २३ ॥ आ० ॥ भय वश बोल्यो नें मुख नो अरिपणो । वलि करी विकथा बिवादो ॥ तेहनो पिण मुझ मिच्छामि दुक्कड हिव मुझ हुइ समाधोरा ॥ मु० ॥ २४ ॥ एषणां न

समिति गवेषणां न करी। शङ्का सहित आहार लीधो ॥ राग द्वेष आख्यो सरस निरस पर । सिच्छामि दुक्कड दीधोरा ॥ मु० २५ ॥ आ० ॥ वस्त्र पात्रादिक लेता मेलता । रूडी रीत न जोयो ॥ अथवा परठता करी अजैणा तो । मिच्छामि दुक्कड होयोरा ॥ मु० ॥ २६ ॥ आ० मन गुप्ति माहे दोष लगायो । अशुद्ध मन वरतायो ॥ तेहनो पिण मुझ मिच्छामि दुक्कड । हिव हूं आनन्द पायोरा ॥ मु० ॥ २७ ॥ आ० ॥ वचन गुप्ति विराधना कीधी । सावद्य वचन उचार्यो ॥ तेहनो पिण मुझ सिच्छामि दुक्कड । हिवे समता रस धार्योरा ॥ मु० २८ ॥ आ० ॥ काय गुप्तिमे करी खडना । काय अशुद्ध वरताई ॥ तेहनो पिण मुझ मिच्छामि दुक्कड । हिव काय गुप्ति सवाइरा ॥ मु० ॥ २९ ॥ आ० ॥ विणजोया विण पूंज्या कायासूं । उठिङ्गणादिक लीधा ॥ पसवाडो फेर्यो पगादि पसार्या । तो मिच्छामि दुक्कड दीधारा ॥ मु० ॥ ३० ॥ आ० ॥ पृथवी अप तेउ वाउ वनस्पति । बेन्द्री चूरणियादिक जाणी ॥ अलसिया नें पूहरादिक हणिया । तो मिच्छामि दुक्कड पिछाणोरा ॥ मु० ॥ ३१ ॥ आ० ॥ तेइन्द्री जू लीख माकण आदि । चौइन्द्री माखी आदि कहीजे ॥ पचेन्द्री जलचरादिक हणियाता ।

मिच्छामि दुक्कडं दीजैरा ॥ मु० ३२ ॥ आ० ॥ सम्मूर्छिम गर्भज प्रमुख मच्छ हणिया। सहस्त गिणी तथा जाणी ॥ प्रमाद बशे तथा शरीरादि कारण। तो मिच्छामि दुक्कडं पिछाणीरा ॥ मु० ॥ ३३ ॥ आ० ॥ क्रोध लोभ भय हास परबश पणै। मूर्ख पणै मृषा-वादो ॥ शङ्काकारी भाषा निश्चय कही हुवे। तो मिच्छामि दुक्कडं समाधीरा ॥ मु० ॥ ३४ ॥ आ० ॥ देव १ गुरु २ साधर्मीनी ३ चोरी। राज ४ गाथापति ५ अदत्तो ॥ आज्ञा लोपी कोई कारज कीधो तो। मिच्छामि दुक्कडं सुदत्तीरा ॥ मु० ॥ ३५ ॥ आ० ॥ आज्ञा विना आहार पाणी वस्त्रादिक। लियो दियो हुवे कोई ॥ आचार्य नी आज्ञा विराधी तो मि-च्छामि दुक्कडं छोडूरा ॥ मु० ॥ ३६ ॥ आ० ॥ आचार्य नी आज्ञा विना दीक्षा दीधी हुवे। विन आज्ञा दीक्षा नो उपदेशो। त्रिविध २ तिण दोष नें निन्दू ॥ मिच्छामि दुक्कडं विशेषोरा ॥ मु० ॥ ३७ ॥ आ० ॥ देव मनुष्य तिर्यंच ना मैथुन। काम स्नेह दृष्टि रागे ॥ मन वचन काया कर सेव्या तो। मिच्छामि दुक्कडं सागैरा ॥ मु० ॥ ३८ ॥ आ० ॥ आल जञ्जाल सुपन स्त्रियादिक ना। हस्त कर्मा-दिक कीधा ॥ हांस रामत ख्याल सर्व लहरनो।

मिच्छामि दुक्कडं दीधा ॥ मु० ॥ ३६ ॥ आ० ॥ सचित्त अचित्त मिश्र द्रव्यनी मूर्छा । वस्त्र पात्र आहार पाणी ॥ मोध गृहस्थ ऊपर ममत भावनो । मिच्छामि दुक्कडं पिछाणीरा ॥ मु० ॥४०॥ आ० ॥ मर्यादा उपरन्त वस्त्रादिक राख्या । तथा शरीर ऊपर मूर्छा आणी ॥ शोभा विभूषा नी लहर आई हुवे तो । मिच्छामि दुक्कडं पिछाणीरा ॥ मु० ॥ ४१ ॥ आ० ॥ रात्री भोजन लागो हुवे कोई । दिन उगा पहिली वस्त लीधी ॥ पाणी औषध आदि मोडो चूकायो तो ॥ मिच्छामि दुक्कडं प्रसिद्धिरा ॥ मु० ॥ ४२ ॥ आ० ॥ दुजा दिन रे अर्थ औषधादिक । अधिक जाच्यो हुवे जाणी ॥ ते ओर घरे मेहली नें भोगवियो तो । मिच्छामि दुक्कडं पिछाणीरा ॥ मु० ॥ ४३ ॥ आ० ॥ इत्यादिक चारित्र विषे । अतिचार निन्दु आत्म साखे ॥ गर्हा करूं देव गुरुनी साखसूं । त्रिविध २ कर दाखेरा ॥ मु० ॥ ४४ ॥ आ० ॥ तप आचार ते बारे प्रकारे । अभिग्रह त्याग अनेको ॥ ते तप विषे अतिचार लाग्यो हुवे । तो मिच्छामि दुक्कडं विशेषोरा ॥ मु० ॥ ४५ ॥ आ० ॥ मोक्ष साधक व्रत पालण विधमें । बल वीर्य गोपवियो ॥ वीर्य आचार विराधना कीधी । तो मिच्छामि दुक्कडं उच्चरियोरा ॥ मु० ॥ ४६ ॥ आ० ॥ वली याद करी २ करे

आलोयगा। नाना मोटा अतिचारा ॥ पाप पंक पखा-लीनें निशल्य हुवे। मुक्ति साहमी दृष्टि धारोरा ॥ मु० ॥ ४७ ॥ आ० ॥ पञ्च समिति तीन गुप्ति विषेकै। पञ्च महाव्रत सांच्यो ॥ अतिचार लागो हुवें कोई। तो मिच्छामि दुक्कड ताच्योरा ॥ मु० ॥ ४८ ॥ आ० ॥ गणपतिनें वा संत सत्यांरा। अथवा गणना कोई ॥ अवर्णवाद बोल्या हुवें तो। मिच्छामि दुक्कड जोईरा ॥ मु० ॥ ४६ ॥ आ० ॥ स्वार्थ अणपूगां गणपति सूं। आण्या कलुष परिणामो ॥ ऊतरतो जो वचन कह्यो हुवै तो। मिच्छामि दुक्कड तामोरा ॥ मु० ॥ ५० ॥ आ० ॥ सम्यक्तिनें चारित्र ना दाता। गणपति महा उपगारी ॥ अणगमतो ज्यो त्यांसु प्रवर्त्यो। तो मिच्छामि दुक्कड विचारीरा ॥ मु० ५१ ॥ आ० ॥ भिक्षु गण श्री जिन शासण म्हें। आस्था तास उतारी ॥ शङ्का कांचा वाली ओररैतो। मिच्छामि दुक्कड विचारीरा ॥ मु० ॥ ५२ ॥ आ० ॥ पाप अठारे जाण अजाणे। सेव्या सेवाया होई ॥ सेवतांनें अनुमोद्या हुवै तो। मिच्छामि दुक्कड जोईरा ॥ मु० ॥ ५३ ॥ आ० ॥ अति-चार मूल उत्तर गुणमें। लाग्यो ते संभारी संभारी ॥ माया रहित आलोई लियै दण्ड। कपट प्रपञ्च निवारी रा ॥ मु० ॥५४॥ आ० ॥ भोला बालक जेम आलोवे।

आचार्यादिक पासा ॥ न्हाय धोयनें निमल हुवे जिम। आतम उज्जल जासोरा ॥ मु० ॥ ५५ ॥ आ० ॥ इह विधि आलोवण करे मुनि। ते उत्तम जीव सधीरा ॥ परभव रो अति चिन्ता जेहने। कर्म काटण वड वीरा रा ॥ मु० ॥ ५६ ॥ आ० ॥ असाता वेदनीनुँ अति भय जसु। नरक निगोद थी डरिया ॥ आतमीक सुखनी अतिवाञ्छा। ते आलोवणा करी तिरियारा ॥ मु० ॥ ५७ ॥ आ० ॥ विना आलोई सूत्रा विराधक। आभिउग सुर होई ॥ सूत्रे आख्यो तेह संभारी। करै आलोवण सोइरा ॥ मु० ॥ ५८ ॥ आ० ॥ आलोवण करी सूत्रा अराधक। अनाभोगिक सुर होई ॥ ए पिण सूत्रनो वचन सभारी। करै आलोवण सोइरा ॥ मु० ॥ ५९ ॥ आ० ॥ आलोया विन उत्कृष्ट भागै। काल अनन्त रूलीजै ॥ नरक निगोदमे झोका खावै। इम जाण आलोवण कीजैरा ॥ मु० ॥ ६० ॥ आ० ॥ जातिवन्त कुलवन्त आलोवे। कह्यो ठाणांग मझारी ॥ ए पिण सूत्रनो वचन संभारी। करै आलोवण सारोरा ॥ मु० ॥ ६१ ॥ आ० ॥ छोटा मोटा दोष आलोवे। पिण लाज शरम नही ल्यावें ॥ उत्तम जीव कहीजें तेहनें देव जिनेंद्र सरावैरा ॥ मु० ॥ ६२ ॥ आ० दश द्वारमे प्रथम द्वार ए। अलावणानो आख्यो ॥ शुद्ध मनसुं

आलोवै तेहना। सुयश सिद्धांते दाख्यारा ॥ मु० ॥ ६३ ॥ आ० ॥

॥ इति प्रथम द्वारम् ॥

---

* दोहा *

प्रथम द्वार आख्यो प्रवर, आलोयण अधिकार।
व्रत उच्चरवानो हिवै, दाखूं दूजो द्वार ॥ १ ॥

॥ ढाल २ ॥

(माथो धोई माल सुमारे। दरपणमें मुख देखैजीरे ॥ ए देशी)

०पूर्वे गणि आज्ञा थी धारया। पंच महाव्रत जाणी जीरे ॥ हिवड़ां पिण सिद्ध अरिहंत गणिनी। शाख करी पच्छिक्खाणीरे ॥ सैणां थइयैजीरे ॥ १ ॥ सर्व प्राणातिपात प्रति पचखूं। त्रस थावरना प्राणोजीरे ॥ मन बचन काय करी हणवाना। जाव जीव पचखाणोरे ॥ सै० ॥ २ ॥ इमज हणावा तणां त्याग मुझ। वलि हणतो हुवे कोईजीरे ॥ ते अनुमोदण तणा त्याग वलि। जाव जीव अवलोईरे ॥ सै० ॥ ३ ॥ मृषावाद

सर्वथा पचखुं । क्राधादिक दिल आणोजीरे ॥ मन वच काय करी मृषा वच । बोलणरा पचखाणोरे ॥ सै० ॥ ४ ॥ इमज बोलावण तणा त्याग मुझ । अनुमोदण ना एमोजीरे ॥ त्रिविध २ वच अलिक तणा इम । जाव जीव लग नेमोरे ॥ सै० ॥ ५ ॥ सर्व अदत्ता दानज पचखूं । अदत्त लेवणरा त्यागोजीरे ॥ आदत्त लेवावण तणा त्याग फुन । द्वितीय करण ए मागोरे ॥ सै० ॥६॥ अदत्त लियै तसु अनुमोदणारा । छै मुझ त्याग सुजाणोजीरे ॥ मन वच काया त्रिविध जोग करी । जाव जीव पचखाणोरे ॥ सै० ॥ ७ ॥ फुन सहु मैथुन प्रति हूं पचखूं । सुर नर तिरि त्रिय फंदोजीरे ॥ मिथुन सेवणरा त्याग अछै मुझ । ए धुर करण प्रबंधोरे ॥ सै० ॥ ८ ॥ मिथुन सेवावण तणा त्याग फुन । अनुमोदणना आमोजीरे ॥ मन वच तनु करी जाव जीव लग । त्याग अछै मुझ तामोरे ॥ सै० ॥ ९ ॥ सर्व परिग्रह प्रति फुन पचखुं । प्रथम करण पहिछाणोजीरे ॥ ममत्व भाव करी परिग्रह प्रतिज । ग्रहिवारा पचखाणोरे ॥ सै० ॥ १० ॥ परिग्रह ग्रहण करावणरा फुन । छै मुझ त्याग-सदीवोजीरे ॥ अनुमोदण ना त्याग इमज त्रिहूं । जोग करी जाव जीवोरे ॥ सै० ॥ ११ ॥ फुन रात्रि भोजन प्रति पचखूं । निशि भोजन

ला नेमोजीरे ॥ तीन करण नें तीन जोग करी । जाव जीव लग एमोरे ॥ सैं० ॥ १२ ॥ पांच महाव्रत पुन व्रत छठो । अंत्य समय अणगारोजीरे ॥ इह विधि उच्चरै सम भावे करि । आणी हर्ष अपारोरे ॥ सैं० ॥ ॥ १३ ॥

॥ इति द्वितीय द्वारम् ॥

॥ दोहा ॥

इम व्रत उच्चरिवा तणो, आख्यो दूजो द्वार ।
तृतीय द्वार कहिये हिव, खमायवूं तज खार ॥ १ ॥

॥ ढाल ३ ॥

(सीता आवैरे धर राग एदेशी)

सप्त लक्ष जे जाति पृथ्वीनी । सप्त लक्ष अपकाय ॥ इत्यादिक चउरासी लक्ष जे । जीवा योनि खमाय ॥ ॥ १ ॥ सुगुणां खमावियै तज खार ॥ एआं० ॥ गण में संत सती गुणवंता । सगलां भणी खमाय ॥ निज आतम प्रति नरम करीनें । मच्छर भाव मिटाय ॥सु०॥ ॥ २ ॥ किणहिक संत सती सुं आया । कलुष भाव जो तांम ॥ कठण वचन तसु कह्या हुवै तो । खारै

लेलि नाम ॥ सु० ॥ ३ ॥ इमहिज श्रावक अनें श्राविका । सगला भणी खमाय ॥ कलुष भाव करि कटु वच आख्या । तो नाम लेइने ताहि ॥ सु० ॥ ४ ॥ द्रव्यलिंगी वा अन्य दर्शणी । खासे सरल पणेह ॥ क्रोधादिक करी कटु वच आख्यातो । नाम लेई पभणेह ॥ सु० ॥ ५ ॥ वडा संतनी करी आशातन । तिह जोगे करी नाम ॥ सर्व खमावे उजल भावे । लेई जूजूआ नाम ॥ सु० ॥ ६ ॥ चिहुं तीर्थ अथवा अन्य जन प्रति । राग द्वेष दिल आण ॥ वचन कह्या हुवे तास खमावुं । इम कहे मुनि सुजाण ॥ सु० ॥ ७ ॥ रेकारा तूंकारा किणने । राग द्वेष वश दीध ॥ तेहथी खमत खामणा म्हारा । एम वदे सुप्रसिद्ध ॥ सुं० ॥ ८ ॥ कठिन शीख दीधी हुवे किण ने लहर वैर मन आण ॥ खमत खामणा म्हारा तेहथी । वदे नरम इम वाण ॥ सु० ॥ ९ ॥ महा उपकारी गणपति भारी । सम्यक् चरण दातार ॥ वारम्वार खमावे त्याने । अविनय कियो किवार ॥ सु० ॥ १० ॥ स्वार्थ अणपूगा गणपतिनां । बोल्या अवर्णवाद ॥ ते पिण वारम्वार खमावे । मेटी मन असमाध ॥ सु० ॥११॥ विनयवन्त गणपतिना त्याथी । अण्या कलुष परिणाम ॥ वारम्वार खमावे तेहने ।

लेई जूजूआ नाम ॥ सु० ॥ १२ ॥ च्यार तीर्थ अथवा अन्य जन थी। मेटी मच्छर भाव ॥ इह विधि खमत खामणा करतो। ते मुनि तरणी न्याव ॥ सु० ॥ १३ ॥ परम नरम इम आतम करवी। धरवो ममता मार ॥ ए विध बारू रीत बताई। तीजा द्वार मझार ॥ सु० ॥ १४ ॥

॥ इति तृतीय द्वारम् ॥

॥ दोहा ॥

खमत खामणानो कह्यो, तीजो द्वार उदार।
हिव अष्टादश अघ प्रतै, वोसिरावै अणगार ॥ १ ॥

॥ ढाल ४ ॥

(नीको सीखडलिरे लहिये एदेशी)

प्राणातिपात प्रथम अघ आख्यो। दूजो मृषा-वाद ॥ अदत्ता दान तीजो अघ कहियै। चोथो मिथुन विषाद ॥ सुगुण पाप पंक परहरियै। पाप पंक पर-हरियै दिलसुं ॥ बोसिरावै अघ भार। इहविधि निज आतम निस्तार ॥ सु० ॥ १ ॥ पञ्चम पाप परिग्रह ममता। क्रोध माया लोभ ॥ दशमो राग एकादशमो पुन। द्वेष करै चित छोभ ॥ सु० ॥ २ ॥ बारमो

कलह अभ्याख्यान तेरम। ते पर शिर आल विषाद ॥ चवदमो पिशुन तिको खाय चुगली। परमो पर परियाद* ॥ सु० ॥ ३ ॥ जेह असंयम में रति पामे। अरति संयम रै माय ॥ रति अरति ए पाप सोलमो। दाख्यो श्री जिनराय ॥ सु० ॥ ४ ॥ सतरमो कपट सहित झूठ बोलै। माया मोसो तेह ॥ मिथ्या दर्शन शल्य पाप अठारम। तेहथी उंधो श्रद्धेह ॥ सु० ॥ ५ ॥ मोक्ष नुं मारग ससर्ग तिहाही। विघ्न भूत कहिवाय । फुन दुर्गति ना कारण छै ॥ ए पाप अठारै ताय ॥ सु० ॥ ६ ॥ ते अष्टादश पाप प्रतै मुनि। वोसिरावै धर खत ॥ संयम तप कर भावित आतम। महा ऋषि मतिवत ॥ सु० ॥ ७ ॥ इह विधि पाप प्रतै वोसिरावो। भावै भावन सार ॥ परभव री चिन्ता तसु पूरी। ए कह्यो चउथो द्वार ॥ सु० ॥ ८ ॥

॥ इति ४ द्वारम् ॥

॥ दोहा ॥

अघ वासिरावा नुं अख्यूं, तूर्य द्वार तत सार ॥
पञ्चम द्वारे पडिवजे, चारू शरणा च्यार ॥ १ ॥

---

* द्वेषमू परना अवर्णवाद बोलै। अनें ममभाव मू छै जिमी वस्तु श्रोलखाय त पर परिवाद पाप नहीं।

॥ ढाल ५ ॥

(जगवांल्हा २ जिनंद पधारिया परदेशी)

चउतीस अतिशय युक्तहो । अष्ट महा प्रति हार्य हो ॥ वर शोभा अति शोभा अशोकादिक तणो । समवशरण शोभे रच्या । ते देव जिनेन्द्र सु आर्य हो ॥ मुझ शरणो मुझ शरणो थावो । अरिहंत नो, सुख कारणं भव तरणं शरण भगवंत नो ॥ १ ॥ च्यार कषाय तजी तिणे । चिहुं दिशी मुख दीसंत हो ॥ तसु अतिशय वर अतिशय श्री जिनराजना । चिहुं विधी धर्म कथा कही । करे चिहुं गति दुःखनो अंत हो ॥ सुझ शरणो २ एहवा अरिहंत नो । सुख कारणं भव तरणं शरण भगवंतनो ॥ २ ॥ दग्ध बीज जिम तरु तणो । अंकुर प्रकट न होयहो ॥ तिम स्वामी तिम० कर्म बीज दग्धहो । भव अंकुर प्रकट हुवे नहीं । तिणसुं अरुहंत कहिये सोयहो ॥ मुझ शरणो २ थावो अरुहंतनो । शिववरणं भव तरण शरण भगवंतनो ॥३॥ अंतरंग अरि जीपवे करि । अरिहंत कहिये तासहो ॥ मुझ शरणो मुझ शरण थावो ते अरिहंत नो । पूजण जोग्य तिण जगतनें ॥ वारु अर्हंत कहिये विमास हो शरणो सुझ शरण थावो ते अर्हंत नो सुखकारणं शिव वरण शरण भगवंतनो ॥ ४ ॥ दुर्लंघ्य संसार समु-

द्रतिरो। जिके शिव सुख पाम्या सारहो ॥ अविनासी २ लही गति पञ्चमी। सुख आतमीक अति ओपता। रह्या आवागमण निवारहो ॥ सुझ शरण सुझ शरण थावो ते सिद्धा तणो। सुख शाश्वत सुख० २ सुर थी अनन्त गुणो ॥५॥ निविड कठिन जे कर्महो। भाजी तप मुद्गर करी तामहो ॥ थई आतम थई० २ शीतली भूतहो। लोक ना अग्र विषे रह्या ॥ अनाबाध खेम शिव ठामहो ॥ सुझ० २ ॥ ६ ॥ वध्या कर्म रूप इंधण प्रते। शुक्ल ध्यान रूप अनलेह हो ॥ दग्ध कीधा २ ते सिद्ध कहीजिय। मल रहित सुवर्ण सरीषहो ॥ जसु आतम निमल अधिकेहहो ॥ सु० ॥ ७ ॥ तिहा जन्म जरा मरण नहो। वलि रोग सोग दुख नाहि हो ॥ इक समय २ लोकांत जई रह्या। बारु अष्ट गुणो करी सहित हो ॥ जसु प्रणमे श्री जिनरायहो ॥ सु० ॥८॥ जे दोष बयालीस रहितहो। लिये भमर तणी पर आहारहो ॥ मतिवंता ॥ म० २ मुनि महिमा निला। सडग्गाला पञ्च दोष परहरी ॥ आहार भोगवे समचित्त धारहो ॥ सुझ शरणो सुझ शरण थाओ ते साधु तणुं। भवतारण भव तरण मतापनु सुख घणुं ॥ ८ ॥ पञ्च इन्द्रिय दमन विषे जिके। अति तत्पर छे ऋषिरायरा। वश कीधो २ दुष्ट रूप मन जिणे। जीत्या कदर्प

ना जे दर्प नें सिद्धान्त नै वच करी तायहो ॥ मुझ ॥ १० ॥ मेरु समां पञ्च महाव्रत तणो । भार वहिवा वृषभ समानहो ॥ पञ्च समिति पञ्च समित करी समिता सदा । पञ्च आचार सु पालता ॥ पञ्चम गति अनुरक्त पिछाणहो ॥ मु० ॥ ११ ॥ छांड्या सर्व संग स्त्रियादिक तणां । ज्यांरे शत्रु नें मित्र समानहो ॥ तृणमणी सम २ सुख दुःख सम वलो । ज्यांरे निन्दा प्रशंसा समानहो ॥ सम मान अनें अपमानहो ॥ मु०॥ १२ ॥ सप्तवीस गुणे अरी शोभता । समता दमता निश दीहहो ॥ शुद्ध किरिया २ मुक्ति पन्थ साधता । डरिया नरक निगोद ना दुःख थकी ॥ मुनि लोपै नहीं जिन लिहहो ॥ मु० ॥ १४ ॥ केवलज्ञानी परूपियो । बारू तेहिज धर्म विचारहो ॥ हितकारी सुखकारी सुगति तेहथी लहै । वलि दुर्गति पड़ता जीवनें ॥ धार राखै ते धर्म उदारहो ॥ मुझ० मुझ शरण जिनाज्ञा धर्मनो । भवतरणं भवतरण बरण शिव शर्मनो ॥ १४ ॥ बीस भेद संवर तणा । वलि निर्जरा ना भेद बारहो ॥ जिन आणा २ जि० विषै ए सर्वही । कर्म रुकै कटै तेहथी ॥ आख्यो तेहिज धर्म उदारहो ॥ मु० ॥ १५ ॥ सूत्र धर्म प्रभु आखियो । वलि चारित्र धर्म उदार हो ॥ हलुकर्मी २ जीव तसु ओलखै । ए दोनूँ ही

जिन आज्ञा मझे ॥ तिणसु धर्म कहीजै मारहो ॥ मु० ॥ १६ ॥ संयमने तप शोभता । वर संजम थी रुकै कर्म हो ॥ तप सेती २ वंध्या अघ निर्जरै । ए दोनूं ई जिन आज्ञा मझै । तिणसु' धर्म कहीजै मर्महो ॥ मु० ॥ १७ ॥

॥ इति पञ्चम द्वारम् ॥

॥ दोहा ॥

इह विधि पञ्चम द्वारसे, शरण पडिवज्जता च्यार ।
दुष्कृत नी निन्दा हुवे, छट्ठा द्वार मझार ॥ १ ॥

॥ ढाल ६ ॥

(सुगु कारण भवियण उदेशी)

भव मांहि भमते । उंधी श्रद्धा धारी ॥ मिथ्या मत सेव्यो । ते निन्दु इह वारी ॥ १ ॥ वले उंधो परूपी । घाली औगरे शंक ॥ सगलां री साखसु' । ते निन्दु तज वंक ॥ २ ॥ कुतीर्थिक सेवा ॥ अथवा तेहना देव ॥ तसु प्रीत प्रशंसा । ते निन्दु स्वयमेव ॥ ३ ॥ गण थी निकलिया । टालो कर गण वार ॥ तसु वंदा पूज्या । ते निन्दु इह वार ॥ ४ ॥ पञ्च आस्रव सेव्या कीधी च्यार कषाय ॥ सहु साखि निन्दु । दुर्गति

हेतु ताय ॥ ५ ॥ वीतराग नो मारग । सैं ढांक्यो किह वार ॥ प्रगट कियो कुमारग । ते निन्दु धर प्यार ॥ ६ ॥ यन्त्र घरटी ऊंखल । मूसल घाणी आदि ॥ कीधा नें कराव्या । ते निन्दु तज व्याधि ॥ ७ ॥ वलि कुटम्ब पोष्या । दियो कुपात्रे दान ॥ सहु साखि निन्दु । पाप हेतु पहिछान ॥ ८ ॥ इत्यादिकदुक्कत । तिहुं जोगे करि कीध ॥ तेहनी करै निन्दा । ए छट्ठो द्वार प्रसिद्ध ।

॥ इति छट्ठा द्वारम् ॥

॥ दोहा ॥

दुक्कत नी निन्दा कही, छट्ठा द्वार मझार ।
हिवे सुक्रत अनुमोद ना, दाखूँ सप्तम द्वार ॥ १ ॥

॥ ढाल ७ ॥

(प्रभवो मनमें थितवै, सीता सति सुत जनमिया एदेशी)

ज्ञान दर्शण चारित्र तप भला । भव दधि मांही जिहाज ॥ सम्यक् प्रकारे सेविया । ते अनुमोदु आज ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध नें आयरिया । उवज्झाया अणगार ॥ तसु नमस्कार वंदना करी । ते अनुमोदु सार ॥ २ ॥ सामायिकादिक जे भला । छउं आवश्यक

सार ॥ उद्यम तेह विषे कियो । अनुमोदुं इहवार ॥ ३ ॥ सूत्र सझाय कीधी वली । ध्यायो वारू ध्यान ॥ जतो धर्म* दश विध धर्यूं । ते अनुमोदुं जान ॥ ४ ॥ पंच समित तीन गुप्ति ही । महाव्रत वलि पञ्च ॥ रूडी रीत आराधिया । ते अनुमोदुं सुमच ॥ ५ ॥ वलि वेयावच† दश विधि करी । साधु श्रावक नो धर्म ॥ आदरायो उपदेश दे । ते अनुमोदुं पर्म ॥ ६ ॥ दान शील तप भावना । म्हें सेव्या धर चित्त ॥ दृढ समकित धरी आसथा । अनुमोदु पवित्त ॥ ७ ॥ शासण एक दिढावियो । गणपति ना गुण ग्राम ॥ अधिक करण धर उचर्या । ते अनुमोदुं तास ॥ ८ ॥ इत्यादिक सुकृत तणी । अनुमोदन सुविचार ॥ मान अहङ्कार तजी करे सप्तम द्वार मझार ।

॥ इति सप्तम द्वारम् ॥

॥ दोहा ॥

सुकृत अनुमोदन कही, सप्तम द्वार मझार ।
अष्टम द्वार विषे हिवें, भावै भावन सार ॥ १ ॥

---

* क्षमा मुक्ति इ दश विधि यती धर्म ।

† आचार्य उपाध्यायादिक स्थवी [illegible] ।

॥ ढाल ८ ॥

(म्हाहजी कठे पौढे किण जागां नोंहरे एदेशी)

पुन्य पाप पूर्व क्रत । सुख दुःख ना कारणरे ॥ पिण अन्य जन नहीं । इम करे विचारणारे ॥ भावे भावना ॥ १ ॥ पूरव कृत अघ जे । भोगाविया मुकाइरे ॥ पिण वेद्यां विनां । नहीं छुटको थाईरे ॥ भा० ॥ २ ॥ जे नरक विषे म्हैं । दुःख सह्यो अनंतोरे ॥ तो ए मनुष्य नो । किञ्चित दुःख हुंतोरे ॥ भा० ॥ ३ ॥ जे समकित बिण म्हैं । चारित नी किरियारे ॥ बार अनंत करी । पिण काजन सरियारे ॥ भा० ॥ ४ ॥ हिव समकित चारित । दोनुं गुण पायोरे ॥ वेदन सम पणे । सह्यां लाभ सवायोरे ॥ भा० ॥ ५ ॥ ओतो अल्प कालमें । तूटे अघ जालोरे ॥ भगवती सूत्रमें । कह्यु परम कृपालोरे ॥ भा० ॥ ६ ॥ सूको तिण पूलो । जिम अग्नि विषे होरे ॥ शीघ्र भस्म हुवे । तिम कर्म दहेहोरे ॥ भा० ॥ ७ ॥ जिम तप्त तवे जल । बिंदु विललावेरे ॥ तिम दुःख समचित्ते सह्या । अघ चय थावेरे ॥ भा० ॥ ८ ॥ दुःख अल्प कालमे । मुनि गजसुकमालोरे ॥ सम भावे करी । लही शिव पट्ट शालोरे ॥ भा० ॥ ९ ॥ अति तीव्र वेदना । बहु वर्ष विचारोरे ॥ सही शिव

संचस्या । चक्री सनतकुमारोरे ॥ भा० ॥ १० ॥ जिन कल्पिक साधु । लिये कष्ट उदीरोरे ॥ तो आव्यां उदय । किम थाय अधीरोरे ॥ भा० ॥ ११ ॥ सह्यो चरम जिनेश्वर । वेदन असरालोरे ॥ सम भावे करी । तोड्या अघ जालोरे ॥ भा० ॥ १२ ॥ कष्ट अल्प कालरो । पके सुर पद ठामोरे ॥ काल असंख्य लगे । दु:ख रो नहीं कामोरे ॥ भा० ॥ १३ ॥ सह्या बार अनंती । दु:ख नर्क निगोदोरे ॥ तो ए वेदना । सहुँ आण प्रमोदोरे ॥ भा० ॥ १४ ॥ रह्यो गर्भावासे । सवा नव मासोरे ॥ तो या वेदना । सहुँ आण हुलासोरे ॥ भा० ॥ १५ ॥ अति रोग पीडाणा । जग दु:ख बहु पावे रे ॥ ते संभरी सहे वेदन सम भावेरे ॥ भा० ॥ १६ ॥ शूली फासो पुन । भालासु भेदेरे ॥ बहु जन जग विषे । अति वेदन वेदेरे ॥ भा० ॥ १७ ॥ ते तो जीव अज्ञानो । हुतो ज्ञान सहितोरे ॥ सम भावे सहुं । वेदन धर प्रीतोरे ॥ भा० ॥ १८ ॥ ए तो सुख नो हेतु । सहिया सम भावेरे ॥ बहु अघ निर्जरे । पुन्य थाट वधावेरे ॥ भा० ॥ १९ ॥ बहु कर्म निर्जरया । थोडा भव माह्योरे ॥ शिव पद संचरे । आवागमन मिटायोरे ॥ भा० ॥ २० ॥ सुर सुखनी वाछा । मन मे नहा कीजेरे ॥ सुख सुरलोक ना । दु:ख हेतु

कहीजेरे ॥ भा० ॥ २१ ॥ सुख आतमीक नी । वांछा मन करतोरे ॥ इह विधि वेदनां । सहै समचित धरतोरे ॥ भा० ॥ २२ ॥ पुद्गल सुख मासला । तिण से गृद्ध थावेरे ॥ तो अघ संचो हुवे । अधिको दुःख पावेरे ॥ भा० ॥ २३ ॥ नर इन्द सुरिन्द ना । काम भोग कंटालारे ॥ तसु वांछा कियां । दुःख परम मयालारे ॥ भा० ॥ २४ ॥ तिणसुं मुनि वेदन सहै । शिवसुख कामीरे ॥ धर्म शुकल भला । ध्यावें चित्त धामीरे ॥ भा० ॥ २५ ॥ वहु कर्म निर्जरा । तिण ऊपर दृष्टिरे ॥ राखै महामुनि । समता अति श्रेष्ठी रे ॥ भा० ॥ ६ ॥ स्वजनादिक ऊपर । छांडे स्नेह पाशारे ॥ अति निर्मल चिते । शिवपुर नी आशारे ॥ भा० ॥ २७ ॥ संग स्त्रियादिक ना । जाणै भुयंग समाणारे ॥ समभावे रहै । मुनिवर महा स्याणारे ॥ भा० ॥ २८ ॥ क्रोधादिक टाली । सम भावन सारो रे ॥ दृढ़ चित्त करि धरै । ए अष्टम द्वारोरे ॥ भा० ॥ २९ ॥

॥ इति अष्टम द्वारम् ॥

॥ दोहा ॥

अष्टम द्वारे भावना, आखी अधिक उदार।
नवमा द्वार विषे हिवे, अणसण नो अधिकार ॥१॥

॥ ढाल ९ ॥

(वैराग्य मन वालियो हिवराणी पद्मावती एदेशी)

अनत मेरु मिश्री भखी। पिण तृप्ति न हुवी लिगार। इम जाणी मुनि आदरे। अणसण अधिक उदार॥ इह विधि अणसण आदरे ॥ १ ॥ ते अणसण द्वी विधि जिन कह्यो। पचम अंग पिछाण॥ पाउवगमन ते प्रथमही। दूजो भत्त पचखाण ॥ २ ॥ इ० ॥ प्रथम नमोत्थुणं गुणे। सिद्ध भणी सुखकार॥ द्वितीय नमोत्थुणं वली। अरिहंत नें धर प्यार ॥ धन्य २ धन्य महा मुनि ॥ ३ ॥ धर्माचार्य ने करै। निर्मल चित्त नमस्कार॥ त्याग करै विहुं आहार ना। जाव जीव लगे सार ॥ ध० ॥ ४ ॥ अवसर देखी ने करै। उदक तणो परिहार॥ तृषा परीसह ऊपनां। अडिग रह्ने अणगार॥ ध० ॥ ५ ॥ धन्नो काकंदी तणो। पाउवगमन पिछाण॥ मास मथारे सुर थयो। सव्वठ सिद्ध महा विमाण ॥ ध० ॥ ६ ॥ पाउवगमन खधक

कियो। मास संथारै सार॥ अच्युत कल्प उपनो। चव लेसी भव पार॥ ध०॥ ७॥ द्रुमहिज मेघ मुनि मणी। आयो मास संथार॥ विजय विमाणे ऊपनो। सनु थई शिव सुखसार॥ ध०॥ ८॥ पांचुं पांडव परवड़ा। मास पारणे न कीध॥ पचख्यो पादवगमनही। मास संथारै सिद्ध॥ ध०॥ ९॥ तीसक मुनिवर नें भलो। मास संथारो न्हाल॥ सामानिक थयो शक्र नो। अष्ट वर्ष चरण पाल॥ ध०॥ १०॥ कुरुदत्त चरण छमास ही। अठम २ तप जाण॥ संथारो अद्धमास नो। पाम्यो कल्प ईशान॥ ध०॥ ११॥ मदन संब महिमा निलो। वली अनिरुद्ध कुमार॥ अधिक हर्ष अणसण करी। पोंहता मोक्ष मझार॥ ध०॥ १२॥ आठुं अग्रमहेषियां। कृष्ण तणी चरण धार॥ अति तप करी अणसण ग्रही। पहुंती मोक्ष मझार॥ ध०॥ १३॥ नंदादिक तेरै वली। नृप श्रेणिक नी नार॥ चरण ग्रही अणसण करी। पामी शिव सुख सार॥ ध०॥ १४॥ इत्यादिक मुनि महा सती। याद करै मन मांय॥ भूख तृषा-दिक पीड़िया। दृढ चित्त अधिक सवाय॥ ध०॥ १५॥ शूर चढे संग्राम में। तिम मुनि अणसण मांय॥ कर्म रिपु हणवा भणी। शूरवीर अधिकाय॥

ध० ॥ १६ ॥ जन्म मरण दुःख थी डर्या । शिव सुख वाछा धार ॥ ते तणसण में बैठा रहै । ए कह्यु नवमु द्वार ॥ ध० ॥ १७ ॥

॥ इति नवम द्वारम् ॥

॥ दोहा ॥

नवम द्वार अणसण कह्यु, हिव कहु दशमो द्वार ।
नमुक्कार परमेष्टी पंच, जपता जय जय कार ॥१॥

॥ ढाल १० ॥

(प्रभु वासुपूज्य भजले प्राणी पड़ेगा)

नाना विधि पाप तणा कामी । जिको मरण तणो अवसर पामी ॥ सुर पणो तेह लहै सारं । इम जाणी जपो श्री नवकारं ॥ १ ॥ जेहनें सखाय पणोज करी । पामे परभव मे सम्पति सखरी ॥ लहै मन वांछित फल सुखकारं ॥ इ० ॥ २ ॥ सुलभ रमणी राज्य लहै । वलि सुलभ देव पणो जग हैं ॥ पिण समकित सहित एह दुलभ सारं ॥ इ० ॥ ३ ॥ जे समकित चरण सहित नवकार धरै । तिको भव दधि गोपद जिम तिरै ॥ वारु शिव सुख नें ए संचकारं ॥ इ० ॥

४ ॥ पञ्च परमेष्टी प्रते समरी । तिको भील तणो भव दूर करी ॥ श्रो तो पञ्चम कल्पे अवतार ॥ इ० ॥ ५ ॥ ते भील नी रतनवती नारी । पञ्च परमेष्टी तिमज हिये धारी ॥ आपिण पञ्चम कल्पे अवतार ॥ इ० ॥ ६ ॥ पन्नग पुष्प नी माल थई । नवकार प्रभावे कीर्त्ति लही ॥ सुख श्रीमती उभय भवे सार ॥ इ० ॥ ७ ॥ अग्नि ठंडी कीधी देवा । कियो कनक सिंघासण ततखेवा ॥ ऊपर अमर कुमर प्रति वेसार ॥ इ० ॥ ८ ॥ नवकार मंत्र सेठ संभलायो । सुण जाप जप्यो तिण सुखदायो ॥ लह्यो सावत सुर नो अवतार ॥ इ० ॥ ९ ॥ बाल बछड़ा चरावतो जिह वार । नदी पूर आयां गुण्यो नवकार ॥ थई ततखिण सरिता दोयडार ॥ इ० ॥ १० ॥ सेठ समुद्र में डूबंतो । नवकार गुण्यो धर चित्त शांतो ॥ सुर जिहाज उठाय म्हेली पार ॥ इ० ॥ ११ ॥ तो चारित्र सहित जिको नाणी । पञ्च परमेष्टी ओलख जपे जाणी ॥ तो स्युं कहियै तसु फल सार ॥ इ० ॥ १२ ॥ शुद्ध एकाग्र चित्त तन मन सेती । पार पुगावै निपजाई खेती ॥ ध्यान सुधारस दिल धार ॥ इ० ॥ १३ ॥ श्रो तो चरण अमोलक कर आयो । पद आराधक जे मुनि पायो ॥ करै सर्व दुखांरो कुट-

कार ॥ द्र० ॥ १४ ॥ मरणांत आराधना इह रीतं । करे दश विधि तन मन धर प्रीतं ॥ ते संसार समुद्र तिरे पारं ॥ द्र० ॥ १५ ॥ संवत उगणीसे वर्ष पणतीसं । रची जोड श्रावण विद छट्ठ दिवसं ॥ पायो शहर बीदासर सुखसार ॥ द्र० ॥ १६ ॥ भिक्षु भारी माल गणि ऋषिरायो । शुद्ध तास प्रसादे सुख पायो ॥ थारु जय जश सम्पति जयकार ॥ द्रम ॥ ७ ॥

॥ इति आराधना री १० ढाल सम्पूर्णम् ॥

श्रीजयाचार्यकृत

॥ ढाल ॥

देश २ ना लोक आपरो स्मरण कर रह्या उरमें ॥ भिक्षु म्हारे प्रगट्याजी भरत क्षेत्र में, ज्यांरो ध्यान धरूं अन्तरमें ॥ भिक्षु० ॥ १ ॥ मंत्राक्षर सम नाम तुमारो, बहु विघ्न मिटे घर घर में ॥ भिक्षु० ॥ २ ॥ जबर उद्योत कियो जशधारी, एह पञ्चम अरमें ॥ भिक्षु० ॥ ३ ॥ आप तणी बुद्धनी प्रशंसा, बहु लोक करत पुर पुरमें ॥ भिक्षु० ॥ ४ ॥ आप तणे गणमें स्थिर पदथी, बसिये वास अमर में ॥ भि० ॥ ५ ॥ आप तणे गण थी उपरांठा, ते उभय भवे दुःख भर में ॥ भि० ॥ ६ ॥ साम्प्रत काल स्वाम गण पायो, जाणे आयो चिन्तामणि कर में ॥ भि० ॥ ७ ॥ आप आचारज महा उपगारी कल्प वृक्ष जिम तरमें ॥ भि० ॥ ८ ॥ दृढ मर्याद बांधी आप बारु सतियां नें मुनिवरमें ॥ भि० ॥ ९ ॥ समत

उगणीसें उगतीस वैशाखि, सुध छठ बीदासर में ॥ भि०
॥ १० ॥ भिचु भारी माल ऋषराय प्रमादथी, जय जय
सुख मन्दिरमे ॥ भि० ॥ ११ ॥

स्वामीजी श्री१०८ श्री मगनलालजी महाराज कृत

कलश

शसांक छाया जश दिगन्तर छावियो गण वृन्दनो ॥
मार तंड मिथ्या तम विडारण महि मानु जिणन्दनो ॥
तप तेग अघ नग तोड़वा मद मोडवा पाखंडनो ॥
सूलचद नन्द आणन्दकारी भर्त जिनमत मंडनो ॥

॥ ढाल ॥

देशी असवारी की।

आम चर्म जिन धीर वीर प्रभु, तसु शासण श्रीकारी ॥
भिचु भव दधि पोत सरिषा, मुक्ति मग दातारीजी ॥
स्वाम थारो जाप जपे नरनारी ॥ अघ अपहरणो गणि
तुझ शरणो नाम लियां निस्तारी ॥ १ ॥ तास परम्पर
अष्टम पाटे कालूगणि गच्छधारी। भरते भान निम्न
हरणसुँ छापर जन्म कोठारीजी ॥ गणिन्द थारी वदन
छवि अति प्यारी। निरख हर्ष चख मयंकारीजी ॥

गणिन्द थारो वदन छवि सुखकारी ॥ २ ॥ बाल्य वय बैराग बधास्यो संजम लक्षी सारी । एकादश वर्ष विच चमाले वरवा शिव सुख नारीजी ॥ ग० ॥ ३ ॥ मघ न्रप हस्त हगाम कुमारे, शुक्ल तीज व्रयधारी । लघु वयमें धीरजता धूरन्धर, ज्ञान ग्रहण हुँसियारीजी ॥ ग० ॥ ४ ॥ समदम गुण गणि डाल विलोकी, पत प्रच्छन प्रकारी । युव पद आपो स्थिर पद स्थापो, करी चातुरता भारीजी ॥ ग० ॥ ५ ॥ समय तालक उद्‌घाटन चाक, शब्द शास्त्र है सारी । तेह उघाड्‌या कोष कंठाभरण, भगमणि करत उजारीजी ॥ ६ ॥ परिषद विच देशन गणि वायत, जिम जग तारजहारी । भाद्रव वार अपार सघन झड़, प्रफूल्लित करत गण बाड़ीजी ॥ ग० ॥ ७ ॥ अष्ट संपदा वपु विच विराजे, श्रोपम षट दश सागी । पुन्य प्रबल प्रतापी अनोपम, गण लुध अथग अथागीजी ॥ ग० ॥ ८ ॥ उगणी से सितर चंदेरी, पूर्ण भाद्र मझारी । गणिपट उत्सव दिन अति निको, बरत्या जयजयकारीजी ॥ ग० ॥ ९ ॥

स्वामी जी श्री १०८ श्री जैचन्दलालजी महाराज कृत

॥ ढाल ॥

(डोलेरे जोवन मदमातीरे गुजरियां एदेशी)

प्यारी लागे आजमानु सूरत सांवरिया २ देखत

दपत मोय शोयजी नैनिया ॥ प्यारी ॥ आंकड़ी ॥ वसु-पट शुभनित. धुरत चोघड़िया। साहश मिजंसनन्द वत छिव वरिया ॥ प्या० ॥ १ ॥ दूलचन्द कुंखि नन्दा, आणन्द की करिया। जननी छोगादे उर मणि अवत-रिया ॥ प्या० ॥ २ ॥ प्रभु आणा शिर धर, करै शुद्ध कीरिया ॥ तरण तारण भव दधिए वजरिया ॥ प्या० ॥३॥ वांचत वयण घन, वर्षंत झड़िया। जाग्रत सारंग उर प्रेम हुंते भरिया ॥ प्या० ॥ ४ ॥ सियावत रटत रसना रघुवरिया। धिनहै दिवस पल सफल ए घड़िया ॥ प्या० ॥ ५ ॥ परसित पद रज कज सुभ्र सरिया। टरत चकवा दुःख देखी दिन करिया ॥ प्या० ॥ ६ ॥ गोपियन तन मन वसत कानडिया। सूरि मुझे दिल तोरे दरश आसिडिया ॥ प्या० ॥ ७ ॥ अधम उधारण कारण छद्म धरिया। दास भणे तारो प्रभु काहै वारो विरिया ॥ प्या० ॥ ८ ॥ भणे रुपि जय-चन्द चरण कमलिया मन मधु चाहत आपो ए रिझ-वरिया ॥ ६ ॥

॥ ढाल ॥

(देशी कव्वाली)

लगे मुज प्राण से प्यारो ।
गनिवर दर्शण थारो ॥
जनु जिनराज कुं भेटे ।
ऐसो दिल हुलसहै म्हारो ॥ १ ॥
भिक्षुके अष्टमे पाटे ।
सूरि कालू है उजियारो ॥
मिथ्या तम दूर करनेको ।
तप्त जिम तेज दिनकारो ॥ २ ॥
मूलचंद जुके है नन्दा ।
रत्न छोगांके उर धारो ॥
भक्त नर इन्द करता है ।
सकल जीवन कुं हितकारो ॥ ३ ॥
विदु षट मतमें है नामी ।
कीर्त सुत सिन्धु सी जाहारो ॥
क्या कहुं क्षाति अरु दान्ति ।
सुजश करते हैं नरनारो ॥ ४ ॥
सभा सुर इन्दसी छाजे ।
वर्षते वान जल धारो ।

गोरकर मोरवत् सुन्ते ।
प्रफूल्लित होत गनक्यारो ॥ ५ ॥
तरन तारन हो तुम देवा
लिये निश्चे में कर धारो ॥
तरु निज हाथके सिंचे ।
दया कर दास कुं तारो ॥ ६ ॥
ऋषि जयचंद कहेता है ।
कृतार्थ जन्म है म्हारो ॥
प्रवल अलि पुन्य से पायो ।
शरण पद कंजके प्यारो ॥ ७ ॥

स्वामी श्री १०८ श्री सोहनलालजी महाराज कृत

॥ ढाल ॥

राग माढ

कालू गण इन्दा छोगाके नंदा, सोहत चन्दा की राज। सोहत चदा जिम सुरिन्दा, गुण गण केरा ममद। आनन्द कंद दिन्द जिणन्द ज्यूं, मेटत भव २ फंद ॥ हो कालू० ॥ ए आकडी ॥ पहि पाटोधर शोभित सूरि, मोहित भविजन वृन्द। चात्रक नो चित्त जिम घन माहिं. तिम हूं रटत गणिन्द ॥ हो कालू० ॥ १ ॥ पूज्य तणा पद पकज जैसा, मधुकर मेरा मन।

ज्ञानामृत वाधार वरसा के, तपत करत मुझ तन ही ॥ कालू ॥ २ ॥ मीन तणो मन जिम सं माहिं, शुक नो मन हरि माहिं । तृषावंत तणो घन मांहि, तिम हूँ रटुँ गणिराय ॥ ३ ॥ बहु श्रुति नी गो शिव उपम, अंग संप्रदा सार । गुण रस लिंस सु श्रेष्ठ विराजे, ज्ञान गुणे भण्डार ॥ ४ ॥ द्यो हय ग्रह शुकराम अब्द में, भाद्रव थर सुखकार । सितराका तिथी पूज्य पटोत्सव, लाडणूं नगर मझार ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

थारीरे आंगण ढोला बाग लगावियोजी राज फूलड़ांरे मीस आवो हो कंवर बाईरा हो ढोला फूलां केरो गजरो गुंथाय (पदेशी)

बसु पाटोधर साहश जिनवर जिम हुण भरतमें हो स्वाम । कालू गणिश्वर सोहेहो मन मोहत स्वामी सुर नर भविजन सहु तणा ॥ गणपति गुणसागर अहो २ नाथ क्षमा घणी ॥ गणिवर तोरी सांवली सौम्य सूरत हद छाजतिहो स्वाम । जेम चकोर चन्दाहो तिमभवि तुझ जोवे हर्षित होवे अतिघणा ॥ ग० ॥ १ ॥ चय चिं श्रेहो स्वामी छोगां कुक्षे अवतर्याहो स्वाम । माता भगिनी साथे हो बिदासर मांही चमालीसे व्रत धर्या ॥ ग० ॥ छांसठे हो पाट विराज्या लाडनूं नयरमेंहो स्वाम । महियस

जश वहु क्रायोहो, जगताधिप स्वामी । गुण मणि रयणे अति भर्या ॥ ग० ॥ २ ॥ वच वरसे हो स्वामी, सघन झडी जलधार ज्यु हो स्वा० । सुण २ भवी मन हर्पेहो चित्त तर्पे पाखंडो तस्कर श्री जिन मग तणा ॥ ग० ॥ अष्टापद पेखो काठीरव जिम विहतोहो स्वा० । पेचक जिम रवि देखी हो तिम गणि तुझ निरखी पाखंडी नाठे घणा ॥ ग० ॥ ३ ॥ शब्दबोध कला गुण चातुरता अति आपरीहो स्वाम । काव्य कोष निर्युक्तिहो वर युक्ति जमावी जिनवर वचन दीपावता ग० लोलुप नरनो मन धन माहे जिम वस रह्यो हो स्वाम । कुंजर जिम वन समरे हो तिम गणिवर तुझने भविजन अहो निश ध्यावता ॥ ग० ४ ॥ चिन्ता चूरण वर चिन्तामणि सुर तरु समोहो स्वाम मन वांछित वर आपेहो काई काम कुम्भ सम काज समारण गुणनीलो ग० चातुरगढ माहे रंग रेला चिहुं तोर्थ मा हो स्वाम । गो मुनि रस गो अट्ठे हो प्रोष्ट शुक्ल पुर्णिमा दिन गणि पट उत्सव भलो ॥ ग० ॥ ५ ॥

स्वामीजी श्री १०८ श्री चौथमलजी महाराज कृत

॥ ढाल ॥

अग कूठारे सारा सांईया देख क्युं ललचाया । माटीमें मिल जायगी एक दिन तेरी कञ्चन काया कायारे काया २ सच वचके चलना पापसे मोह जाल बिछाया (परदेशी)

अब तारोरी नइयां स्वाम मैं शरण तोरे आया ॥ ऐ आंकड़ी ॥ पंचम आरे भरत मझारे भिक्षु भये जिनराया । रायारे राया २ सच मच सब वातां सोधके भ्रम जाल मिटाया ॥ अव० ॥ १ ॥ तास परम्पर अष्टम पट वर लूलनन्द मन भाया । भायारे भाया २ भवि-जनकी आशा पुरवा कल्प वृक्ष कहाया ॥ २ ॥ तारण तरणि अघ दल हरणि वाण सुधा बरसाया । सायारे साया २, सुन सुन जन उरमें धारके बोध बीज लगाया ॥ ३ ॥ पञ्चानन सम पेखी प्राक्रम मृग पाखंड शरमाया । मायारे माया २ शशी हर सम सूरत सोहनी भव्य चकोर लुभाया ॥ ४ ॥ इंदर सुरासुर लोक पाल सहु तुझ दर्शण चित चाया । चायारे चाया २ शिव दाता त्राता जानके जय जय शब्द कराया ॥ ५ ॥ केवल समुद्घात सम कीर्ति फैली दशुं दिशि मांया । मांयारे मांया २ निर्मल जल गङ्गा सारसी लोक तीन रिझाया ॥ ६ ॥ पूरण प्रभुता

सुरपति तुम सम देखी जन हरषाया। षायारे षाया २ निज मुखसे गुन धुन गायके लुल २ शीश लुलाया ॥ ७ ॥ कंचन गिरि सम अचल रहो नित ए शासन गणिराया। गायरे गाया २ दिन दिन जय लक्षी लाडली पूज्य परम गुरु पाया ॥ ८ ॥ रस मुनि अब्द माघ मित सप्तमी सी मोछव दिन आया। आयारे आया २ सरदार शहरमे स्वामका चोथमल गुण गाया ॥ ९ ॥

स्वामीजी श्री १०८ श्री मोहनलालजी महाराज कृत

॥ छन्द शिखरणी ॥

महाराजन कालू सुजन प्रतिपालू पितु सम ॥ स्तुवतिये नित्य हरति जव तेषा दुःखतम ॥ महान् प्राज्ञो नित्यं निगम जन मध्ये जयकृत गणेंद्रस्ते नाम रटती मुनि गागेय सतत ॥

॥ ढाल ॥

जाडारी मारी ना मरू ढोला जा० २ मरु रे अमल

(विप धाय पदेशी)

अहि पट पे पट ओपता गणि कालू गण सिणगार। च्यार तीरथ रो साहिबो वर ज्ञान ध्यान दातारजी ॥ गणनायक गणपति थापरी मुझ शरणो वारंवार ॥१॥ मूल शशि सुत लाडलो सती छोगां उर अवतार। चित

चातुरता आगले लियो बाल्य वय व्रत धार ॥ २ ॥ चरण ग्रही उद्यम कियो बहु आगम लोध विचार । डाल्ल गणपद आपियो थारु जोग्य जाणी श्रीकार ॥३॥ समवसरण रचना भली वच बरसत ज्यूं जलधार । पाखंडी तरसें घणा परफुल्लत गण वनक्यार ॥ ४ ॥ हरि सम प्रभुता आपरो वर हरि सम तेज अपार । हरि सम प्राक्रम तांहरो फुन हरि सम निर्मल धार ॥ ५ ॥ सारङ्ग सम तव सौम्यता सारङ्ग सम मुख द्युति सार । सारङ्ग सम चित्त आपरो सारङ्ग सम शब्द गुञ्जार ॥६॥ आप गुणांरा सागरु सुर गुरु नहीं पामे पार । मुज मति बिंदु जेतली प्रभु किम करूं विस्तार ॥ ७ ॥ बेकर जोड़ी आपसूं इक अरज करू इणवार शिव रमणी पर-णावियै प्रभु आपरा विड़द विचार ॥ ८ ॥ हवि मुनि हायन मृगशिरे सित नोवमी दिन रविवार सोवन गणि गुण गाविया पदमावती शहर मझार ॥ ९ ॥

॥ कलश ॥

दिनकार ज्यूं इण आरमें गणिराज भिक्षु प्रगट्या । तम मेट जिन वच प्रगटकर शिर धस्या जे पूर्वे दख्या । तसु नाग पाट दयाल दीपत स्वाम कालू गणिवरु करजोड़ कंचन बिनवे शिव रमण आपो इश्वरु ॥१॥

॥ ढाल ॥

पचम पट भिक्षु गण भानुह मिथ्या ध्वात मिटानुरे ॥ एदेशी

श्रीजिन तीर्थ प्रगव्या स्वामीहे। भिक्षु वड नामीहे देश मरुधर मे शहर कटाल्यो मारोहे॥ तात वलु सोहे गुण धामीहे। माता दीपा अमामीहे ताम कुखे गणपति लियो अवतारोहे॥ वाल्य वय वैराग्य वधार्योहे। अष्टादश आठे सुखकारोहे। द्रव्य चरण रघू हाथे धार्योहे। समय सोध तिवारोहे स्वाम दिलमे तव किधो एम विचारोहे ॥ १ ॥ यामे सम्यक्त न दिसे लिगारोहे नही चरण उदारोहे जाणो इम गुरुने कहे स्वामी तिह वारोहे ॥ आपा रोव्या साक्र संयम न धार्योहे । मन सोच विचारोहे॥ सूधो मारग वर स्व पर काज समारोहे। एम सुणी गुरु बोल्या तिवारोहे । इह अवसर के पाचमो आरोहे । पूरो पले नही जिन धर्म मारोहे। इम जाणी उर धारोहे देशथकी संयम पलसी ते उदारोहे ॥ २ ॥ वचन सुणी गुरुना तिण वारोहे। अष्टादश सोले सारोहे। तेरे सता सं लियो भाव चरण श्रीकारोहे॥ सावद्य निर्वद्य सोध तिवारोहे । व्रताव्रत सारोहे । आज्ञा अण आज्ञा दया दान दाख्या उदारोरे ॥ विविध मर्याद वाधी गणि मारोहे । चिहुं तीरथ मे मर्याद कारोहे ॥ अष्टादश साठे सिरियारोहे । अणसण करने उदारोहे स्वर्ग सिधाया

थावो तुम जय २ कारोंहे ॥ ३ ॥ तसु पट अनुक्रम अष्टम सोहेहे । भविजन मन मोहेहे कालु गण ईश उजागर गुण मणि जेहवाहे । सादृश जिनवर जिम गणि सोहेहे ॥ मिथ्या तिमर विगोवेहे भव्य कमल विकसावन दिनकर तेहवा हे ॥ भू हय रस मही अब्द उदारोहे । भाद्रवा शुक्ल त्रयोदशी सारोहे । चर्म महोत्सव भिक्षुनो श्रीकारोहे । गुण गाया अपारोहे हर्ष सहित गणाधिप शिष्य तिहारोहे ॥ ४ ॥

॥ कवित ॥

इन्द्रको सभासी मानुं, चन्द्रकी प्रभासी जानुं । कांजसी विकासी वासी । ज्ञानहुंके बागमें । संतसती बिचबैठ दीपत गणेश गादी, जैसे मृगराज आजबैठो ब्रज बाघ में । कोउ छंद कवित कहत कोउ गद्य पद्य, कोउ गुन करत अनेक विध रागमें । सोहन कहत एसी सभाके विलोकवेको, छांडके निषंध सूर आयो मध्य भागमें ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

निश दिन जोऊं तुमनी वाट प्रीतम आवे माभल रात सारन वारन
हो पिया तुम जावना नहीं हो सिरदार चंदा छोर अलि
मावना मही ॥ एदेशी ॥

आद जिनन्द दिनन्द ज्यूं धार, प्रगटे भिक्षु पंचम आर। सीमां सेतु हो बहु विध बाध तो दई॥ सोम्हागा स्वाम तोरी सूरतनी छवि, मोहनी सही २। मोहनी मही। सोम्हागा० ॥ २ ॥ दान दयादिक भेद दिखाय मावद्य निर्वद्य दिये बताय। तास प्रशादेहो बहुजन उधर्या मही ॥ २ ॥ एक वे तीन आदि अवधार धूर्त थई निकलि गण बार। ते निंदक भागल हो चिहुं विधसंघमे नहीं ॥३॥ इत्यादिक बहु लिखत मर्याद, बाधी माठे अणसण साध। ज्ञान उजागर हो गणाधिप स्वर्ग श्रीलही ॥ ४ ॥ तास परम्पर अष्टम भाल, गाजत कालू गणिगुण माल। टाटत काटत होरिपु अघ भूंड उमही ॥ ५ ॥ आनन माभ वमत अनग। हृदय निर्मल गग तरङ्ग। कर पावय विचहो लछो लहराय तो रही ॥६॥ धीर धरापर ज्यूं अवतंस, पेख प्रणाम करे सुर वंस। लोक सिंहु विचहो गणि तव प्राज्ञता छइ ॥ ७ ॥ गारकनी सुभ पर्व गुजार, सीवन आयो गरण तिहार। विडद विचारीहो प्रभु अब तार तारही ॥ ८ ॥ दायन

राम गिरिसु विचार मास तपा सित सप्तमी सार मेरा
सहात्मव हो चन्देरी नयर्के सही ॥ ८ ॥

गुलाबचन्दजी लुणिया कृत

॥ ढाल ॥

॥ राग आसावरी ॥

स्वाम जयपुर चौमास करावो । अब हुकम जलदी फुरमावो ॥ स्वा० ॥ ए आंकड़ी ॥ बहु बर्षों से अरज हमारी, ता पै हुकम चढावो । नूतन अर्ज अन्य सुन २ के, मत पूरातन विसरावो ॥ स्वा० ॥ १ ॥ अवसर देख फर्शना कहीनें, इम किम नित ललचावो । चेत न आवे इत फर्शावन, आपही महर करावो ॥२॥ आवत आवत आवे बारी, क्युं टाबर बहलावो । अल्प बुद्धि हम बेंत न जानें, आपही बेंत बतावो ॥ ३ ॥ अपनूं सोंच्यो जान कृपानिधि, जलदी सार करावो । रढ नहीं छोडें अपर न मानें । मानी मुझ बकसावो ॥ ४ ॥ कर जोड़ी कहै गुलाबचन्द मुझ, अविनय माफ करावो । जयपुरको चौमासो अबके, श्री मुख हुकम दिरावो ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

बाद २ धुर खुली है गोरे तनपर काली घुन्दडी वाह २ सीताके खोलेमें हनुमन्त न्हाखी मुन्दडी (परदेशी)

मनडो लाग्योहो अन्नदाता आपरै नाम सें जी। कृपा कर मुज ने ले चालो शिवपुर धाममें जी ॥ मेंतो अरज करु शिर नामी। अबतो ग्रहण करो तुम स्वामी। ढील न किजे अन्तरयामी ॥ ए आंकडी ॥ श्रीभिखु दसु पाटे ओपताजी। ए तो गणिवर गुणनिधि कालु। निशदिन रम काया प्रतिपालु. दीन उद्धारण परम दयालु ॥ मन १ ॥ जननी छोगा कुक्षे जनमियाजी। वन्ना कूल गयाँ सुत निको, थारु चोठारो कुल टीको, शहर सबर छापुरगढ तीरो ॥ २ ॥ लघुवय माता साथे संजम लियोजी। उदाम ज्ञान ध्यान वर कीधो, थारु समय थाच रम लीधो, डालगणि स्वत्र गणपद दीधो ॥ म० ३ ॥ वरपत वाणी सघन सुहामणीजी। बहु विध भवयछिरा सुखकरणी. थातो पाप पंक परहरणी, थित धर सुनत ताम दु:ख टरणी ॥ ४ ॥ कीर्ति थेनी फैली दशों दिशाजी, गएण पुरिन्दर निज वधु स्यूं म्हुं, हैं फर्क मम पति पे थाम सर्दली, तिहां थापा रमस्या दिशुं गेस्यो ॥ ५ ॥ कीर्ति थांनी सुंणी भोलो पुरंदरीए, मैं तो तुम साथे नहीं थायुं, थको निम

सुमति संग सुख पावुं, गणपति कांड किहां नहीं जावुं ॥६॥ सुण इन्द्राणी वदन कुमलावणीजी, आवी पतिने एम प्रकाशे तेतो नहीं आवे तुम पासे, इम सुण हरि थयो अधिक उदासे ॥७॥ प्रभुता इन्द्र तणी पर आपरीजी, शीतलता शशिहर सम जानी, कंठ रजत सारद सुखदानी, पाणी विच कमला लहरानी ॥ ८ ॥ निशदिन वंछा तुम दरशण तणीजी, लाग रही मुझ तनमन मांयो, दिवस गिणत हिवे दरशन पायो, आजतो हूं वड बखत कहायो ॥ ९ ॥ तुम गुण सिंधु मुझ मति विंदुवोजी। मैं तो पार कदे नहीं पाऊं, पिण निज मननो हूंस पूराऊं, किंचित गुणकरी तोय रिझाऊं ॥ १० ॥ युग मुनि वत्सर सुचि कृष्ण अष्टमीजी। आयो सोहन शरण तिहारी, मस्तक कर धर द्यो रिझवारी, प्रभु अपनो विरुद विचारी ॥११॥

स्वामीजी श्री १०८ श्री आनन्दरामजी महाराज कृत

॥ ढाल ॥

सोहीरे सयाणा अवसर साधे० ॥ एदेशी ॥

भिक्षु पट अष्टम गछराजा। कालू गणिन्दना अधिक दिवाजा ॥ दिन २ अधिकी संपदा पाई द्वितीय जिणंद जिम बधत सवाई ॥ जायज्योरे पुन्य प्रबल

भग दन्दा । शीतल सरदरि पुनम चन्दा ॥ १ ॥ प्रबल तेज प्रताप विख्याता । पेख पाखडी पामे साता । कीरत परिमल महियल देखी । मागधाम्यां री उडगई शेखी ॥ २ ॥ मेरु जिम धीरजता धारी । सायर जिम गम्भीरता भारी । देव तरु सम आशा पूरण । चिन्ता-मणि जिम चिन्ता चूरण ॥ ३ ॥ पञ्चानन जिम प्राक्रम धारी । च्यार तीर्थ ने वछल कारी ॥ वाणि सुधा सम घन वरसदा । मशय मेटण आज जिनन्दा ॥४॥ उभय वर्षनी मुझ अतराया । आज चदेरी मे दर्शण पाया ॥ आणद अर्ज करि कर जोड़ो । आयो वुढापो शक्ति थोडी ॥५॥ उगणीसे तीहोतर वरसे । पोस कृष्ण षष्टी दिन मरमे ॥ अरज सुनो मुझनी गणि राजा चरणामे राखो गरीब निवाजा ।

अथ चवदे स्थानक की

॥ ढाल ॥

एक दिवस लंकापति क्रिडानी उपनो गति (एदेशी)

चवदे स्थानक रा जीवए, त्यामे दुःख कह्या अतीवए । तिणरोए तिणरो विवरा जिव साभलोए ॥ १ ॥ वडी नीत उच्चारए पासवण एम विचार ए । वे घडी ए वे घड़ी पछे जीव उपजेंए ॥ २ ॥ यान्तस भय कारी

रातरो, भेलो करी राखें मातरो इण वातरो निर्णय हिव तुम सांभलोए ॥ ३ ॥ खसखस दाणा एवड़ा, जंबू द्विपे जीवड़ा एवड़ा असन्नीया मुवा घणाए ॥ ४ ॥ स्त्रि पुरुष संयोग में, मृतक जीव विजोगमें। इण जोगमें नयर अशुचि नाला भर्याए ॥ ५ ॥ इम हिज खेल में जाणज्यो, नाक रो मेल पिछाणज्यो। वस-णज ए वमणज पित दोन्यूं कह्याए ॥ ६ ॥ इम हिज लोही राधमें, शुक्र तणी मर्यादमें। सूका ए सूका पुद्गल नीला हुवेए ॥ ७ ॥ सर्व अशुचि ठामए, चवदे स्थानक रा नाम ए। जतनज ए जतनज कोई विरला करेए ॥ ८ ॥ ज्ञानी पुरुषां देख्याए, ज्यां आप सरीखा लेख्याए। जाणज ए जाण पुरुष जयणा करेए ॥ ९ ॥ न्हाना घणा अथागए, आंगुलरे असंख्यातमें भागए। गिराजजए गिराज आवे ज्ञानी तणेए ॥ १० ॥

॥ ढाल ॥

गाफिल तू सोच मनमें हरिनाम क्यों विसारा ॥ पदेशी ॥

श्री पूज्य यह विनय है, फिर शीघ्र दर्श देना।
करके कृपा हमारी, जल्दी तलाश लेना ॥ए आंकड़ी॥

दिन वीसही कराके, कीन्हा विहार साहिब। अब आपके विना तो, हम चित्तही लगैना ॥ श्री० ॥ १ ॥ हम ज्ञान नित्य सुनते, सेवा तुम्हारी करते। प्रभु आपके दर्श विन, दिल धैर्य तो धरैना ॥ २ ॥ प्रभु ग्राम २ जाके, उपकार तो कराके,। फिर यहां भी शीघ्र आके, हमको सभाल लेना ॥ ३ ॥ तुम ध्यान हम धरेंगे, तुम जाप हम करेंगे। निज व्याधिको हरेंगे देखेंगे, मार्ग नैना ॥ ४ ॥ विनती ये गौर करके, सबकी हृदयमें धरके। जल्दी ही आयेंगे हम, मुखसे यह वाक्य कहना ॥ ५ ॥

यति हुलासचन्दजी कृत

॥ ढाल ॥

गूजरी देन लगी ताना० ॥ पदेशी ॥

मै नमुं जोडकर हाथ गणेश्वरनाथ अर्ज सुन म्हारी, महाराज अर्ज सुन म्हारी, मैं कायको भट क्यो फिरुं भमण भव भारी। नर जन्म अल्यारत जावे, जिनराज धर्म नही पावे। नरकादिक दुःख सहावे, तिहा पडो जीव पिछतावे। परवश पड़ो मार सहै घन

पार पार, परमाधामी देव आय खाय तन फार २, छेदन भेदन करे अग्नि मांय जार २, करमें कृपाण धार देवी करे छीन २, भोगवे अशुभ भल परभव कीन २, रोवे अरड़ाट कर बोले मुख दीन २, आज पिछे एसो फिर पाप न कमाऊंगो, मन नहीं जाणयो मैंतो एसो दुःख पाऊंगो, हंस २ बांध कर्म रोयां न छुटाऊंगो, कुगुरुके फंद मांय फेर न फसाऊंगो। अजीहो स्वाम मैं शर्णा-गत थारी तुम सुणो कृपानिधि स्वामी २ गणि ॥ १ ॥ अस सहे दुःख अनपार भ्रमत संसार चिहुं गतिमांही। पिण सुगुरु तणा संयोग लह्यो कित नांही ॥ पूर्व सुकृत नर भव पायो; तुम चर्णा शरण गहायो। जिन धर्म्म अमोलख आयो, मुझ हाथ सुगुरु सुपसायो। पुन्यजोगे गणि कालू लिया गुरु धार २, नमन करत जाकुं मुनि वृज बार २, दुरित दोषण सहु पूज्य दिये टार २, आदि पाट भिक्षु स्वाम कियो धर्म्म पीन २, दान दया धार सब ओलखाय दीन २, योग अरु कर्ण रु'धे त्यांकी संख्या तीन २, सूत्रओ सिधान्त न्याय शुद्ध ज्युं बतायो है, पंचमें दुषम आरे जिनसो दीपायोहै, आदिको करैयो जिन आदिसो कहायोहै, तास पाट भारीमाल भव्य मन भायोहै ॥ अजि हो स्वाम की मैं जावुं बलि-हारी तुम सुणो तीर्थ पति स्वामी। स्वा० तु० ॥ २ ॥

तृतीय पाट ऋषिराय भजो मन भाय भविक सुखकारी। सहा० गणि जीत बडे सुवनीत तूर्य पट धारी। पञ्चम पट मघवा राजे गणि माणक ऋतुपट छाजे। सप्तम पट डाल विराजे, अष्टम कालू पट जाजे। सूरि पट तीस गुणयुत गणि राज २, परिसह वावीस सहे मुनि शिर ताज २, चरण कमल नम्या सरे सब काज २, विषय तेवीस एसौ इन्द्रया किधी वश २ मति श्रुति काय विधि ज्याका भेद रस २, पालत सयम पद्य देह लीनो कस २, आज जग एसो कोइ और न लखावेहै, मिथ्यामत अधकार तुर्त न्हसावैहै, सब जीव अभयद काहु न सतावेहै, पञ्च मेरु सम भार व्रत नो उठावेहै। सर्जोहो कीर्ति कहु किछा लग विस्तारी। तुम सुणो गणाधिप स्वामी॥ ३ ॥ अब शश ग्रह की लाज राख भव पाज घणो जग त्राता। सहा० तुम हूलनन्द सुख कंद छोगा उर जाता। मरुस्थल धर जन्म तुम्हारो, वर छापर शहर मझारो। कोठारी गोत्र उदारो, बड साजन बहु विस्तारो। संयम लियोहे शुद्ध मघवा कि कर २, निर्दोषित तेह पाले शाति दान्ति धर २, उदारत बहु भवियजन पद वर २, वाण वर्षात सुधा धार सम-चीन २, भव्य श्रुति सुक्ति मुक्ता धर चित्त लीन २, चन्द्र ज्यूं चकोर चाहे ध्यावे जल मीन २, एसा गणि ध्यान

गेरो यह भांति त्यागिहैं, तातें अपनों कृष्ण पद लिये
पधारैं, याको मुकुन्द सदा मैं ध्यान धरैं, तातें श्री
पुरुषोत्तमदास कृपा करि भाखें हैं ऐसें। तिनकी कृपा पाई
रहांये। इति श्री। वार्तानिधि वार्ता ॥ ४ ॥

अथ श्रीकृष्ण वलभद्रजी री चौपाई

* दोहा *

श्रीनेम जिणन्द समोसर्या, द्वारिका नग्र मझार। राणी सघनैं कृष्णजी, पूछ्या प्रश्न विचार ॥ १ ॥ भगवान ए द्वारिका, लाम्बी योजन बार। नव योजन पहली अछै, देवलोक जिम सुखकार ॥ २ ॥ सुवर्ण कोट रत्न कांगरा, अति शोभे आकाश। तेहनो पिण किण योग स्युं, होसी के विणाश ॥ ३ ॥

॥ ढाल १ ॥

चन्द्रायणरी देशी।

जिण भाखे सुण कृष्ण फेर इणमे नहीं। सुरगो द्विपायण हूँत विणाश होसी सही ॥ १ ॥ चिन्तवे कृष्ण मुरार धिक ए संसारने। मो वेठा ए वात हुसी इण कारने ॥ २ ॥ स्युं मे लाधा सुख, सहु विललावसी। जिम दीपकरी जोत होय बुझ जावसी ॥ ३ ॥ ते धन्य जाल मयाल, प्रभव दुःख स्युं डर्या। पाजन सम्भु कुमार ऋद्ध तज निसर्या ॥ ४ ॥ संयम ले हुवा शूर।

मनोर्थ त्यांरा फल्या। हूंतो अधम अपुन्य। काम कादै कल्यो ॥५॥ दीक्षा लीधी न जाय। मोह फन्द में फस्यो। भांजै सहु जिण भ्रान्ति। जिको मनमें बस्यो ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

हुइ न होसो जिण कहै, वासुदेव दीक्षा लीध। सगला बासुदेव ऊपजै, पूर्ब निहाणो कीध ॥ १ ॥ कृष्ण कहै हूं काल करी, किहां जास्यु हो स्वाम। नेम कहै द्वारिका जल्यां, निकलस्यो दोय ताम ॥ २ ॥ पांडु मथुरा जावतां, बाग कशुंम्बी तेथ। बड़ हेठै पुढ़वी शिला, तुम सुवेला जेथ ॥ ३ ॥ जरा कुमर भाई बडो, आसी तिहां अयाण। बामें पग बाणे करी, हणसी तुमना प्राण ॥ ४ ॥ तिजी पातालमें पहोंचस्यो, सुण सोचै गोबिन्द। नेम कहै सोचो मती थे होस्यो जिण चन्द ॥ ५ ॥ एहिज भरत षन्ड देशमें। सेंद्वारा नग्र प्रसिद्ध। अमम तीर्थं कर बरमों। थे थई होस्यो सिद्ध ॥ ६ ॥

॥ ढाल २ ॥

धर्म करो श्रावक तणों (एदेसी)

बचन सुणी हर हरषिय। हुओ सन्तोष हुलासजी एतो स्वामीजी भांझली। मौनें पूर्व बीती बातजी।

वार अनन्ती हूं गयो ॥ १ ॥ आणन्द अङ्ग मावै नही। वारै काढ्यो छै जोमोजी। अस्पा[illegible]
धुजावे भोमीजी ॥ कृष्णजी हर्ष पास्या [illegible]
फाल तिहा कुदिया। गाज्या कार सिंह नादोजी। नेम वाटी घर आयनें। कृष्ण बाधै मर्य्यादोजी ॥ कृष्ण ॥३॥
दारु मास मत भोगवो। दीधो पडहो फिरायोजी। आग-लो सर्व उजाडमे। तुरत दियो ढुलायोजी ॥ पड़हो फेरायो कृष्णजी ॥ ४ ॥ दाहा होसी द्वारिका तणो। दारु तणें प्रसङ्गोजी। मोक्ष तणा सुख साश्वता। विजो सर्व काचो रङ्गोजी ॥ पडहो ॥ ५ ॥ करावे उद्घोषणा। द्वारिका नग्री मायोजी। भवि जीवा विशेष थी। कीज्यो धर्म उच्छाणेजी ॥ पड़हो ॥६॥ जो चारित्र लेवा मतो। तो लेज्यो इणवारोजी। कहे माधव मुख स्युं इसो। मकरो ढील लिगारोजी ॥ पडहो ॥ ७ ॥ पाछल सहु परिवारनी। हूं करस्युं सभालाजी। खरची खाणो पूरस्युं। इम बोल्या गोपालोजी ॥ पडहो ॥ ८ ॥ वचन सुणी श्रीकृष्णना। चारित्र लियो अनेकोजी। जाणपणो छो जेह मे। मन मे आणो विवेकोजी। वैरागे मन आणीयो ॥ ९ ॥ नेम तणी वाणी सुणी। जाग्यो थयिर समारोजी। नर नारी घणां हर्षस्युं। लीधो सयम भारोजी ॥वै० ॥१०॥ पटराणी श्रीकृष्णरी। पोमा गोरी

गंधारीजी । लक्ष्मणां सुषमा जम्बुवती। सत्यभामा रुक्म-
णी नारीजी ॥ वै० ॥ ११ ॥ आठे अग्र महेषियां । पुत्र
वधु बले दीयोजी । दीक्षा लीधी तिण समै । मोह न
आणो कीयोजी ॥ वै० ॥ १२ ॥ चित्तमें चिन्तवे ध्रक
मुजे । जरा कुमर इण भ्रातोजी। हर यादव नो पाट-
वी । तेहनो मो हाथ मोतोजी । ध्रक ध्रक म्हारा
जीवीयो ॥ १३ ॥ तो हूं जाऊं मुंह ले । अद्रीठ रहुं,
नहीं एथोजी । सार न सकूं कृष्णानें । भमै वन तिण
हेतोजी ॥ ध्रक २ ॥ १४ ॥ एक समें वर्षा हुई । मद
बहि मेलो थायोजी । यादव कुमर पीवे तिहां ।
छकिया करै अन्यायोजी । विनाश काले बुद्ध बुरी
॥ १५ ॥ द्विपायण ऋषिनें देखनें । कोप चढ्या तत्का-
लोजी । मारे भाटा कांकरा । करै नवीं नवीं आलोजी
॥ वि ॥ १६ ॥ रे भषडा तुम द्वारिका । दहसी मुढ़
अयाणोजी । यादवां नें तप वेच नें । पर भव कियो
निहाणोंजी ॥ वि० ॥ १७ ॥ दाह करुं जो द्वारिका ।
तो द्विपायण मो नामोजी । प्रत्यक्ष देखाडुं फल पाप
ना । खबर पडैली तामोजी ॥ वि० ॥ १८ ॥ द्विज
हुआं मद ऊतर्यो । आय कही सर्व वातोजी । हर
हलधर बेहुं दौड़िया । हाय हाय द्विपायन पै जातोजी
॥ वि० ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

मान देई कहै मत करो। निहाणो तप खोय। हटी हठ छोडै नही। कहै ए तुम वचस्यो दोय ॥१॥ हर वल पाछा आविया। कहै कीज्यो जिण धर्म। आछो करणी आदरया। रहसी सहुनी शर्म ॥ २ ॥ आप तणा अथः परतणा। वीजाइ वहु लोय। आवल तप करवा भणो। सावधान सहु कोय ॥ ३ ॥ तप जप क्रिया प्रभावस्युं। कइ दिन रहसी सहाय। धर्म घट्या पाप प्रगट्या। सोने लागसी लाय ॥ ४ ॥

॥ ढाल ३ ॥

सत्य कोई मत राचज्यो (एदेशी)

वात छिपायणरी सुणो ॥ ऐ आंकडो ॥ मर हुवो अग्न कुमाररे। वैर पूर्व लो माभरयो। जाग्यो क्रोध अपाररे ॥ वा० ॥ १ ॥ वास वेला तेला घणा। तप करतानें देखरे। जोर न चाले तेहनो। जोवे छल विशेषे रे ॥ वा० ॥ २ ॥ नग्र दाहा नहा कर सके। धर्म प्रभाव अपारो रे। छल जोवन्ता वहु विधे। निकल्या वर्ष इग्यारा रे ॥ वा० ॥ ३ ॥ लोक कहै वर्ष वारमो। नहीठो विगड्यो तेहीरे। उग्र तप थी जीतीया। माह ग्रमे मदेही रे ॥ वा० ॥ ४ ॥ मन

हुक्का बहु लोगां में। मद पीवै मांस खावै रे॥ कुल जोवन्तां कुल पामीयो। पाप कियां दुःख पावै रे ॥ बा० ॥ ५ ॥ दया धर्म जप तप घट्यो। बधीयो हिंसा पापोरे। निश्चय हाराहार टलै नहीं। व्यवहार नी दोय थापोरे ॥ बा० ॥ ६ ॥ तिण काले जिण बिचरता। केवली साधु विशेषोरे। कृष्ण जिसा भगता हुंता। पिण धर्मी तो केइक देखोरे ॥ बा० ॥ ७ ॥ प्रलय काल समय नग्र में। मंड्यो छै उत्पातोरे। भूमि कंपे तारा खड़ हड़ै। हुवै छै उलका पातोरे ॥ बा० ॥ ८ ॥ छिद्र सहित रवि मंडलो। ग्रहण हुवै विण कालोरे। वर्षा अंगारा नी हुवै। थिर पर्वत पिण चालोरे ॥ बा० ॥ ९ ॥ बन ना जीव नग्र भमै। गायां करै पुकारो रे। देव हंसै चित्राम ना। ते दिखे घणा भयंकारोरे ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

कोलाहल व्याप्यो सबल। उठी दशों दिशि आग।
लोक हुआ भयभ्रान्त सर्व। नहीं निकलवा थाग।

॥ ढाल ४ ॥

तुम जीव दया प्रतिपालो (एदेसी)

हाहाकार हुवो तिण बेलांरे। बलता देवै डूम हेला। केई बयण इसीपर भाषेरे। मुझनें कोई बलतो

राखै ॥ १ ॥ कोई कूके पिता आवोरे । म्हारो वलतो जीव छोडावो । राखो २ मारी मातारे । इण वेला थो आई माता ॥ २ ॥ मामा नें कहै भाणेजोरे । थारो कठ गयो अब हेजो । दाह झाली वाहिर खांचोरे । म्हारे लागे तापरी आंचो ॥ ३ ॥ वालक नें देखी वलतोरे । मातारो जीव तलफलतो । पिण जोर कोई नही लागेरे । पुकार करे किण आगे ॥ ४ ॥ भरतार नें कहै इम नारीरे । तुम राखो कुल आचारो । जल छांटी अग्नि बुझावोरे । निरदई थे कांई थावो ॥५॥ भरतार कहै सुण कामणरे । म्हारो जीव छै आमण दामण । घणेरो भागो जल बुहोरे । घर नेडो न दीसै कूवो ॥ ६ ॥ वाप कहै वेटानरे । में मोटा किया थाने । ईण वेला आडा आयोरे । थे कांई कपूत कहावो ॥ ७ ॥ वेटो कहै न चाले जोरोरे । मरणो सगलानें दोरो । न्हाना मोटा वलवन्तारे । दीखे दाझे तलफलता ॥ ८ ॥ तिड भड लागी तिण कालेरे । कोई सज्जन देव संभाले । रोवे झूरे विललावेरे । सुणताई करुणा आवे ॥ ९ ॥ पिण कर्म निकाचित आगेरे । किणरोही जोर न लागे । लाखा सुंदर तिहा झपारे । कोई घटते आउखे मुआ ॥ १० ॥ दुःख में कोई करे धर्म साजोरे । ज्यांनें सफल जमारो लाधो ।

म्हेंई जो घर काढ़न्तार । तो क्यानें दुःख में पड़न्तो ॥ ११ ॥ केई श्रावक समदृष्टिरे । त्यां कीधी धर्म नी पुष्टी । संथारो कियो सम भावेरे । देवलोक सुखां मांही जावे ॥ १२ ॥ बीजा चाल्या छिहुं गतमेंरे । ते पड़िया खोटी मतमें । वारे गया त्यांनें मांही भोक्या रे । श्रोरानें जाता नहीं रोक्या ॥ १३ ॥ हर वल वेहुं हल फलियारे । माईतानें काढण चलिया । रथ ऊपर आण बैसाणयारे । दोनुं बन्धव जूताणया ॥ १४ ॥ दर-वाजे रोक्या आगरे । छिपायण न दे जाण । तप वेच निहाणो कीधोरे । हूं जाण देस्युं किम सीधो ॥ १५ ॥ माईत सूक्या नहीं जावेरे । फिर २ नें पाछा आवे । मा बाप कहे दो भाईरे । थे पाछ न राखो कांई ॥ १६ ॥ पुन्यवन्त जिहां तिहां जासोरे । सम्यक्त्त सज्जन बहु साथी । थे ज्ञान ऊन्डो आलोचोरे । म्हांरो कोई म करज्यो सोचो ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

बिरला शूरा संकटा । दृढ राखे चित्त जेह ।
भावे आछी भावना । शुद्ध गत गामी तेह ॥ १ ॥

॥ ढाल ५ ॥

साधुजी हो नम्री आया सदा भला (एदेसी)

कारज सुधारे चतुर हुवे जिके रे। तज कारमो स्नेह। जाण पणा नो ए फल जाणियेरे। जाणी नें विरमे नेह। ॥ का० ॥ १ ॥ कायर हुवा कदे न छूटियेरे। तिण कारण दृढ चित्त। दुःख पोम्या पिण न हुवे काहिला रे। साहसीका या रीत ॥ का० ॥ २ ॥ वसुदेव राजा राणी देवकीरे। रोहणी बलभद्र नी माय। भावें शरणो श्री नेम नो रे। होज्यो शिव सुख दाय ॥ का० ॥ ३ ॥ इण भव परभव माहें पाडवारे। जे जे पातक कीध। मिच्छामि दुक्कड ते सर्व पापनोंरे मै मन साचे दीध ॥ का० ॥ ४ ॥ चौरासी लख जीवा यानि स्यूंरे। खमावे वारम्वार। अरिहत न सिद्ध साधु धर्म रो रे। आदरे शरणा च्यार ॥ का० ॥ ५ ॥ हम नहीं किहना हमनो को नहीं रे। कारमो प्रेम दिखाय। तन धन योवन मोह तणे वशेरे। पापी जीव मुरझाय ॥ का० ॥ ६ ॥ कारमो मोह तज्यो ससारनोरे। पचख्या च्यार आहार। ते देहोनें पिण जाणी छे कारमोंरे। लीधो अणसण सार ॥ का० ॥ ७ ॥ जगमे कोई किहनो दीसे नहींरे। एकलडो निराधार। एकलो परभव जायसीरे। सगो न कोई लार ॥ का० ॥

८ ॥ निरवद्य धर्म सदाई छै भलोरे । मूगडा पाप अठा-र । आलोचे निन्दे निश्चल थईरे । ध्यावे शरणा च्यार ॥ का० ॥ ६ ॥ मिच्छामि दुक्कड़ं ले सर्व पापनोंरे । खमावे बारम्बार सुकृतनो करी अनुमोदनारे । हर्ष करै मन धार ॥ का० ॥ १० ॥ छिपायणा पापी तिण अवसरेरे । बर्षावे अंगार । एह तीनुं जणा तो शुभ ध्यानें करीरे । पाम्यां सुर अवतार ॥ का० ॥ ११ ॥ एहवो संथारो सुणियां थकांरे । पासें मन वैराग । तो धर्म कारण ढील न कीजियेरे । जेस्युं पासें सुख अथाग ॥ का० ॥ १२ ॥

* दोहा *

तिहां वे अम्बव डाड़ दे । पहुंता जिण उद्यान । देखे मणी दाझती । चित्तमें आरत ध्यान ॥ १ ॥ रत्न भींत चूरण हुवे । पाहण पड़े तत्काल । सोवन थम्भां कांगरा जाणें बलै पराल ॥ २ ॥ कंवकुमार सुत रामनो । चर्म शरीरे जेह । ऊंची बांहा महसे चल्या । जम्पे बाणी एह ॥ ३ ॥ शिष्य होस्युं श्रीनेम नो । छिव-डांइ ब्रतधार । शिव गामी हूं हुण भवे । आख्यो नेम कुमार ॥ ४ ॥ आण खरो छै नेमनी । तो किम दाझुं आग । दूतरो सुण यत्ने तिहां । उपाड़्यो धर राग ॥ ५ ॥

॥ ढाल ६ ॥

पुन्यना फल जोयज्योरे (एदेशी)

वे वंम्धव बनमे थकारे । वचन कहै करुणाय । दुःख साले द्वारिका तणो भाई । कह्यो काठा लग जायरे । माधव इम बोलैरे ॥ १ ॥ किहा द्वारिका नी साहिबीरे । किहा दल बल गज थाढ । वन्धवनीं मेली किहा भाई । जग मे स्युं हुवी बाटरे ॥ माध• ॥ २ ॥ हाथी घोडा रथ मामठारे । बयालीस २ लाख । क्रोड अडतालीस प्यादा हुंता पिण । देखन्ता हुई राखरे ॥ ३ ॥ हर कहै बलभद्रनेंरे । धुक कायर पणो मोय । बलती नग्री जोवन्ता मोनें । ए बाता नहीं सोहरे ॥ मा ॥ ४ ॥ जलती नगरी आगस्युंरे राख न सकुं तेम । सारङ्ग धनुष मै धारीयो भाई । थोकक थायो केमरे ॥ मा ॥ ५ ॥ जिण दिशि जोता तिण दिशेरे । सेवक सहस्र अनेक । हाथ जोडी हुंता खडा भाई । अब नहीं दीखे एकरे ॥ मा ॥६॥ मोटा २ राजवीरे । शरणे रहन्ता आय । अब उलटो शरणो तक्यो भाई । इण वेरण विरीया माहरे ॥ मा ॥ ७ ॥ बादल बीज तणी परेरे । नष्ट गई बिललाय । इण टेरीमे आपणो भाई । कहो सगो कुण थायरे ॥ मा ॥ ८ ॥ किहा आप। छिव जायस्यारे । आन सगो

कुगा होय । धरती आपां स्युं फोगी भाई । पुन्य तगा जय जोयरे ॥ मा ॥ ९ ॥ वलभद्र कृष्ण प्रते कहेरे । चालवी पांडव गेह । एहिज दीखे हिव आपगा भाई बन्धव सखाई तेहरे । हलधर इम बोलेरे ॥ १० ॥ देसुंटे में काढीयारे । कृष्ण कहे तद जेह । तिग अवगुण नो लाज स्युँ भाई । जातां न रहे नेहरे । ॥ मा ॥ ११ ॥ वलतो हलधर इम कहेरे । ओगण न लहे सन्त । गिरवा परन गुगा ग्रहे भाई । वलभद्र कहे बिरतंतरे ॥ ह ॥ १२ ॥ तें सन्मान्य बहु परेरे । उन्धव थां बहु बार । जाणें तिको किया तणो भाई । नहीं भूलै पर उपगाररे ॥ ह ॥ १३ ॥ अवर विचार मत आदरोरे । राम तणी ए वाणा । सांहों माहों सिसलत करी भाई । चाल्या चतुर सुजाणरे । कर्म्म गति जोयज्योरे ॥ १४ ॥ पांडव मथुरा प्रगटीरे । अगन कोण तिण ठाम । तिण नग्री नें चालिया । एतो बे बन्धव अभिरामरे ॥ क १५ ॥ अहंकारग्रा शिर सेहरारे । एवी सम्पत पाय । वह नर पालो पांगरया भाई । बिण चाकर दोनुँ आय रे ॥ क ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

हस्तकल्प पुर मारगे । जातां हरनर राज । बे रण भूखे पीड़िया । कहे भाईनें काज ॥ १ ॥

॥ ढाल ७ ॥

जोयज्योर कर्म विटम्बना (एदेशी)

कर्म भुगतीयांई छूटिये । राव रङ्क सम भाव लालरे । वे वन्धव तिहां चालिया । पाडव मथुरा जाय लालरे ॥ कर्म ॥ १ ॥ हस्तकल्प नामे मही । आयो पुर अभिराम लालरे । वे वन्धव तिहा वाग मे । वृक्ष तले विश्राम लालरे ।॥ कर्म २॥ राज नय लोढा तणो । हर वेटे वहु दुःख लालरे । इतरे होमे आकरी आय लागी भूख लालरे ॥ कर्म ३ ॥ भूँडि भूख अभागणी । न गिणे ठाम कुठाम लालरे । आपो जणावण आकरी । वाहाला खाणी नाम लालरे ॥ कर्म ॥ ४ ॥ कावडी कठे दमडि नही । ल्यावो चवीणो मोल लालरे । शरीरे स्हामो जाय ने । देवे मुन्दड़ी खोल लालरे ॥ कर्म ॥ ५ ॥ ल्यो सुक्ष कनली मुन्दडी । वेची सारो काम लालरे । खावानें ल्याज्यो सु खडी । वाकी रा ल्याज्यो दाम लालरे ॥ कर्म ॥ ६ ॥ कृष्ण कहे वलभद्रनें । श्री वेरा नो वास लालरे । राजा नर है डरावणो । रखे करो विश्वास लालरे ॥ कर्म ॥ ७ ॥ वलभद्र पुर माहो गयो । आयो कटोई पास लालरे । नामाकृत एक मु द्ड़ी । वाचीस मन हुल्लास लालरे ॥ कर्म ॥८॥ कपट कटोई किलव्यो । आछी नही छे एह लालरे ।

माटां जोगी सूंखड़ो। घरस्यु लगाउं तेह लागरे ॥ कर्म ॥ ९ ॥ जाय जणायो रायनें राजा दल बल साज लालरे। घेरीनें लीधो मांकडे। नाद पुरगो वल राज लालरे ॥ कर्म ॥ १० ॥ नाद सुणी हर ध्यावियो। मारी लात किवाड़ लालरे। टुटीनें अलगा पड़ा। जीत आया पिण राड़ लालरे ॥ कर्म ॥ ११ ॥ राजा घस पाए पड्यो। अब सर्व हंसाणा लोग लालरे। कृष्ण कहै भांग जोजगी। तो पिण हारड़ा जोग लालरे ॥ कर्म ॥ १२ ॥ वलि फिर आया बागमें। साझी आपणो काम लालरे। आरोगी तिहां सूंखड़ी। आघा चालग्रा ताम ॥ कर्म ॥ १३ ॥ वन कसुंबी पहुं-चीया। तृषा लागी अपार लालरे। सूता हर वड़ छांहड़ि। ओढ पिताम्बर सार लालरे ॥ कर्म ॥ १४ ॥ हलधर जल लेवा गयो। पूगी वेलग्रां वार लालरे। इतरे कर्मांरो खांचियो। आयो जरा कुमार लालरे ॥ कर्म ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

केस मूंछ दाढी वध्या। रींछ जेम भय रूप।
करि अन्याय अजाणियो। जोयज्यो कर्म स्वरूप ॥ १ ॥

॥ ढाल ८ ॥

जतनी झाव मुज्रा दिक्नी एदेशी

आहेडे जरा कुमार । तिहा खेले वन मझार । कृष्ण पगनज पद्म दीठो । जाण्यो हिरणादिक बेठो ॥ १ ॥ चोतो धरतो रयुं कर प्रणाम । खेंची ने मूक्यो बाण । बाये पग आई लाग्यो । तत्क्षण तिहा केशव जाग्यो ॥ २ ॥ कुणरे तू हर इम भणियो । मोनें विना वकार्यां हणियो । मैतो कीधा संग्राम अनेक । द्रोह कर नही माय्यो एक ॥ ३ ॥ राखी क्षत्रीवत नी रीत । मैतो कियोमें काई अनीत । काछ वाच कवुल न चूका । तुं आयो इहा काहेका ॥ ४ ॥ जराकुमर पाछो दे उत्तर । वासुदेव तणो हूं पुत्र । जरा देवीं मुज माई । हूं कृष्णजीरो वडो भाई ॥ ५ ॥ नेम वाणी सुण नें विहो । कृष्ण काज देसुंटो लोयो । द्वारिका छोडी इहा आयो । तूं कुण छे मोय बतायो ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

पुर्व साहा आयो इहा । कृष्ण कहै हूं तेह । जेहने काजे थे लियो । वनवासी धर नेह ॥ १ ॥ वारे वर्ष भाई तुझे । हुवा फोक प्रकाश । जरा कुमर इम साभली । मूके हिये निश्वास ॥ २ ॥ जो ए कृष्ण हुवे

सही । ओलख लीनीं आय । जरद्दं पड़ियो धरतीय । मुरछाणो सुण वाय ॥ ३ ॥ नीठ चेतना तिहां लहि । जरा कुमर कहे एम । हा हा भाई ए किस्यु । आगु च भाख्यो नेम ॥ ४ ॥ द्वारामति स्यु प्रजली । स्यु हुवो यादव अन्त । इण स्वरूप श्रीनेमनी । साचो वाण महन्त ॥ ५ ॥

॥ ढाल ९ ॥

इन्द्र कहै नेमी रायनें पदेशी

हा हा रे बलभद्र नें हिये । दाहा सबल में दियोरे । छोटा भाईनें मारनें । मैं जग माहीं अपयश लियोरे । हा हा रे पापी मै स्यु कियो ॥ १ ॥ हिव बलभद्र किम जीवसी । के देसी घर त्यागीरे । मोटा अकारज मैं कियो । कुल खांपण दोभागी रे ॥ हा० ॥ २ ॥ भला कारण बेला हुन्ती । घात करी विण कालोरे । बछल बन्धव मारतां । नर्क दुःखां ज्यु सालेरे ॥ हा० ॥ ३॥ बन्धव मैं तोय राखवा । मैं बन-वासो लीधोरे । पिण न हुवो मुझ चिंतव्यो । कोण अकारज कीधोरे ॥४॥ हा० ॥ जो धरती विवर देवै । तो कूद पडूं नर्क मांहीरे । मोत न आवे ज्यां लगे । अति दुःख वेदुं हं यांहीरे ॥ हा० ॥ ५ ॥ क्यों थयो

सुत वसुदेवरो । क्यों थयो थारे भाईरे । मनुष्य पणो मे क्यों लह्यो । क्यों रह्यो इहां आईरे ॥ हा० ॥ ६ ॥ क्यों न मुवो बालक पणे । क्यों वधियो हूं पापोरे । तूं यादवनो सेहरो । तेहनो भयो संतापोरे ॥ हा० ७ ॥ नेम तणी वाणी सुणी । क्यों न मुवो विष खाइरे । हा हा कवण दिशा भणी । मुझनें जायो माई रे ॥ हा० ॥ ८ ॥ दे ओलंभा कर्मनें । वले हर रहामों जोवेरे । तिम २ दुःखमे परजले । दीन स्वरे करी रोवेरे ॥ हा० ॥ ६ ॥ एहवा भाईनें दुखे । फिट छाती नही फाटेरे । द्वारिका पति छल सुणी । म्हारो हियो भरियो रहतोरे । वनवास गिणतो नही । हूं तो रहतो गह गहतोरे ॥ हा १० ॥ बन्धव कहस्युं केहनें । कुण लेसी मुझ सारोरे । मझु समार सूनो लगे । हिय हुं थयो निराधारोरे ॥ हा ॥ ११ ॥ कृष्ण दिलाशा दे हिवे । सोच न कर तू भाईरे । कर्म गत सबलो अछ । तेह लोपी न जाईरे । कृष्ण दिलाशा इम दियें ॥ १२ ॥ यादवा मे एक छिद रह्यो । जा तुं जीव जगीशोरे । देखो वलभद्र मारसी । मुझ ह- णियो इण रीसोरे ॥ कृष्ण ॥ १३ ॥ थारनाग लिइये मांरगा । ए लेई तुं जायोरे । तिण राजा पाडव मझे । तेर मस्वाद थायोरे ॥ कृष्ण ॥ १४ ॥ उजड वली उता-

वलो । पासें नहीं तिहां वासोरे । तुझ पूठें श्राय भी-
लसो । हणसी तुरत निवासोरे ॥ कृष्ण ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

सर्व पांडव ने खमावजे । कही हमारा वेंण ।
धणी पणोसें दुहव्या । देशोटानें देण ॥ १ ॥ वार वार
कहे कृष्णजो । जरा कुमर सुणाह । मुझ चर्ण शिर
खांचनें । जा तूं कुशल चलिह ॥ २ ॥

॥ ढाल १० ॥

वेग पधारो महलथी (परदेशी)

हिव जरा कुमर गयां पछे । पीड़्यो वेदना पाय ।
कर जोड़ी मुख उचरै । बचन कहे वन माहिं । कृष्ण ।
भावै रूड़ी भावना ॥ १ ॥ इम कर गोडा उपरै । पग
मूकी तिण वार । ढांकि वस्त्र बैठा थका । हर चिन्तवै
निराधार ॥ कृ० ॥ २ ॥ अरिहन्त सिद्ध नें श्रायरिया ।
उवज्झाय सगला साध । ए मोक्ष नगर ना दायका ।
वरतै सदा समाध ॥ कृ० ॥ ३ ॥ श्रीनेम जिणेश्वर
स्वामीनें । मुझ वन्दणा वारंवार । तारिया पापी मो
सारिखा । तीर्थ चलावै च्यार ॥ कृ० ॥ ४ ॥ वरदत
कुमर श्राददे । धन २ प्रजन कुमार । छोड संसार नैं
निसर्या । कर दियो खेवो पार ॥ कृ० ५ ॥ आठे अग्र

महेपियां। पुत वहु वली टोय। दोचा लोधी तिण समें। मोह न चाख्यो कोय ॥ कृ० ॥ ६ ॥ चोरासी लच योनि नें। खमावे वारंवार। अरिहन्त सिद्ध साधु धर्मरो। ध्यावे सरणा च्यार ॥ कृ० ॥ ७ ॥ एहवा परणामा मे मरे। निश्चे शुद्ध गत जाय। पिण पहली वंध पड्यो तिको। नहीं मेटणरो उपाय ॥ कृ० ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

मन चञ्चल चपलो घणो। रचे क्रीड जञ्जाल।
वेश वणावे नव नवा। जिम नट नाटक शाल ॥ १ ॥

॥ ढाल ११ ॥

वीर सुणो मोरी विनती (एदेसी)

मत हुइ गत चनुसारनी। भली बुरी हो जेहवि होनहार। मामी आवे आणु पूरवी। नहीं तिणरो हो काई टालण हार॥ गिरधारीरो मन डुल पड्यो ॥ १ ॥ कुण ग्रमे हो तेहने विण योग। निश्चे होणहार टले नहीं। घणा करे हो यत्न वहु लोग ॥ गि ॥ २ ॥ काठ शोप तान वेदना। तृपा आतुर हो शरीर कुमलाय। छोड विशेषा उजड चल्या। कर्मा वशे हो भली मत यह जाय। ॥ गि ॥३॥ में धन्म सोमिया यश किया। पिण एं तो रो किण ही यश नहीं लेय। याकारे गठ

पाधोरिया । युद्धे शूरा हो रण संग्रास मांहि ॥ गि ॥४॥ दीपायण रूष संभरगो । दुख दीधा हो देखो तापस रंक । कवण अवस्था तिण करो । नगरी दही हो द्वार-का नें निशंक ॥ गि ॥ ५ ॥ मात पिता सुत वंधवा । हाथी घोड़ा हो पायक परवार । अलकापुर सम द्वार-का । सो आगल हो कीधी वालीनें छार ॥ गि ॥ ६ ॥ वलभद्र पंच्यो अवले हुं । तो देतो हो मुष्टिनीं प्रहार । खंडो खंड कर दश दिशा । वलदेव हो हुंगा वन मझार ॥ गि ॥ ७ ॥ रुद्र ध्यानरे वश पड्या । तापस नें हो मारणरी नीत । अशुभ ध्याने गति तिहां लही । तिण गत मैं हो जाइ तेहवी रीत गि ॥ ८ ॥ अनन्त वेदना तिहां ऊपनी । खमतां दोरी हो ते महा विक-राल । अङ्ग उपङ्ग सहु तलफले । दुख पास्या हो छेड़ले अन्त काल ॥ गि ॥ ६ ॥ वलवन्त काल तणे वशि । अन्त समैं हो कीधो तिहां थी काल । छवमास पहला आयुष वंध्यो । सात सागर हो गया तीजे पाताल ॥ गि १० ॥ तीन खंड तणा भुक्ता हुंता । तिण रै सैंठी हो सम्य-क्तरी नींव । होसी तीर्थंकर बारमो । मोक्ष गामी हो उत्तम ए जीव ॥ गि ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

कमल तणे पाणे करी। जल ले आया राम।
अपशुकनें वारीजता। कृष्णाकने तिण ठाम ॥१॥ सूतो
हरि सुखि अछै। वलि चिंतवें चितलाय॥ खाचे पट्ट
हरि मुख थकी। मारयो रह्यो दिखाय॥२॥ तृषा अतुल
ते किहा गई। न उठ्या मुझ देख। किम जगाडिस
नींद से। इम चिंतवे राम विशेष ॥३॥

॥ ढाल १२ ॥

जकनी (परेर्मा)

बोलावे लल्लता वाणी। नहीं जागे सारङ्ग पाणी।
जाइ मुख उघाडी जोवे। गाढ देईने सरल रोवे ॥१॥
बोलो ने मोरा भाई। रह्यो बंधव ने गल माही। पगे
लागो ठोठोरे धाव। अब किण स्युं रहणी वन आवे।
२॥ हूं तो पहलो नीर न ल्यायो। तिण कारण खरो
रिसायो। अब कृपा कर तुं कहूं कर जोरी। हुं तो
सेवा चूको तोरी॥३॥

॥ दोहा ॥

पूरी निद्रा पाढिया। तोही जागे किम। फिर अल-
भद्र सोरे पड़ो। बोले वाणी एम॥१॥

॥ ढाल १३ ॥

ढंढण ऋषजीने वन्दणा (परदेशी)

ए स्युं रे आज अबोलणो । कन्हैया । खांच रह्यो मन कैसरे गिरधारी लाल । प्रीत घणी तूं राखतो । क । जाण्यो थांहरो प्रेमरे ॥ गि० ॥ ए स्युं ॥१॥ आज पहला मैं एहवो । क । कदेय न दीठो रोसरे । गि० । खिण मांहि मन खांचनें । क । दीओ मुझ शिर दोषरे ॥ गि ॥ ए स्युं ॥ २ ॥ किण आगल जाइ कहुं । क । मुझ सुख दुःखनी वातरे । गि । बन मांहि दुःख बांटता । क । मुझ स्युं नि बोलो भ्रातरे ॥ गि ॥ ए स्युं ॥३॥ थे कोइ लागो आय नें । क । मुझ दुशमण तुझ कानरे । गि । बंभेराणो तूं थयो । क । वात पैलारी मानरे । गि ॥ एस्युं ॥ ४ ॥ इण सूनी उजाड़में । क । एह किस्यो अवदातरे । गि । पाणी ले आयो हुता बिचै । क । हुई अचुम्भारी बातरे ॥ गि ॥ ए स्युं ॥५॥ उठो खावो सुंखडी । क । पीवो निर्मल निररे । गि । माफ करो मोटा थई । क । जो मुझ हुई तकसीररे । गि । ए स्युं ॥ ६ ॥ थाका हुवो तो हाथ स्युं । क । चांपु कोमल पायरे । गि । गर्मी जो होवती हुवै । क । ढोलुं शीतल वायरे ॥ गि ॥ एस्युं

॥ ७ ॥ छुटी नगरी द्वारका । क । छूट्यो सहु परवाररे । गि । आगल पाछल माहरै । क । तूंही छै आधाररे ॥ गि ॥ ए स्यु ॥ ८ ॥ हिवे तो बहु वेला हुई । क । मुझ स्यु हिल मिल बोलरे । गि । सनरी सुख दु'ख-री वातडी । क । मुझ आगल सहु खोलरे ॥ गि ॥ ए स्युं ॥ ६ ॥ तो पिण हरि बोल्यो नही । क । पुणी वेलां जाणरे । गि । उपाडी काधे लियो । क । चाल्या माहसीक प्राणरे । गि ॥ एस्यु ॥ १० ॥ छः महीना लिये फिरया । क । दु'ख कियो छै अपाररे । गि । जिण तिण आगल इसो कहै । क । भाई छे मा जातरे ॥ गि ॥ ए स्युं ॥ ११ ॥ मात पिता लूकी करी । क । निकलिया वन वासरे । गि । कृष्ण अबोल्यो जाणनें । क । किधा वनसे वासरे ॥ गि ॥ ए स्युं ॥ १२ ॥

जन्म वेला श्रीकृष्णनै । हर्ष न गाया गीत । मरता रोवा न मिलया । हुवा तीन खड वदीत ॥ १ ॥ श्रीपत केरी वात सुण । नही चेतै नर नार । त्यानें तीन धिक्कार छे । यूं ही रुलै ससार ॥ २ ॥ तिण अव-सर देव आवनें । करे मोह रिपु दूर । काकर कमल उगावतो । विण पाणी विण धूल ॥ ३ ॥ वलभद्र कहै तिण पुरषने । कमल न लागे एम । देव कहै नही

लागसी । तो मूवो जीवसी किम ॥ ४ ॥ तो पिण बल समझ्या नहीं । आघा चाल्या ताम । अब गुठली देव वाही नें । जगन सींचै तिण ठाम ॥ ५ ॥ आंबो आगले सींचीयां । बल कहै आंब न होय । देव कहै नहीं होयसी । तो मुवो न जीवै कोय ॥ ६ ॥ तोही पिण बल समझ्या नहीं । आगै घाणी खडे वेलू ठेल । बल भद्र कहै तिण पुरुषनें । इम किम निकलसी तेल ॥ ७ ॥ देव कहै तेल न नीपजै । तो मूवो न जीवै कोय । कांधे लियां फिरै देहनें । कृष्ण किहांथी होय ॥ ८ ॥ मूवा जाण्या श्रीकृष्णनें । हलधर हीना दाग । अथिर जाण्या संसारनें । आणी मन वैराग ॥ ६ ॥

॥ ढाल ॥

वे वे मुनिवर वहरण पांगुरार्थ एदेशी

चारित्र लेवाने मनसें ऊपनोरे । समझीनें लीधो संयम भाररे । विहार करिनें मेल जिणंदसुं रे । मेला हुवा छे बली अणगाररे ॥ धन २ बलभद्र मुनिवर मोटकारे ॥ १ ॥ सूत्र अर्थ भणी परिपक हुवारे । दिन

दिन मनसे अधिक हुलासरे । अभिग्रह लेवाणी मनमें ऊपनीरे । आय पूछे श्री नेम जिणंदरै पासरे ॥ धन २ ॥ आज्ञा हुवे जो प्रभुजी आपरीजी हूं विचरूं जिणकल्पी एकला हायजी । करू मास २ खमणनो पारणोजी । एहवो मन उछरङ्ग व्याप्यो मोयजी ॥ धन ॥ ३ ॥ पहला पोहर में सिझ्झाय करूंजी । दूजा पोहर में ध्यानज ध्यावजी । तीजे पोहररी करूं गोचरीजी नेम कहे ज्युं तोनें सुख थायजी, ॥ धन ॥ ४ ॥ आज्ञा लेईनें विचरै एकलाजी । आया तुंगीयापुर नगर मझारजी । मास खमणनें उठ्या पारणोजी । नगरी में लेवा ने सुद्ध आहारजी ॥ धन ॥ ५ ॥ कूवा रे काठें ऊभी कामणीजी तिण दीठो साधु नो रूप रसालजी । पाणी खांचण नें फासो घालियोजी । घड़िया रे भोलें पकड़यो बालजी । धन २ ॥ ६ ॥ तें देखो ने चल मुनि तिण अवसरे जी । एक अभिग्रह अधिको धारजी । इण पुं नगरी में ना करूं गोचरीजी । वन में मिलें तो लेऊं आहारजी ॥ धन २ ॥ ७ ॥ तुंगीयापुर वन में मुनि आई रह्याजी । ध्यावें छै निर्मल रूड़ो ध्यानजी । त्यानें देखीन रह्यो मृगलोजी । उपनो तसु जातिस्मरण ज्ञानजी ॥ धन २ ॥ ८ ॥ मृगलो भावे छे रूड़ी भावनाजी । साधां ने मन में अधिक उपकारजी । भो

हूं पुन्य योगे हुंतो मानवीजी । दान हूं देतो उलट भावजी ॥ धन २ ॥ ९ ॥ हिवै करै दलालो वनमें मृगलोजी । शुद्ध आहार आयो देखै तिण वारजी । साधु नैं आय करै जतावणीजी । ल्यावै निर्दोषण शुद्ध आहारजी ॥ धन २ ॥ १० ॥ एक खाती कुहाड़ो ले वन मैं गयोजी । बाढै छै वृक्ष तणी ले डालजी । भातो आयो छै तिणरै जीमवाजी । अधबिच काम छोड्यो तिण कालजी ॥ धन ॥ ११ ॥ आहार देखी नें हर्ष्यो मृगलोजी । साधुनै सैनि कीधी आयजी । बलभद्र मुनिवर उठ्या गोचरीजी । ईर्ष्या जोवन्ता सूंकै पाय-जी ॥ धन २ ॥ १२ ॥ वृक्ष तलै मुनीश्वर आवियाजी । खाती बहरावै हर्षी आहारजी । मृगलो करै छै शुद्ध अनुमोदनाजी । इतरा में छूटो पवन अपारजी ॥ धन २ ॥ १३ ॥ डालो भांगीनें हेठो ढह पड़्योजी । तीनुं आयाछै तिणरै हेठजी । खाती साधु नें तीजो मृग-लोजी । तीनां ने ले गयो काल लपेटजी ॥ धन २ ॥ १४ ॥ तिरियो दातार दलालो मृगलोजी । तीजा साधु मोटा अणगारजी । तीनुंही उपना देव लोक पांचमेंजी । पाम्यां छै सुर सुख अमर अपारजी ॥ धन २ ॥ १५ ॥ देव तणो आयुष भोगवीजी । तीनुं ही लेसी नर अवतारजी । बलभद्र होसी तीर्थंकर तेह-

मोजो। मोच जासी घणां नै तारजी ॥ धन२ ॥ १६ ॥ शिवपुर जासी खाती मृगलोजी। आठुंई कर्म करी चकाचूरजी। पाल मोप्यारा ए फल जाणीयेजी। निर्दो-षण टीवा दालिद्र दूरजी ॥ धन २ ॥ १७ ॥ एहवा भाव सुणी नर नारीयाजी। कीज्यो कोई आत्म तणो उद्धारजी। छोडो रुद्ध सम्पत सगलि कारमिजी। उतरा चाहो जो भव पारजी ॥ धन २ ॥ १८ ॥

॥ ढाल १५ ॥

मफत समार अवनार ण्टु गिणु (ऐदेशी)

वावीसमा श्रीनेम जिणंदए। छोड दिया ससार ना फन्दए। तिणहिज काल समा तणी वातए। सुण नें वैराग ल्याया कटे पातए ॥ १ ॥ द्वारिका नगर तणो विस्तारए। साभल क्रोध कपाय निवारए। अडता-लिस कोसमे ल्यावो जाणए। कोस छतीस मे पोहली पिछाणए ॥ २ ॥ सुवर्ण कोट रतना तणा कागुराए। हेठै चौडाने ऊपर साकडाए। सतरे गज ऊचाने वारे गज नीचमेए। आठ गज पहेल्या छे वीचमे ए ॥ ३ ॥ ऊपर पहला छै गज च्यारए। खाई पाठ गज पहली छै वारए। कोडां गमे घर कोट मझारए। यले घर

घणा कह्या नगरी बारए ॥ ४ ॥ बर्षा हुई दिन तीन मक्कारए । सोनईया कर नें भस्या छै भराडारए । लोकांरा पुन्य दीसै अति पूरए । खावणा पीवणा डोलां सनूरए ॥ ५ ॥ कृष्णजीरा महल छै छिनवैं हजारए । इकवीस भोमियां ऊंचा आवासए बलभद्रारा महल छै चोपन हजारए भोम उपर कही भोम अठारए ॥ ६ ॥ बहोतर हजार आवास बसुदेवराए । दश भोम ऊंचा छाजै सेवराए । दश दशारा ना छै दश भोमियाए । ऋद्ध घणी बले धनरा जोमियाए ॥ ७ ॥ सात आठ भोमिया घर सगला रा जाणज्योए । ज्ञान्यारा बचनां में शंका मत आणज्योए राज करै श्रीकृष्ण महाराजए बैरीनै दुश्मण गया सहु भाजए ॥ ८ ॥ तेहनो ऋद्ध तणी सुणो बातए । जेह नैं आगल कुण २ साथए । समुद्र बिजै आदे दशही दशारए । लोपे नहीं कृष्ण तणी कारए ॥ ९ ॥ बलदेव आद पांच महावीरए । भांजण हार धणी तणों भीर ए । कुमर कह्या बलो ऊं-ठज कोडए । प्रजन कुमार सगलां माहैं मोड़ए ॥१०॥ शम्ब कुमर आदि साठ हजारए । बेथ्यांरा मोरचा भांजण हारए । बीर सेन प्रमुख कह्या छै तेहनैए । पुन्य तणो संचो छै जेहनेंए ॥ १२ ॥ उग्रसेण आद सोलह हजारए । मोटा राजा छै तेहनैं बारए ।

रुक्मिणी आद राख्या तणा थाटए। सोले हजार जे-
हनै गह घाटए ॥ १३ ॥ वेश्या ना महस्र अनेक प्रका-
रए। अनङ्ग सेना सगलांरी सिरदारए। कृष्णजीरे
वेटा छे साठ हजारए। वेश्यारो चालीस हजार परवा-
रए ॥ १४ ॥ लाख पचास कह्या वले पोतराए।
वासुदेव पदवोने मोटोजीतराए त्यारि एहवी ऋद्ध नें
मोटका साजए। सगलारा अधिपति कृष्ण महाराजए
॥ १५ ॥ हाथीनै घोडा रथ कह्या छै सामठाए। बया-
लीस २ लच छ एकठार। क्रोड अडतालीस प्यादा
कुहायए नम छै हाथ जोडो सहु आयए ॥ १६ ॥ ए-
हवी ऋद्ध सूत कथा साखए। दल जल होगइ सग-
लारी राखए। कृष्णजी मन हुवा दिलगीरए। कोई न
दिखे भाजण भीडए ॥ १७ ॥ जो गाढ हुंती मन
माहए। ऋद्ध थोडीसे गई विलायए। ससार असार
कह्यो जिणरायए। किहना मात पिता सुत भायए ॥
१८ ॥ एकलो आयो ने एकलोइ जावसीए। धर्म विना
घणो पिछतावसीए। एहवो जाणी अहकार नें परहरो
ए, ध्यान धर्म शिव रमणी वरोए ॥ १९ ॥ सील
सन्तोष स्यु राखज्यो प्रेमए। ज्यो सुख साश्वता
पामस्यो एमए ॥ २० ॥ इति कृष्ण वलभद्रजीरी चौपाई
द्वारिका सम्बन्ध सम्पूर्ण ॥

शुद्धाशुद्ध पत्र ।

पृष्ठांक	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
४	२	माहा	महा
११	८	माच	मात्र
१५	१९	त्याग	त्याग
१६	८	वलो	वोल
१७	४	द्रुसरा	दूसरा
२७	१८	कर्मैं कायकर	कर्मै कूकाय कर
३७	१०	क्षषमें	क्षवमें
४१	१७	दोनं	दोनूँ
४७	५	विर	थिर
५०	१२	प्रश्नोत्तर	प्रश्नोत्तर
६१	१६	उगणीस	तेवीस
६२	१६	उपवास्न	उपवास
६९	१५	तजि	तीजे
६९	१९	वेकृय	वेक्रे
८३	२	भागदायक	भोगदायक

पृष्ठांक	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
९२	१०	लग	लगी
९६	२१	एपणा न	एपणा
१०३	६	आदत	अदत
१०४	१	तीन जोग करो	तीन जोग करी
१०६	१८	क्रोध माया	क्रोध मान माया
१०७	३	परियाद	परिवाद
१०८	२०	शरणो	सुक्ष शरणो
१०९	१७	भीगवे	भोगवे
११५	१३	मेटेरे	भेटेरे
११८	१	कल्प	कल्पे
११९	२	तगासगा	अगासगा
१२५	१५	रूपि	ऋषि
१२६	७	भिन्न	भिन्नु
१३५	१७	लक्ो	लक्षो
१३६	१	गिरिसु विचार	गिरि सुविचार
१४३	१३	गण	गर्ण
१४५	४	शणने	सुणनें
१४६	५	होमो	होसी
१५२	७	समष्टि	समदृष्टि

पृष्ठांक	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
१५३	१३	यानि	योनि
१५६	८	परन	परना
१५६	१०	उन्धव	वन्धव
१६४	७	वलमद्र	बलभद्र
१६४	१२	चिक-	विक-